विश्व का प्रकाश

श्रीजीज़स, परमपूज्य श्रीमाताजी निर्मलादेवी द्वारा वर्णित

विश्व का प्रकाश

('द लाइट ऑफ द वर्ल्ड' का हिंदी अनुवाद)

श्री जीज़स, परमपूज्य श्रीमाताजी निर्मलादेवी
द्वारा वर्णित

अनुवाद
श्रीमती सुनीता दत्त

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीजीज़समेरी साक्षात्
श्रीआदिशक्तिमाताजीश्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः।

समर्पण

यह पुस्तक विनम्रता के साथ परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मलादेवी के चरण कमलों में समर्पित है, जिनके अन्तःकरण में सब अवतरणों के अपने स्थान हैं, उनके आशीर्वादित जीज़स क्राईस्ट निर्मल आज्ञा चक्र में स्थित है।

पाठकों के प्रति

इस पुस्तक का मौलिक वर्णन इस अनुरोध के परिणाम स्वरूप तैयार किया गया था: 'क्या आप एक स्मृति-भेंट तैयार कर सकते हैं, ताकि जो भी क्रिसमस पूजा, २००७ में आए, उन सबको दी जा सके।' सम्पादक को यह बात बतायी गयी कि, जब एक प्रतिलिपि श्रीमाताजी को भेंट की गई तो उन्होंने कहा कि वे चाहेंगी कि विश्व के सभी इसाई लोग इसे पढ़ें। उस समय से कुछ नये संशोधन के साथ पुस्तकें बनायी गयी हैं और 'कबेला फाऊंडेशन' ने विनम्रता के साथ फिर से छपने का कार्य ले लिया। यदि किसी के पास दुहराव, सुधार या कुछ जोड़ के लिए सुझाव हैं तो कृपया ई-मेल hhmrecollections@yahoo.com के इस पते पर करें और अगले सम्पादन में उसका ध्यान रखेंगे।

बचपन में, मैं सम्पादक, ईसामसीह की प्रेम और पूजा करके बड़ा हुआ, पर किशोरावस्था में ईसाई धर्म के बारे में प्रश्न उठने लगे और अधिकांश जब मैं पाश्चात्य कला, इतिहास पढ़ने लगा, जो कि ईसामसीह के वर्णन से सम्बन्धित है। उदाहरण के लिये अन्य साधकों के समान सहजयोग में आने से पहले, मैंने बड़े आदर, पर भय से माइकिल एन्जेलो के भित्ति चित्रण 'लास्ट जजमैंट' के समक्ष खड़े हो कर सोचा कि इसका क्या अर्थ है और इसका हमारे आज के जीवन में क्या संदेश है।

हम सबको अपनी दिव्य माँ के पवित्र चरण कमलों में आकर अथाह आराम मिला है और यह जान कर प्रसन्नता हुई कि हम जहाँ कहीं से भी आयें श्रीमाताजी ने हमें दिखाया है कि किस प्रकार जिन अवतारों ने धर्म व संस्कृति की स्थापना की है, उनकी मनुष्यों की आध्यात्मिक उत्क्रान्ति की योजना में पूर्णतया सही बैठते हैं। यह छोटी सी पुस्तिका यह दर्शाती है कि श्रीमाताजी ने प्रभु ईसामसीह के विषय में क्या बताया है और यह भी बताया गया है कि उनके जीवन के विषय में आर्थोडोक्स बाइबिल, धार्मिक पुस्तकों, भारतीय पुराणों में क्या लिखा गया है। ये सारांश श्रीमाताजी के प्रवचनों से लिए गये हैं। जब, हमारे बच्चे व आगे उनके बच्चे हम से ईसामसीह के विषय में पूछेंगे तो हम उन्हें सत्य बता सकेंगे और इसके लिए हम श्रीमाताजी के समक्ष अत्यन्त आभार के साथ नतमस्तक हैं।

स्वीकृति

http://nirmalnagari.org/india2009/calender/christmas/FSQ-india. pdf

Sahaja A-Z, http: //sahaj-az.blogspot.com/2007/christ-in-india.html

The Apocryphal New Testament, Translation by M. R. James, Oxford:

Clarendon Press, 1924

श्रीमद् देवी भागवतम, स्वामी विजनानंद द्वारा अनुवादित, मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्रा.लि., नई दिल्ली

निर्मल फ्रॅग्रन्स, श्री.राबी घोष जी द्वारा संकलित, एनआईटीएल, पुणे

विषय-सूची

क्र.		पृष्ठ क्र.
1.	दिव्यता की घोषणा	7
2.	श्री कुण्डलिनी शक्ति और ईसामसीह 1979, भारत	9
3.	ईसामसीह की उत्पत्ति, ईस्टर पूजा 1982, लन्दन	27
4.	श्रीमाताजी द्वारा क्रिसमस पूजा प्रवचन के सार	35
5.	श्रीमाताजी द्वारा ईस्टर पूजा प्रवचन के सार	52
6.	श्रीमाताजी द्वारा दूसरे प्रवचनों के सार	58
7.	श्रीमाताजी द्वारा लिखे गये लेखों के सार	68
8.	श्रीमद् देवी भागवतम् और महाविष्णु के जन्म के सार	75
9.	भारत वर्ष में ईसामसीह के ऐतिहासिक विषय	77
10.	क्रिश्चियन बाइबल और 'एपोक्रिफालवीटैक्स्ट' के सार	81
11.	'लार्ड्स प्रेयर'	92
12.	वास्तविक क्रिसमस - दिवाली	93
13.	कार्बन के अणु एवं मूलाधार में सम्बन्ध	95
14.	श्रीमाताजी द्वारा प्रेरणा देने वाले अनुस्मरणों से	98
15.	दो क्रिसमस गीत	113
16.	संस्कृत में ईसामसीह के 108 नाम	115
17.	हिंदी में ईसामसीह के 108 नाम	120
18.	आज्ञा चक्र	125

दिव्यता की घोषणा

'एडवैन्ट सन्डे' गुरु पूजा के सार
2.12.79, लन्दन

आज का दिन बड़ा महत्त्वपूर्ण दिन है, क्योंकि बहुत समय पूर्व, जब ईसा एक बच्चे थे, तो उन्होंने धर्मग्रंथों से पढ़ा और जनता से कहा कि वे अवतार हैं और जो कि सब को बचाने वाले हैं। वे विश्वास करते थे कि एक रक्षक का आगमन होने वाला है। बहुत समय पूर्व एक रविवार को उन्होंने घोषणा की कि वे ही रक्षक हैं, इसीलिये आज 'एडवैन्ट सन्डे' हैं। उन्हें अत्यन्त कम समय रहना था, सो बड़ी छोटी उम्र में उन्हें घोषणा करनी पड़ी कि वे अवतार थे। यह ध्यान देने योग्य बात है कि इसके पहले किसी भी अवतार ने जनता से यह नहीं कहा कि वे अवतार हैं।

ईसामसीह के समय यह आवश्यक था कि कहा जाए अन्यथा लोग नहीं समझते। यदि उस समय वे ईसामसीह को पहचान लेते तो कोई समस्या नहीं होती, पर तब भी मनुष्यों को उत्क्रान्ति में और ऊपर उठना था। किसी को विराट के आज्ञा चक्र को पार कर के उस द्वार से बाहर निकलना था। इसी कारण से ईसामसीह इस पृथ्वी पर आए।

मैंने अपने बारे में कभी नहीं कहा, क्योंकि यह महसूस किया गया कि मनुष्यों ने अहंकार का एक और आयाम पा लिया है, यहाँ तक कि ईसा के समय से भी अधिक खराब।

परन्तु आज के दिन मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही हूँ जिसे मानवता की रक्षा करनी है। मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही आदिशक्ति हूँ जो सब माँओं की माँ है, जो कि आदि माँ हैं, भक्ति, ईश्वर की इच्छाशक्ति, जिसने इस पृथ्वी पर अवतरण लिया है ताकि इसे इसका अर्थ दे सके, इस निर्माण को, मनुष्यों को और

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं इसे अपने प्रेम, धैर्य और शक्तियों द्वारा प्राप्त करूंगी।

मैं ही थी , जिसने बार-बार जन्म लिया, परन्तु अब मैं अपनी पूर्ण आकृति, पूर्ण शक्तियों के साथ इस पृथ्वी पर आई हूँ, न केवल मनुष्यों के उद्धार के लिए, न केवल मोक्ष के लिए, परन्तु आपको परमात्मा का साम्राज्य, प्रसन्नता और परम आनन्द देने के लिए, जो आपके परम पिता परमेश्वर आपको देना चाहते हैं।

दिसंबर १९७९, गुरुपूजा के दौरान लिये गये मिरॅकल फोटोग्राफ्स

श्री कुण्डलिनी शक्ति और श्री ईसामसीह

1979, भारत, मराठी से अनुवाद

यह विषय 'श्री कुण्डलिनी शक्ति और श्री ईसामसीह', बड़ा आकर्षक और रोचक है। साधारण लोगों के लिए यह पूर्णतया नया विषय है क्योंकि इसके पूर्व किसीने किसी भी समय श्री ईसामसीह और श्री कुण्डलिनी शक्ति के सम्बन्ध को स्थापित करने का प्रयत्न नहीं किया था। विराट रूपी धार्मिक वृक्ष पर अनेकों देशों और भाषाओं में विभिन्न सन्तों ने फूलों के समान विकास किया है। इन सुन्दर फूलों के आपसी सम्बन्ध को केवल विराट ही जानते हैं, जहाँ भी ये गये इन फूलों ने अपनी मधुर खुशबू फैलायी। परन्तु जिन व्यक्तियों ने इन सन्तों को घेर रखा था, वे तक उस खुशबू के महत्त्व को न समझ सके इसलिये साधारण मनुष्यों से यह आशा करना कि वे आदिशक्ति-आदि माँ और सन्तों के बीच का सम्बन्ध समझें, निरर्थक है। आप अनुभव कर सकेंगे या समझ सकेंगे मेरे विचार को, यदि आप मेरे स्तर पर आएं, जहाँ से मैं आप से बोल रही हूँ। क्योंकि इस समय आपके पास आवश्यक यंत्र नहीं है जिससे आप यह समझ सकें कि जो मैं कह रही हूँ वह सत्य है या नहीं। दूसरे शब्दों में आप अभी पूर्ण रूप से सत्य को समझने के लिये लैस नहीं हैं। जब तक कि आप 'स्व' का अर्थ समझने लायक नहीं हैं तो शरीर अपूर्ण रहेगा और सत्य का निर्णय जानने के योग्य नहीं होगा। परन्तु एक बार जब शारीरिक यन्त्र, सत्य के साथ जुड़ जाता है, तो आप सत्य को समझ सकते हैं। इसका अर्थ है कि प्रथम आपको सहजयोग को स्वीकारना होगा और आत्मसाक्षात्कार पाना होगा। आत्मासाक्षात्कार के पश्चात् आपके हाथों से चैतन्य की लहरें बहने लगती हैं। यदि एक विशेष चीज़ सत्य है तो आपके हाथों की हथेलियों से ठण्डी चैतन्य लहरियाँ बहने लगेंगी, परन्तु वही चीज़

यदि असत्य है तो गर्म लहरें महसूस होंगी। इस प्रकार से आप जान सकते हैं कि कोई चीज़ सत्य है या नहीं।

इसाईयों को जो भी ईसाई-धर्म के विषय में जानकारी है, वह बाइबल से है। यह पुस्तक अत्यन्त गूढ़ार्थक है। वह इतनी गूढ़ और गहरी है कि बहुत लोग उसमें छिपा सत्य का अर्थ समझ नहीं पाए हैं। बाइबल कहती है, 'आई विल कम टू यू ऐज़ टन्ग्ज़ औफ फ्लेम्ज़'। यहूदी लोगों ने इसका अर्थ बताया है कि जब ईश्वर अवतरित होंगे तो उनसे आग की लपटें निकलेंगी और हम उन्हें देख नहीं सकेंगे परन्तु इसका वास्तविक अर्थ है कि आप मुझे सहस्रार में देखेंगे। बाईबल में आप कई बार कुण्डलिनी शक्ति और सहस्रार के विषय में संदर्भ पाएंगे, पर बड़े संदर्भ में ही वहाँ संभव है, पर यहाँ केवल छोटासा संदर्भ देना ही संभव है।

ईसामसीह ने कहा है कि, 'जो मेरे विरोध में नहीं हैं वे मेरे संग हैं।' इसका मतलब, 'जो व्यक्ति मेरे विरोध में नहीं हैं, मेरे अपने हैं।' यदि ईसाईयों को ऐसे व्यक्तियों को पहचानने को कहा जाए तो उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं है। ईसामसीह में दो महान शक्तियाँ जुड़ी हैं। पहली शक्ति श्री गणेश की है, जो उनकी मौलिक शक्ति मानी जाती है और दूसरी श्री कार्तिकेय की शक्ति। इस कारण ईसामसीह का अवतरण सम्पूर्ण ब्रह्म तत्त्व का है या ॐ कार। ईसामसीह के पिता श्रीकृष्ण ने उन पर जन्म से पूर्व ही अनेक वरदान न्यौछावर कर दिए थे। उनमें से एक वरदान था कि 'ईसामसीह मेरे से ऊपर के स्तर पर निवास करेंगे।'

इसका अर्थ इस प्रकार समझाया जा सकता है कि, श्रीकृष्ण का स्थान विशुद्धि चक्र पर, गर्दन की आधार-रेखा पर है। ईसामसीह का स्तर आज्ञा चक्र पर है, जो पीनियल और पिट्यूटरी ग्लैण्ड के संगम पर है। श्रीकृष्ण द्वारा दूसरा वरदान यह दिया गया था कि, 'तुम (ईसामसीह) समस्त ब्रह्माण्ड का आधार होगे।'

तीसरा वरदान यह था कि, 'तुम मेरी पूजा अर्पण में से सोलहवाँ भाग

प्राप्त करोगे।' इस प्रकार अनेकों वरदान देने के बाद, श्रीकृष्ण ने ईसामसीह को पृथ्वी पर अवतरित होने की अनुमति दी। यदि आप मार्कण्डेय पुराण पढ़ेंगे तो आपको यह सब ज़्यादा अच्छे से समझ आएगा, इस पुराण के लेखक श्री मार्कण्डेय ने बड़ी सुन्दरता से ऐसी अनेक सूक्ष्म व गूढ़ बातें बताई हैं। उसी पुराण में श्री महाविष्णु का विस्तारित वर्णन है। यदि आप ध्यान में बैठ कर सुनेंगे तो पाएंगे कि यह ईसामसीह का ही वर्णन है।

यदि आप 'क्राईस्ट' शब्द की व्युत्पत्ति पढ़ेंगे तो आप जानेंगे कि यह शब्द कृष्ण शब्द का ही अपभ्रंश है, दरअसल ईसामसीह के पिताश्री कृष्ण हैं। इसीलिये उन्हें 'क्राईस्ट' कहा जाता है। जिस प्रकार उनका नाम 'जीज़स' पड़ा, वह भी अत्यन्त रोचक है। श्री कृष्ण की माँ श्री यशोदा माता का सम्बोधन 'येसु' कह कर होता था। यहाँ तक कि आज भी हम देखते हैं कि उत्तर भारत में यदि किसी का नाम येशु होता है तो उसे जेसु कह कर पुकारा जाता है। इसलिये यह साफ़ है कि यशोदा से येशु नाम पड़ा और आगे चल कर जेसु बना और आखिर में जीज़स क्राईस्ट।

जब भी ईसामसीह ने अपने पिता के बारे में सब बताया तो वे वास्तव में श्री कृष्ण के विषय में बोल रहे थे, वे विराट के विषय में बोल रहे थे, यद्यपि श्रीकृष्ण ने ईसामसीह के जीवन काल में पृथ्वी पर अवतरण नहीं लिया, उनके उपदेशों का विषय यही था कि किस प्रकार साधक विराट-पुरुष या ईश्वर को जानें। जीज़स क्राईस्ट की माँ स्वयं महालक्ष्मी थीं। मेरीमाता और कोई नहीं पर देवी महालक्ष्मी थीं। वह आदिशक्ति, आदि माँ हैं इसलिये ईसामसीह अपनी माँ को 'होली घोस्ट' के नाम से सम्बोधित करते थे।

जीज़स क्राईस्ट के पास एकादश रुद्र की सब शक्तियाँ हैं, विनाश की ग्यारह शक्तियाँ। इन शक्तियों का स्थान हमारे कपाल में हैं। जब कल्की का अवतरण होता है, ये सब ग्यारह शक्तियाँ विनाश का कार्य करती है। इन ग्यारह शक्तियों में से एक हनुमान जी की है, दूसरी श्री भैरव की। बाईबल में

इन दो शक्तियों को 'सेंट गैबरियल' एवं 'सेंट माईकिल' कहा जाता है। आत्मसाक्षात्कार के बाद इन्हें संस्कृत, मराठी, यहाँ तक कि अंग्रेजी में सम्बोधित कर के जागृत किया जा सकता है। हमारी दाईं ओर की नाड़ी जिसे पिंगला नाड़ी कहते हैं, श्री हनुमान की शक्ति द्वारा कार्यान्वित होती है। जब भी इस नाड़ी में कुछ दबाव या अवरोध पैदा होता है, यह उसी समय श्री हनुमान का मंत्र बोलने से निकल जाता है। इसी प्रकार ईड़ा नाड़ी का अवरोध 'सेंट माईकिल' का मंत्र बोलने से दूर हो जाता है। ईड़ा नाड़ी हमारे बाईं ओर होती है और इसमें 'सेंट माईकिल' या श्री भैरवनाथ की शक्ति की अभिव्यक्ति होती है। स्पष्टतः, उनके नाम के मंत्र का उच्चारण करते ही ईड़ा नाड़ी की कोई भी तकलीफ़ या अवरोध दूर हो जाते हैं।

इन बातों का सहजयोग में आत्मसाक्षात्कार के बाद निर्णय किया जा सकता है। यह सब मैं आपको इसलिये बता रही हूँ कि आप जान जाये कि आपस में हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई के समूह बनाना फ़िजूल है। इस सब के पीछे यदि आप मूल सिद्धान्त देखें तो आप समझेंगे कि सब संत एक ही धार्मिक वृक्ष के फूल हैं और आपस में एक ही शक्ति के कारण जुड़े हुए हैं।

शायद आपको यह जान कर हैरानी होगी कि सहजयोग में कुण्डलिनी की जागृति साधक की आज्ञा चक्र की स्थिति पर निर्भर है। आज के युग में बहुत व्यक्ति अहंकार से भरे हुए पाए जाते हैं। यह इसलिये कि अधिकांश लोग अहम् केन्द्रित जीवन व्यतीत करते हैं। इसी अहंकार के कारण, मनुष्य अपने वास्तविक धर्म से गिर जाता है। मनुष्य पथ-भ्रष्ट है, इसलिये लगातार काम में, सोच-विचार में व्यस्त रहता है, जो अहंकार को और उत्तेजित करते हैं। अहंकार से मुक्ति पाने के लिए, ईसामसीह बड़े सहायक है। पैगम्बर के रूप में मोहम्मद साहब ने लिखा है कुण्डलिनी जागृति के बारे और किस प्रकार से अपने आपको दुष्ट शक्तियों से बचाना चाहिए और ईसामसीह ने भी बड़े स्पष्ट तरीके से हमें हमारी शक्तियों और अस्त्रों के बारे में बताया है। इन अस्त्रों में

प्रथम 'क्षमा' है। वह जो श्री गणेश तत्त्व में परोक्ष तरीके से कार्य करता है, मनुष्यता में क्षमा के रूप में अभिव्यक्त होता है, दरअसल, क्षमा एक बड़ा शक्तिशाली अस्त्र है। यह मनुष्य को अहंकार से बचाता है। यदि आपको कोई कष्ट देता है या बेइज्जती करता है तो आपका चित्त उसमें उलझ जाता है और परेशान हो जाता है। आप सारे समय उस व्यक्ति के विषय में ही सोचते रहते हैं और बार-बार उस घटना के बारे में सोच कर स्वयं को कष्ट देते हैं। ऐसे कष्ट से बचने के लिए हम सबको यह सलाह देते हैं कि हर किसी को क्षमा कर दें। इसलिये क्षमा एक बड़ा शक्तिशाली अस्त्र है जो हमें जीज़स क्राईस्ट से प्राप्त हुआ है। इससे, दूसरों द्वारा दिए गए कष्टों से मुक्ति मिलती है।

मैंने पहले भी आपको बताया है कि, ईसामसीह के पास अनेकों शक्तियाँ थीं, उन पर एकादश रुद्र की शक्तियाँ विभूषित थीं। तो कैसे वे क्रूस पर चढ़ाए गये और स्वयं को उस भयानक घटना से बचा न सके? ईसामसीह, अपनी अनेकों शक्तियों द्वारा अपने विरोधियों का नाश कर सकते थे एक क्षण में। उनकी माता और कोई नहीं पर आदिशक्ति थीं, आदि माँ स्वयं थीं। वे भी अपने पुत्र के साथ हुई क्रूरता को सहन न कर पाईं, फिर भी वह हुआ। शायद, ईश्वर ने यह नाटक रचना था। वास्तव में जीज़स क्राईस्ट दु:ख आर सुख से उपर थे और उन्हें बिना किसी दोष के, सही ढ़ंग से इस नाटक को करना था।

जिन्होंने उन्हें सूली पर चढ़ाया वे कितने मूर्ख थे। ईसामसीह गधे पर चढ़े, ताकि उस समय के लोगों के अन्दर की मूर्खता समाप्त हो सके। यदि आपको सिर-दर्द हो और आप ईसामसीह को प्रार्थना करें कि जिन लोगों ने आपको तकलीफ दी है, उन्हें क्षमा कर दें, तो आप बिना किसी दवाई के, सिर-दर्द से मुक्ति पाएंगे। परन्तु ऐसा होने से पूर्व आपको सहजयोग को स्वीकार कर के कुण्डलिनी की जागृति करा कर आत्मसाक्षात्कार पाना होगा। इसका कारण है कि आज्ञा चक्र जो आप में ईसामसीह का तत्त्व है, केवल आत्मसाक्षात्कार के बाद ही कार्यान्वित होता है, अन्यथा नहीं। आज्ञा चक्र

अत्यन्त सूक्ष्म होता है, चिकित्सक भी इसका स्थान ढूंढ नहीं पाए हैं। इस चक्र में एक अत्यन्त सूक्ष्म द्वार है, इसीलिये ईसामसीह ने कहा, 'मैं द्वार हूँ'। जीज़स क्राईस्ट ने इस द्वार के रास्ते को सुगम बनाने के लिए पृथ्वी पर अवतरण लिया और वे स्वयं प्रथम थे, जिसने इसे पार किया।

लोगों ने अपने अहंकार वश ईसामसीह को सूली पर चढ़ा दिया। वे इस बात को समझ नहीं पाए कि कोई मनुष्य, इस पृथ्वी पर ईश्वर का अवतरण ले कर प्रस्तुत हो सकता है। उनका बुद्धि रूपी अहंकार इस बात को स्वीकार नहीं कर पाया और अहंकार के कारण उन्होंने सत्य को त्याग दिया। ऐसा क्या बुरा कार्य था जिसके लिए उन्हें सूली पर चढ़ाया। इसके विपरीत उन्होंने कितने व्यक्तियों की बीमारियाँ ठीक करीं, आरोग्य दिया। उन्होंने सत्य का पाठ पढ़ाया और लोगों को अनेक अच्छी बातें पढ़ाईं। उन्होंने लोगों को बड़ा सांस्कृति जीवन व्यतीत करने का तरीका दिखाया। उन्होंने सदैव प्रेम सिखाया। इस सब के बावजूद लोगों ने उन्हें सताया। पर वे लोग उन लोगों के समक्ष झुकते हैं जो उन्हें गंदी और सड़ी हुई बातें सिखाएंगे और उन्हें मूर्ख बनाएंगे। मूर्खता की हद है। आज कल कोई भी निरर्थक व्यक्ति गुरु बन जाता है, उनकी चोरी करता है और उनसे पैसे निचोड़ता है, ऐसे लोगों का बड़ा आदर किया जाता है।

इसके विपरीत, यदि एक अच्छा व्यक्ति सत्य पर खड़ा है, सत्य का मार्ग दिखाना चाहता है, लोग न केवल उसे सुनेंगे नहीं, पर उस पर प्रहार करेंगे। ऐसे मूर्ख व्यक्तियों को शिक्षित करने के लिए परम परमेश्वर ने अपना प्रिय पुत्र 'जीज़स क्राईस्ट', इस पृथ्वी पर भेजा। परन्तु लोगों ने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया। यदि आप पढ़ें तो आप जानेंगे कि जब कभी भी ईश्वर ने अवतरण लिया या सन्तों, ऋषियों ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया, लोगों ने उन्हें नुकसान पहुँचाया और उन्हें सताया। उनसे कुछ सीखने के स्थान पर, उनके साथ मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया। हम देखते हैं कि ऐसा ही व्यवहार संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम और महाराष्ट्र के महान सन्तों के साथ हुआ। ऐसा ही व्यवहार

श्री गुरुनानक और पैगम्बर मोहम्मद के साथ हुआ। मनुष्य सदैव सत्य से दूर भागता है और असत्य को गले लगाता है।

जब भी कोई अवतरण होता है या संत जन्म लेता है और आप प्रश्न पूछें कि वह अवतरण है या नहीं? पवित्र संत है या नहीं? तो एक सहजयोगी को तत्क्षण हथेलियों से ठण्डी हवा आने लगेगी, यदि उत्तर 'हाँ' में हैं।

व्यक्ति के जीवन काल में पूर्व घटनाओं के फलस्वरूप अहंकार मज़बूत होता है : जैसे कि एक व्यक्ति गर्व से कहता है कि वह फलाने व्यक्ति का शिष्य है, इ.। मनुष्य के सामने जो वास्तविक प्रमाण है, उस से अनभिज्ञ है। स्पष्टतः अहंकार के मज़बूत होने के कारण वह 'स्व' का वास्तविक अर्थ नहीं देख पाता, इसलिये 'स्व' का अर्थ समझना आवश्यक है। कल्पना करिए कि गंगा नदी एक विशेष स्थान से बह रही है और आप किसी अन्य स्थान पर जाते हैं और कहते हैं कि गंगा यहाँ से बह रही है और हम उसमें बैठे हैं, तो वह हास्यास्पद है। इसीलिये उसी को स्वीकार करें जो प्रमाण के रूप में या भौतिक रूप में आपके समक्ष उपस्थित हो। ईसामसीह की स्थिति में भी हालात इसी प्रकार के थे। ईसामसीह ने कुण्डलिनी जागृत करने का प्रयत्न किया और बहुत मुश्किल से इक्कीस व्यक्तियों को साक्षात्कार दिया। परन्तु सहजयोग में हजारों को साक्षात्कार मिला है। ईसा भी और अनेक लोगों को साक्षात्कार दे सकते थे, पर उनके शिष्यों ने सोचा कि ईसा केवल बीमार लोगों का उद्धार कर सकते हैं और उन्हें साक्षात्कार का और कुछ महत्त्व नहीं था।

अनेक अवसरों पर ईसामसीह ने पानी की सतह पर चल कर दिखाया। यह इसलिये हुआ क्योंकि वे स्वयं प्रणव (ओंकार) थे। यह सब होते हुए भी लोग यह न समझ सके कि ईसामसीह ईश्वर के पुत्र थे। सहजयोग में अनेक साधकों को आत्मसाक्षात्कार मिला है और उनका बीमारियों से पीछा छूट गया है।

इसलिये मनुष्य को यह समझना चाहिए कि अहंकार बड़ा सूक्ष्म होता है

दूसरी बात मैं आपसे बताना चाहती हूँ कि अहंकार से लड़ना सही बात नहीं है। आपके उससे लड़ने से अहंकार पर कुछ प्रभाव नहीं होता। इसे आपके स्वयं में ही विलीन होना है। जब आपका चित्त कुण्डलिनी पर होता है और यह आपका ब्रह्मरन्ध्र खुल जाता है तो विराट का अंग-प्रत्यंग बन जाता हैं, इस स्थिति में अहंकार विलीन हो जाता है। असली अहंकार जो है, वह विराट शक्ति का अहंकार है, दर असल विराट ही असली अहंकार है। आप अपने आपको अहंकार से मुक्त नहीं कर सकते, तो आप क्या करते हैं? 'मैं कर रहा हूँ', अहंकार है। आप केवल स्वयं को पूछें कि वह क्या है जो आप वास्तविकता में करते हैं? आप प्राणहीन पदार्थों की आकृति ही बदल सकते हैं और कुछ नहीं। क्या आप फूल को फल में बदल सकते हैं? आपको नाक, मुख, सुन्दर शरीर मिला है, वह कैसे हुआ? हमें मनुष्य की आकृति अमीबा से मिली है, वह कैसे हुआ होगा?

यह निश्चित ही परमेश्वर का आशीर्वाद है, जिसके कारण हमें सुन्दर मनुष्य का शरीर मिला है। क्या हम इसका मूल्य चुका सकते हैं? क्या आप कुछ इस प्रकार का कर सकते हैं? जब मनुष्य को 'टैस्ट-ट्यूब बेबी' बनाने में सफलता मिली तो उसके बाद उसका अहंकार बहुत अधिक फूल गया। वास्तव में, इसमें भी मनुष्य ने कोई जीवित रचना नहीं की। जिस प्रकार दो पौधों का अन्तर्मेल किया जाता है, उसी प्रकार यहाँ दो जीवित मनुष्य कोशिकाओं को जोड़ा गया है, पर इसने अहंकार के गुब्बारे को कितना फुला दिया है। फिर मनुष्य चंद्रमा पर पहुंचा तो और भी अधिक अहंकार फूला। ईश्वर के अहंकार के समक्ष हमारा अहंकार क्या चीज़ है, जिसने सूर्य, चंद्र, तारे और सारा ब्रह्मांड बनाया है। दरअसल हमारा अहंकार झूठा है। असली अहंकार विराट पुरुष का अहंकार है क्योंकि विराट ही सब कुछ कर रहे हैं।

आपको यह जानना चाहिए कि केवल विराट पुरुष ही सबकुछ करते हैं इसलिये सब कुछ विराट द्वारा ही होने दें। आप केवल एक मशीन के समान

हैं। मानिए, कि मैं 'माइक्रोफोन' पर बोल रही हूँ और मेरी आवाज़ आप तक 'माइक्रोफोन' के माध्यम से पहुँच रही है। तब 'माइक्रोफोन' केवल साक्षी है। मैं हूँ, जो बोल रही हूँ और शक्ति 'माइक्रोफोन' के माध्यम से बह रही है।

इसी प्रकार आप केवल परमेश्वर के माध्यम हैं। विराट ने आपको बनाया है, सो विराट की शक्ति को अपने अन्दर से बहने दीजिए और 'स्व' का अर्थ समझें । ईसामसीह ने इस पृथ्वी पर 'स्व' का अर्थ समझाने के लिये अवतरण लिया और उनका स्थान आज्ञा चक्र में है। आज्ञा चक्र बड़ा जटिल है और ओंकार या प्रणव के सूक्ष्म सिद्धांत का स्थान है। वास्तव में, ईसामसीह ही ओंकार, प्रणव हैं। कुण्डलिनी और ईसामसीह में वही तालमेल है जो चन्द्रमा और चन्द्रमा की चांदनी, सूर्य व सूर्य प्रकाश में है।

कुण्डलिनी, जो गौरी माँ है, ने श्री गणेश को अपनी इच्छा शक्ति से, तपस्या और परोपकारी कर्मों द्वारा रचा। श्री गणेश ने ही अपना अवतरण लिया, तो 'जीज़स क्राईस्ट' का जन्म हुआ। इस संसार में बहुत चीज़ें हैं जिनका मनुष्य को सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिल पाया। क्या आप ने कभी सोचा है कि बीज कैसे अंकुरित होता है? आप कैसे सांस लेते हैं? आप कैसे गतिशील होते हैं? आपके मस्तिष्क में शक्ति कहाँ से आती है? आप इस संसार में कैसे आए? ऐसी बहुत सी बातें हैं। क्या कोई मनुष्य इन बातों का सन्तोषजनक उत्तर दे सकता है? हम कहते हैं कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण शक्ति होती है, पर यह शक्ति कहाँ से आती है? बहुत सारी चीज़ों की परत उतारने की जरूरत है। यह इसलिये कि आप पर माया का प्रभाव है। अभी आपको उस माया से बाहर निकलना है। आपकी माया को छूटना है अन्यथा वह और अधिक मज़बूत हो जाएगी। मनुष्य के आध्यात्मिक उत्थान के लिए, यह आवश्यक है कि माया को ख़त्म किया जाए। उत्थान के हर स्तर पर अवतरण उपस्थित हुए। आप सबको ज्ञात है कि श्रीविष्णु ने श्री राम का अवतरण लिया और जंगलों में घूमे। उन्होंने एक आदर्श राजा की भूमिका का सुन्दर नाटक

किया। उसी प्रकार का जीवन श्रीकृष्ण और श्रीईसामसीह का था।

जब हम ईसामसीह के जीवन काल का अध्ययन करते हैं तो स्पष्टत: एक बात सामने आती है, वह यह कि उस समय के लोगों की मूर्खता। उनकी मूर्खता के कारण ही इस दिव्य, अद्‌भुत व्यक्तित्व को सूली पर चढ़ा दिया गया और किस हद तक की मूर्खता! जब लोगों से पूछा गया कि, 'चोर और ईसामसीह में से किसे छोड़ दिया जाए?' तो यहूदियों ने कहा कि, 'चोर को छोड़ दिया जाए व ईसा को सूली पर चढ़ा दिया जाए।'

लोगों के स्तर की स्थिति हमें आज ज्ञात है। उनके द्वारा जो पाप हुए हैं वे अनेक जन्मों तक नहीं धुल सकते और अभी तक भी वे लोग पूरी तरह अहंकार में लिप्त हैं। वे सोचते हैं कि उन्होंने धार्मिक कार्य किया है। यदि, अब भी वे लोग परमात्मा से क्षमा याचना करें, यह कह कर, 'हे परमात्मा, हमें अपने पवित्र सिद्धान्त को सूली पर चढ़ाने के लिए क्षमा करें, आपके पवित्र सिद्धान्त को नाश करने के लिए, हमें क्षमा करें'। परमात्मा उन्हें तत्क्षण क्षमा कर देंगे, परन्तु मनुष्य को माफी मांगने में बड़ी तकलीफ़ होती है। वह अनेकों दुष्ट कार्य करते हैं।

इस संसार में कितने ऐसे व्यक्ति मिलेंगे, जिन्होंने संतो को पूजा है? आप श्री कबीर या श्री गुरुनानक का उदाहरण लें, लोगों ने हर कदम पर उन्हें उत्पीड़ित किया है। इस संसार में लोगों ने संतो को नुकसान और पीड़ा के सिवाए कुछ नहीं दिया है। परन्तु, अब मैं आपसे कहती हूँ कि हालात बदल गए हैं। सत्व युग शुरु हा गया है। आप प्रयत्न भी करें ता तब भी संतों को सताने में सफ़ल नहीं होंगे। यह ईसामसीह के कारण है, क्योंकि ईसामसीह ने एक शक्तिशाली शक्ति को ऐसे दुष्ट लोगों के विनाश के लिए गतिशील कर दिया है। वे दण्डित होंगे। ईसामसीह के एकादश रुद्र आक्रमण के लिए तैयार हैं। अब जो लोग किसी संत को सताएंगे, वे पूर्णतया नष्ट होंगे। इसके बाद ऐसी मूर्खता मत कीजिये। अन्यथा आपका पूर्ण विनाश होगा। ईसामसीह के जीवन काल से यदि एक बड़ी सीख लेनी है, तो वह यह है कि हर स्थिति में

आप सन्तुष्ट रहें, जिसमें आपको परमात्मा ने रखा है।

ईसामसीह ने अपने लक्ष्य को बदला नहीं, उन्होंने अपने आपको समाज से अलग नहीं किया, अपने आपको सन्यासी समझते हुए भी। इसके विपरीत, कुछ अवसरों पर वे कुछ विवाह-संस्कारों में शामिल हुए, प्रबन्ध किये। बाईबल के अनुसार एक विवाह के अवसर पर उन्होंने ताज़े जल को ताज़े अंगूर के रस में बदल दिया। अब मनुष्यों ने इस घटना को पकड़ लिया और कहा कि, 'चूंकि ईसामसीह ने जल से शराब (वाईन) बनाई, वे शराब पीते थे। 'हीब्रू' भाषा में 'वाईन' का अर्थ ताज़े अंगूरों का ज्यूस होता है।' इसका अर्थ शराब नहीं होता है।

ईसामसीह ने आज्ञा चक्र को खोलने और हमारे अहंकार को पिघलाने के लिए अवतरण लिया था। मेरा कार्य है कि आपकी कुण्डलिनी शक्ति को जागृत करूं ताकि यह आपके सहस्रार चक्र को छेद सके। यह कार्य सामूहिक प्रकृति का है: इसलिये मुझे यह सब में करना है। मैं आपको ईसामसीह, गुरु नानक, राजा जनक और अनेकों अन्य अवतरणों के विषय में बताना चाहती हूँ और वे किस प्रकार सामूहिक थे, इसी प्रकार मैं आपसे श्रीराम, श्रीकृष्ण और श्रीशिव के बारे बें बताना चाहती हूँ क्योंकि इन सबकी शक्तियाँ हमारे अन्दर हैं। अब सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति का समय आ गया है।

इस कलियुग में जो लोग ईश्वर की खोज में हैं, उन्हें पा लेंगे और यह हज़ारों लोगों में घटित होगा। सहजयोग 'लास्ट जजमैंट' है। यह बाईबल में वर्णित है। आपका न्याय होता है, केवल सहजयोग में आने से। उसके लिए आपको सहजयोग में आने के पश्चात् पूर्णतया स्वयं को समर्पित करना है। वह मिलने के बाद, जो कि सब कुछ है, यह महत्त्वपूर्ण है कि आप इसमें ठहरें, स्थापित और स्थिर हो जाएं। कई लोग मुझसे पूछते हैं कि, 'माताजी, हम कब स्थिर होंगे?' उत्तर बड़ा साधारण है। मानिए, कि आप नांव में बैठे हैं, तो आपको पता चल जाता है कि कब नांव स्थिर हो गई है, इसी तरह

साइकिल चलाने में भी, आप समझ जाते हैं कि, जब आप ड़गमगाते नहीं हैं, तो आप सन्तुलन में हैं और स्थिर हो गये हैं। इसी प्रकार से सहजयोग में हमारी स्थिरता समझी जाती है। यह परख व्यक्तिगत होती है, जो स्वयं करनी पड़ती है।

जब आप सहजयोग में स्थिर हो जाते हैं, तब निर्विचार चेतना स्थापित होती है। जब तक कुण्डलिनी शक्ति आज्ञा चक्र में से गुज़रती नहीं, निर्विचार चेतना तक नहीं पहुँच सकती है। साधक की निर्विचार चेतना में यह पहला कदम है ज्योंही कुण्डलिनी आज्ञा चक्र को पार कर लेती है, निर्विचार चेतन स्थापित हो जाती है। यह ईसामसीह की शक्ति है, जो आज्ञा चक्र के ऊपर सूक्ष्म द्वार को खोलती है, उसके लिए आपको ईसामसीह द्वारा रचित 'लॉर्डस् प्रेयर' बोलनी है। इस द्वार को पार करने के पश्चात्, कुण्डलिनी शक्ति, मस्तिष्क के तालू भाग में प्रवेश करती है। जब कुण्डलिनी इस क्षेत्र में प्रवेश कर लेती है, जिसे 'ईश्वर का साम्राज्य' भी कहा जाता है, तब निर्विचार चेतना की स्थिति स्थापित होती है। मस्तिष्क के तालू भाग में कुछ चक्र होते हैं, जो मुख्य सात चक्रों एवं शरीर के अनुपूरक चक्रों को कार्यान्वित करते हैं।

अब आईये, हम देखें कि आज्ञा चक्र के खराब होने के क्या कारण हैं? इसका एक मुख्य कारण है, आँखें। आपको आँखों का बहुत ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि वे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। एक अन्य कारण, आज्ञा चक्र के खराब होने का है, अनाधिकृत गुरु के सामने झुकना और उसके पैरों में सिर रखना। इसी कारण ईसामसीह ने हमें कहा है कि, हर व्यक्ति के आगे और स्थान पर सिर नहीं झुकाओ, क्योंकि ऐसा करने से, आपने जो भी पाया है, उसे अनजाने में खो देते हैं। आप को अपना सिर केवल अधिकृत व्यक्ति के सामने ही झुकाना है अर्थात् जो ईश्वर का अवतरण हो। गलत स्थान के सामने मत झुको। यह बड़ा महत्त्वपूर्ण है। यदि आप अपना सिर गलत व्यक्ति के समक्ष या स्थान पर झुकाते हैं, तो आप का आज्ञा चक्र सिकुड़ जाएगा। सहजयोग में मैंने देखा है कि अनेक लोगों ने अपना आज्ञा चक्र खराब कर लिया है। इसका कारण है, ये लोग

गलत गुरु को मानते हैं, या उनके सामने झुकते हैं, या गलत स्थानों पर सिर रखते हैं, इन गलत कार्यों से कई आँखों की बीमारियाँ हो जाती हैं।

आज्ञा चक्र को सही रूप में रखने के लिए, व्यक्ति को सदा पुराण और पवित्र पुस्तकें पढ़नी चाहिए। कभी भी किसी को अपवित्र साहित्य नहीं पढ़ना चाहिए। कई लोग शायद कहें कि इससे क्या फर्क पड़ता है? हमें अपने व्यवसाय के कारण कभी कुछ ऐसे कार्य करने पड़ते हैं जो शायद सही न हों, पर ऐसे अपवित्र कार्य करने से आँखें खराब हो जाती हैं। मुझे कभी भी यह समझ नहीं आया कि लोग ऐसे खराब काम क्यों करते हैं? यहाँ तक कि किसी अपवित्र एवं गंदे व्यक्ति को देखने से भी आज्ञा चक्र सिकुड़ जाता है। ईसामसीह ने दृढ़ता से कहा है कि, 'Thou shall not commit adultery'। पर मैं कहती हूँ कि 'Thou shall not have adulterous eyes' (आपकी आँखे भी पवित्र होनी चाहिए।) यदि आपकी आँखें अपवित्र हैं, तो आपको आखों की तकलीफ़ होगी और आँखें कमज़ोर हो जाएंगी। इसका यह अर्थ नहीं है कि जिसे चश्मा लगा है वह अपवित्र या सही व्यक्ति नहीं है। यह तो प्राकृतिक है कि जीवन में बड़ी उम्र में आपको चश्मा पहनना पड़ता है। आँखें खराब होती है क्योंकि आप उन्हें स्थिर नहीं रखते और हमेशा उन्हें एक स्थान से दुसरे स्थान पर घुमाते रहते हैं, इसी तरह लोगों का चित्त भी लगातार एक चीज़ से दुसरी पर जाता रहता है। इन्हें पता ही नहीं है कि ऐसे कार्यों से आँखें खराब होती हैं।

आज्ञा चक्र खराब होने का दूसरा कारण है, तरीका, जिस प्रकार आप कार्य करते हैं। यदि आप ज़रुरत से अधिक कार्य करते हैं, तो आप कार्य के प्रति सचेत रहते हैं। जो कार्य आप कर रहे हैं, अच्छा होगा, पर फिर भी यदि वह हद से ज़्यादा है, चाहे वह अधिक पढ़ना, अधिक सिलाई या अधिक सोचना यह सब आज्ञा चक्र को खराब कर देंगे। कारण यह है कि जब आप कार्य अत्यन्त अधिक करते हैं, तो परमात्मा को भूल जाते हैं। ऐसे कार्य में परमात्मा के प्रति सचेतना स्थिर नहीं होती।

कुण्डलिनी सत्य है। यह पवित्र है। उसमें कोई आडम्बर नहीं है। यह ऐसी नहीं है कि किसी दुकान से खरीदी जा सके, यह पूर्ण सत्य है। जब तक आप गलत मार्ग पर चलते हैं, आप सत्य को पहचान नहीं सकते। जब आप सत्य के साथ एक हो जाते हैं, जब आप इसमें सोख जाते हैं, केवल तब ही आप समझेंगे कि आप परमात्मा का यंत्र हैं, आप वह यन्त्र हैं जिसमें से परमात्मा की शक्ति बहती है और आप परमात्मा के प्रेम की शक्ति का यंत्र हैं, जो पूरे ब्रह्माण्ड में फैली है और सब कार्य करती है। यह शक्ति आपको ईसामसीह के सूली पर चढ़ने के कारण प्राप्त हुई है। ईसामसीह ने कितना बड़ा बलिदान दिया। उन्हीं के कारण आज्ञा चक्र खुला है। यदि किसी व्यक्ति का आज्ञा चक्र नहीं खुलता है, कुण्डलिनी नहीं उठेगी, क्योंकि मूलाधार चक्र भी सिकुड़ा रहेगा, यदि आज्ञा चक्र सिकुड़ा होगा। यदि किसी व्यक्ति का आज्ञा चक्र बहुत अधिक सिकुड़ा है, तो चाहे आप कितना भी प्रयत्न करें, कुण्डलिनी नहीं उठेगी।

हम आज्ञा चक्र की पकड़ को हटाने के लिए कुमकुम लगाते हैं। इससे अहंकार का प्रभाव कम होता है और दूसरी तकलीफें भी जब माथे पर आज्ञा चक्र के ऊपर कुमकुम लगाते हैं तो चक्र खुल जाता है और कुण्डलिनी उठती है। ईसामसीह और कुण्डलिनी में ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध है। श्री गणेश जो मूलाधार में हैं और श्री कुण्डलिनी की पवित्रता की रक्षा करते हैं, वे भी आज्ञा चक्र के द्वार को, कुण्डलिनी के पार जाने के लिए खोलते हैं।

आज्ञा चक्र को सही रखने के लिए हमें क्या करना है? अनेक तरीके हैं। हर कार्य में अतिशयता समाज को खराब करती है, इसलिये जीवन की किसी भी शैली में अतिशयता सही नहीं है, उससे दूर रहना चाहिए। सन्तुलन बनाए रखने से आँखों को आराम मिलता है। सहजयोग में इसके बहुत सारे इलाज हैं, पर यह पूर्णतया आवश्यक है कि प्रथम आप आत्मसाक्षात्कार लें। आज्ञा चक्र को स्वस्थ रखने के लिए कई आँखों के अभ्यास हैं। एक यह है कि आप अपने अहंकार को देखें और सोचें, 'आपकी क्या योजना है, आप कहाँ जाना

चाहते हैं?' आप इस प्रकार स्वयं को सम्बोधित करें, इस प्रकार, कि आप अपनी छवि शीशे में देख रहे हैं। यदि आप ऐसा करेंगे, आँखों पर अहंकार के कारण हुई थकावट कम हो जाती है।

दुसरा स्थान जो महत्त्वपूर्ण है, वह है सिर के पीछे का स्थान, एकदम माथे के पीछे। यह स्थान जो आठ उंगलियों की मोटाई का है, गर्दन की आधार-रेखा से पाँच इंच ऊपर है, यह महागणेश का स्थान है।

श्री गणेश का अवतरण महागणेश के रूप में हुआ और वही अवतरण ईसामसीह हैं। ईसामसीह का स्थान माथे के बीचो-बीच है। वह एकादश रुद्र शक्ति से घिरा है, ईसामसीह उस साम्राज्य के स्वामी हैं। एकादश रुद्र में महागणेश भी हैं और छः मुखों वाले प्रभु कार्तिकेय। कुण्डलिनी की जागृति के बाद जब आप आँखें खोलते हैं तो आप अनुभव करेंगे कि आपकी दृष्टि थोड़ी धुंधली हो रही है। यह इसलिये है क्योंकि जब कुण्डलिनी जागृत होती हैं, तो आँखों की पुतलियाँ फैल जाती हैं और ठण्डी हो जाती हैं। यह 'पैरासिम्पथेटिक नर्वस सिस्टम' का कार्य है। केवल ईसामसीह के बारे में सोचने से या उन पर ध्यान करने से आज्ञा चक्र को आराम मिलता है। इसके साथ-साथ याद रखना चाहिए कि रुढ़िवादी या परंपरागत तरीके से अनुसरण करने से ईसामसीह का ध्यान नहीं होता।

अब मैं आपको कुछ अनन्त सत्य बताने वाली हूँ। उसमें सर्वप्रथम है कि किसी स्त्री को बुरे उद्देश्य से देखना एक बहुत बड़ा पाप है। इस पाप की सीमा आप जान सकते हैं, जब आप देखते हैं कि सड़क पर लोग स्त्रियों को बुरी नज़र से घूरते हैं। इस विषय में ईसामसीह ने दो हज़ार साल पूर्व कहा है। पर उन्होंने इतना खुल कर इसे नहीं कहा।

इसीलिये मुझे आपको याद करवाना है इस बुरी आदत के बारे में। ईसामसीह ने इस बारे में हमें बताया और सूली पर चढ़ा दिए गए। उन्होंने

केवल यही कहा कि ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि यह गंदगी है, उन्होंने इस प्रकार के कार्य का बुरा परिणाम नहीं बताया। इस आदत के कारण मनुष्य जानवर के समान व्यवहार करता है और रात-दिन इसके मस्तिष्क को दुष्ट विचार घेरे रखते हैं। हमारे योग विज्ञान में यह सलाह दी गई है कि मन को नियंत्रित रखना चाहिए और सही मार्ग पर रखें। आपको ईश्वर के पास पूर्ण चित्त उन पर रख कर जाना चाहिए।

हम लोग योग से बने हैं। हमारी योग भूमि है। हम अहंकारी नहीं हैं औ न ही बनना चाहते हैं। हम इस भूमि पर योगियों के समान रहना चाहते हैं। एक दिन आएगा जब पूरा विश्व इस देश (भारतवर्ष) को प्रणाम करेगा। तब लोगों को ज्ञात होगा कि ईसामसीह कौन थे और वे कहाँ से आए थे। तब वे इस पुण्य भूमि पर आदर के साथ पूजे जाएंगे। भारतवर्ष में आज भी स्त्रियों की लज्जा का संरक्षण किया जाता है और वे सही आदर के साथ देखी जाती हैं। पूरे देश में हम माँ का बहुत आदर करते हैं। जब दुसरे देशों के लोग हमें इस देश में आते हैं, वे जान जाते हैं कि इस देश में वास्तविक ईसाई धर्म का पालन होता है, अत्यन्त समर्पण के साथ, पर उन देशों में नहीं जहाँ ईसाई धर्म को स्वीकारा गया है।

ईसामसीह ने कहा कि हमें फिर से जन्म लेना है। हमारे देश में इसे 'द्विज' या दूसरा जन्म कहते हैं। किसी भी मनुष्य का दूसरा जन्म केवल कुण्डलिनी जागरण से ही संभव है। जब तक कुण्डलिनी का जागरण नहीं होता, तो किसी का दूसरा जन्म नहीं हो सकता और जब तक हमारा पुनःजन्म नहीं होता, हम परमात्मा को पहचान नहीं पाएंगे। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् आप बाईबल पढ़ें तो आपको यह जान कर हैरानगी होगी कि ईसामसीह ने और कुछ नहीं केवल सहजयोग का महत्त्व बताया है। सब कुछ वर्णित है, यहाँ तक कि छोटी-छोटी बातें। जिनमें यह समझ नहीं है वे असलियत को गलत तरीके से पेश करते हैं। वास्तव में बाप्तिस्मा का अर्थ है, कुण्डलिनी शक्ति का जागरण, ताकि उठने के बाद वह जब सहस्रार को छेदती है, तो ईश्वर की परम चैतन्य

की शक्ति एवं कुण्डलिनी शक्ति का योग होता है। दर असल, यह कुण्डलिनी शक्ति का अन्तिम कार्य है।

ईसामसीह मनुष्यता को बचाने और मुक्त करने आये थे। वे किसी विशेष पंथ का व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं थे। वे स्वयं ॐकार अवतरण थे। वे प्रणव एवं सत्य थे। दूसरे अवतरणों के शरीर, पृथ्वी तत्त्व से बने थे, जब कि ईसामसीह का शरीर आत्मतत्त्व से बना था। इसी कारण उनका मृत्यु के पश्चात्, पुनर्जीवन हुआ और केवल पुनर्जीवन के कारण ही उनके शिष्यों को ज्ञात हुआ कि वे और कोई नहीं पर परमात्मा थे।

तब उन्होंने सबमें फैलाना शुरू किया, उनका नाम लेना शुरू किया, उनके विषय में प्रवचन देने शुरू किये। सबसे महत्त्वपूर्ण है कि परमात्मा ने अवतरण लिया। यदि लोग उन्हें पहचान सकें और आध्यात्मिक उत्थान पा सकें, आनन्द पा सकें, तो उससे आत्मा प्रकाशित हो जाएंगी और सब ओर प्रसन्नता एवं आनन्द फैलेगा। आप सब को परमात्मा का योग मिले।

ख्रिसमस पूजा, १९८१, लंदन

ईस्टर पूजा

1982, लन्दन
प्रभु ईसामसीह की रचना

मैंने अपने पिछले प्रवचनों में बताया है कि ईसामसीह पहले स्वर्ग में कैसे बनाए गए। देवी भागवत में यदि आप पढ़ें कि, वे पहले महाविष्णु के रूप में बनाए गये थे और यह बड़ी स्पष्टत: कहा गया है कि पहले वे अंडे के रूप में बनाए गये थे। यह इस पुस्तक में लिखा गया है, जो कि १४,००० वर्ष पूर्व लिखा गया था। यह पुस्तक ईसामसीह के बारे में भविष्यवाणी करती है और इसीलिये पाश्चात्य देशों में, खास कर ईस्टर पर आपस में एक दूसरे को अंडा, दोस्ती के रूप में देते हैं। तो पहले उनका अस्तित्व पृथ्वी पर एक अंडे के रूप में आया। यह अण्डा क्राईस्ट थे। उसका कुछ अंश जैसा था उसी अवस्था में रखा गया और शेष भाग का उपयोग होली घोस्ट अर्थात् महालक्ष्मी ने क्राईस्ट का उस भाग से निर्माण करने के लिये किया।

प्राचीन ग्रंथों में उन्हें महाविष्णु के नाम से संबोधित किया गया। महाविष्णु का अर्थ है विष्णु का महान रूप। परंतु वास्तव में विष्णु पिता है और क्राईस्ट होली घोस्ट द्वारा सृजन किया गये पुत्र हैं। यदि आपके पास वह पुस्तक है, तो मेरे भाषण के पश्चात् आपके लिये मैं वह सारा पाठांश पढ़ना चाहूंगी। क्राईस्ट का सृजन कैसे हुवा और कब हुवा यह उस अंश में है। वे अपने पिता के लिए रोए। एक बार वे सूली पर भी रोए और वे अनेक वर्ष रोए और तब ईसामसीह, महाविष्णु स्थिति में यह कहते हुए अपने पिता द्वारा आशीर्वादित हुए, 'तुम्हारा स्थान मेरे से ऊपर रहेगा और तुम आधार होंगे', अर्थात ब्रह्माण्ड का आधार। देखिए, मूलाधार से वे आधार बन गये।

वह सब स्वर्ग में हुआ था, वैकुण्ठ स्थिति में। आप कह सकते है कि

उनको 'होली घोस्ट' ने जन्म दिया जो पृथ्वी पर ईसा की माँ थीं, जो और कोई नहीं पर महालक्ष्मी का अवतरण थीं, अर्थात वे राधा थीं। रा-धा, 'रा' का अर्थ है ऊर्जा, 'धा' जो ऊर्जा को सम्भालती हैं।

ईस्टर के अनेक पहलू हैं, यह सबको समझना है और सबसे अधिक, 'वे क्यों मरे और क्यों पुनर्जीवित हुए?' इस विषय को मैंने अभी तक छुआ नहीं है, यही बात आज मैं आपको बताना चाहती हूँ।

केवल आप लोग ही ईसामसीह के जीवन का महत्व समझ सकते हो। जब यह कहा जाता है कि आपको ईसा के द्वारा साक्षात्कार लेना है, इसका अर्थ है कि उन्हें आज्ञा चक्र को भेदन करना था। उन्हें वहाँ ही होना था। यदि वे ऐसा न करते तो हमें कभी साक्षात्कार नहीं मिलता। इसीलिये यह कहा जाता है कि, 'आपको स्वर्ग के द्वार को केवल ईसामसीह के आशीर्वाद से ही पार करना है।' निश्चित ही इसका अर्थ चर्च नहीं है, इसका अर्थ कदापि भी चर्च नहीं है। सहजयोगी होने के कारण आपको यह समझना है कि आपको आज्ञा चक्र को पार करना ही है। अन्त में वह सब से मुश्किल स्थान है जिसे मनुष्यों को पार करना है, क्योंकि आज्ञा चक्र पर अहंकार एवं प्रतिअहंकार पूरी तरह बढ़े हुए होते हैं। यह अहंकार केवल मनुष्य स्थिति में ही विकसित होता है। अब प्रश्न यह था कि इस अहंकार पर विजय कैसे पाई जाए और अहंकार पर विजय पाने के लिए ईसा मसीह को यह करना पड़ा।

प्रारम्भ में जब वे श्री गणेश के रूप में बनाए गये, आपको वह कहानी पता है कि वे कैसे बनाए गये, कि पार्वती के शरीर के मल से, क्योंकि अपने विवाह के पहले, स्नान से पूर्व उन्होंने अपने शरीर को अनेक सुगन्धित वस्तुओं (उबटन) से ढ़का और वह निकाला गया। वे सब चीज़ें, और उनका चैतन्य बाहर निकला। और उन्होंने इस बच्चे को बनाया ताकि वह उनकी पवित्रता की रक्षा करे। अपने स्नानगृह के बाहर उसे बिठाया और आगे आपको सब कहानी पता है। उस बच्चे में पृथ्वी तत्त्व का एक भाग था-पृथ्वी

तत्त्व था। और सब चक्रों में दूसरे तत्त्व हैं। कुछ तत्त्व हैं। जैसे पृथ्वी तत्त्व है, जल तत्त्व है, वायु तत्त्व है और जब आप इस पर आते हैं, यह प्रकाश तत्त्व है, यह प्रकाश है।

इस स्थान पर, आज्ञा चक्र पर, उन्हें अन्तिम तत्त्व को पार करना था, वह प्रकाश तत्त्व था, इसका अर्थ है उन्हें अपने सत्य स्वरूप में बाहर आना था, दिव्य शक्ति, ओंकार, आप इसे चैतन्य कह सकते हैं या सम्पूर्ण, आप इसे 'लोगोस' कहें या पहली आवाज़, ब्रह्मा। उन्हें अपने अन्दर के अन्य तत्त्वों से छुटकारा पाना ही था, ताकि वे ब्रह्म सिद्धान्त बन सकें। अन्तिम प्रकाश तत्त्व था और उसे भी पार करना था। सो उनमें पृथ्वी तत्त्व था क्योंकि मल से बनाए गए और अन्य सभी तत्त्व उनमें थे। पर जब वे आज्ञा पर आए तो उन्हें सारे तत्त्वों को छोड़ना पड़ा, उन्हें अपने अन्दर के सभी तत्त्वों को मारना था ताकि वे सम्पूर्ण शुद्ध आत्मा बन सकें।

जो उन्होंने सूक्ष्म रूप में किया वह स्थूल रूप में कार्यान्वित होता है, और उसे करने के लिए उन्हें मरना पड़ा और उनमें जो मरा वह पृथ्वी तत्त्व का थोड़ा भाग था और अन्य तत्त्व थे और उनमें से जो बाहर निकला वह था- शुद्ध आत्मा। जिस शुद्ध आत्मा, शुद्ध ब्रह्म तत्त्व ने ईसा के शरीर को बनाया था वह पुनर्जीवित हो गया और यह घटित हुआ। ईसामसीह ने वही किया जो उनके लिए कहा गया था। वे संरक्षक हैं क्योंकि उन्होंने उस द्वार को पार किया ताकि लोगों को तत्त्वों से ऊपर उठा कर आत्मा के स्तर पर लायें।

सो, पुनर्जीवन है जहाँ आप बन जाते हैं, अपने चित्त से आप आत्मा के चित्त पर आ जाते हैं। जब आप चित्त को महसूस करते हैं व आत्मा बन जाते हैं, वही घटना है जो आप में भी घटित हुई है। परन्तु वे शुद्ध आत्मा बन गये, शुद्ध ब्रह्म तत्त्व। जब वे पुनर्जीवित हुए जो कि दिव्य शक्ति के कारण होता है, जो मूलाधार चक्र के पृथ्वी तत्त्व से आई। वहाँ से उसने जन्म लिया। आज्ञा चक्र पर आई, वहाँ ईसामसीह को बनाया गया ताकि वे सब तत्त्वों को पार

करें, अन्त में सहस्रार में प्रवेश कर के सम्पूर्ण ब्रह्म तत्त्व बनें। यह बड़ा कठिन कार्य था, बड़ा प्रायोगिक कार्य था और यह प्रयोग बड़ा खतरनाक था। यह असफल हो सकता था क्योंकि उनमें मनुष्य तत्त्व था, शारीरिक तत्त्व था, जो कष्ट झेलता है। उन्होंने दु:ख सहा क्योंकि यह शारीरिक तत्त्व सहता है, ना कि आत्मा, आत्मा नहीं कष्ट सहती है, शरीर कष्ट सहता है, सो उनको उस शारीरिक तत्त्व को निकालने के लिए सहना पड़े। और इसमें से बाहर निकलने के लिए उन्हें बहुत धैर्य रखना पड़ा। यह इतना कठिन प्रयोग था कि उनके सिवाए कोई इसे प्राप्त नहीं कर सकता था। उन्हें ज्ञात था कि यह पूर्वाघोषित है, पर यह सर्वाधिक कठिन कार्य था।

मुझे आश्चर्य है कि कितने ईसाइयों को अण्डे का अभिप्राय पता है। अण्डे का अभिप्राय है स्थिति, जिसमें आप साक्षात्कार के पूर्व हैं। जब आप अण्डे के खोल के भीतर हैं, तो आप 'मिस्टर एक्स' या 'मिसेज़ वाई' होते हैं, परन्तु जब अन्दर पूर्ण रूप से परिपक्व हो जाते हैं, पक्षी तैयार है, तब आप

ईस्टर पूजा, सिडनी १९९१

उस समय बाहर आते हैं, उस समय आप द्विज (दोबारा जन्म) हो जाते हैं। सो ईसामसीह के पुनर्जीवन का अभिप्राय इससे पता चलता है और इसीलिए हम लोगों को अण्डा देते हैं, यह कहते हुए कि आप वह अण्डा हैं, याद कराने के लिए। यह अण्डा आत्मा बन सकता है।

यह भी लिखा हुआ है कि जब वे पहले आये तो अण्डे का रूप था, उन्हें अण्डे के रूप में बनाया गया था-उसका आधा श्री गणेश के रूप में रह गया और उसका आधा भाग महाविष्णु बन गया। तब वे इस पृथ्वी पर आये और अपने सभी तत्त्वों के साथ चले गये और शुद्ध चैतन्य ने उनके शरीर को बनाया। वे, आप सब के अन्दर जागृत होने के लिए रहे और जब कुण्डलिनी आपके चित्त को उस बिन्दु से पार कराती है, तो आप भी आत्मा बन जाते हैं। इसलिये उन्होंने कहा, 'मैं ही द्वार हूँ' 'मैं ही दरवाजा हूँ', क्योंकि आप ईसा बन सकते हैं, इसलिये उन्होंने यह नहीं कहा, 'मैं ही लक्ष्य हूँ, आपको मुझे प्राप्त करना है।' आप आध्यात्मिकता में जागृत हो सकते हैं, आप आत्मा बन सकते हैं।

परन्तु ईसामसीह अवतरण हैं। वे परमात्मा के पुत्र थे इसलिये वे अवतरण थे। और अवतरण पृथ्वी पर आए केवल आपको तत्वों से बाहर निकाल कर आत्मा बनने के लिए यह सर्वाधिक कठिन है क्योंकि मनुष्यों ने अपने मस्तिष्क में कई प्रकार के बनावटी अवरोध बना रखे हैं। हम जो भी सोचते हैं और जो भी हम दिमाग से करते हैं वह मृतक है, मनुष्य द्वारा बनाया गया, वह बनावटी है, क्योंकि वास्तविकता मस्तिष्क से ऊपर है, यह आपके दिमाग में नहीं है, आप इसकी कल्पना नहीं कर सकते हैं, आप इसे संभाल नहीं सकते। जो भी आपके दिमाग में है, वह वास्तविकता नहीं है, यह उससे परे है। सो मनुष्य के लिए मस्तिष्क से परे की बात स्वीकारना बड़ा कठिन हो गया था, ईसामसीह के समय में, रोमन और अन्य लोगों के कारण। हम इतिहास दोहरा रहे हैं। वे इतने अहंकार ग्रसित थे, इतने घमण्ड से भरे थे कि उनके अहंकार को नष्ट करने के लिए, किसी को यह करना था, रास्ता बना था।

उनकी मृत्यु से बहुत बातों को सिद्ध किया जाता है। जिन लोगों ने उन्हें सूली पर चढ़ाया, वे मूर्ख लोग थे, वे अहंकार से ग्रसित थे, वे अन्धे थे, जो ईसा ने देखा, वे उसे नहीं देख सके। वे यह नहीं देख सके कि वह कितने विशुद्ध व्यक्तित्व थे। उन्होंने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया। मेरा अर्थ है कि यह सबसे बड़ी मूर्खता है कि उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया। यह पहले से ही पता था क्योंकि ये लोग इतने मूर्ख थे कि वे केवल सूली पर ही चढ़ा सकते थे, और वे क्या कर सकते थे? क्योंकि अपने अहंकार के कारण वे किसी सीधे और सत्य एवं विशुद्ध व्यक्ति को सह नहीं सके। सो उन्होंने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया और वह हमारे लिए आकस्मिक महत्त्वपूर्ण घटना बन गयी।

परन्तु हमारे लिए संदेश पुनर्जीवन है। हमारे लिए संदेश पुनर्जीवन है न कि 'क्रूसिफिकेशन' (सूली पर चढ़ाना)। 'क्रूसिफिकेशन' हमारे लिए संदेश नहीं है क्योंकि उन्होंने हमारे लिए कर दिया है, यह बात यहूदियों को समझनी है।

मैं सोचती हूँ कि लीडर आपको पढ़ कर बता देंगे कि देवी भागवत में ईसामसीह के विषय में क्या लिखा गया है। यह पुस्तक १४,००० साल पहले मार्कण्डेय ने लिखी थी। सोचिए कि १४,००० साल पहले उन्हें ज्ञात था, एक ऋषि होने के कारण, ब्लेक के समान, क्या होने वाला है, जब ईसा पृथ्वी पर आएंगे। पर उन्हें महाविष्णु कहा गया था, वे विष्णु नहीं थे। वे विष्णु के पुत्र थे, और कितने इसाईयों को ईस्टर के बारे में यह पता है? उन्हें नहीं पता है। ईसाई धर्म आजकल और कुछ नहीं, केवल मानसिक कार्य है, जो मृत है, केवल बेवकूफ़ी, किसी भी अन्य मूर्खता पूर्ण धर्म के समान, यह एक और मूर्खतापूर्ण, निरर्थक धर्म बन गया है, जिसका कोई अर्थ नहीं है।

जब तक आप आत्मसाक्षात्कार नहीं पाते, जब तक आपको चैतन्य नहीं महसूस होता, जब तक आप इस सब ओर फैली दिव्य शक्ति का अनुभव नहीं करते, आप कैसे समझेंगे? क्योंकि वही एक सत्य है। यही एक वास्तविकता है और जब तक आप इसे प्राप्त नहीं करते, आप कैसे

ईसामसीह के बारे में समझेंगे? इस बारे में आप कैसे झगड़ा कर सकते हैं, मुझे समझ नहीं आता! मुझे तो यह मूर्खता लगती है। अतिशयता के दूसरे छोर पर चले गये हैं। वास्तव में इस प्रकार करने से आप, सब अवतारों को आपस में मारने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। क्या आप कल्पना कर सकते हैं? जो चीज़ें आपको ऊपर ले जाने के लिए आईं, वही नाम एक दूसरे को मारने के लिए, एक दूसरे को नीचे खींचने के लिये उपयोग में ला रहे हैं। जब आप ऐसे बिन्दु पर पहुँचते हैं, जहाँ आप समझ नहीं पाते, तो वे कहना शुरू करते हैं कि 'यह रहस्य है।' क्या रहस्य है? सहजयोग में कोई रहस्य नहीं है। यह सब कुछ पहले से ही है। मेरे लिए मनुष्य ही रहस्य है। मैं उन्हें नहीं समझ पाती। मैं उन्हें नहीं समझ सकती।

ईसामसीह का पुनर्जन्म अब सामूहिक पुनर्जन्म होना चाहिए, यही महायोग है। सामूहिक पुनर्जन्म होना ही है और इसके लिए सर्वप्रथम सहजयोगियों को सामूहिक बनना है क्योंकि कुण्डलिनी जागृति से ही आप पार हो सकते हैं, आप सामूहिकता के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं और यदि आप उस सामूहिकता को अपने अन्दर प्रवेश नहीं करने देते, तो आप नीचे आ जाते हैं। यदि आप तत्वों से ऊपर की स्थिति में आ जाते हैं तो वह स्थिति है, जहाँ आप एक सामूहिक व्यक्तित्व हो जाते हैं। आप को यह ज्ञात होता है कि आप विराट के अंग प्रत्यंग हो जाते हैं। आप को यह चेतना है कि आपको अपने नाक की सहायता करनी है, अपनी आँखों की सहायता करनी है। आप उस स्थिति में पहुँच जाते हैं, जहाँ आप समझ जाते हैं, मैं उतना ही महत्वपूर्ण हूँ जितना कि दूसरे कोष हैं और दूसरे कोषों को मेरी सहायता मिलती है, और उन्हें मुझे धारण करना है। हम एक हैं। उसमें सम्पूर्ण ताल-मेल होना चाहिए।

यह चेतना साक्षात्कार के बाद आती है। यदि आप यह नहीं समझ पाते कि यह सामूहिक चेतना के कारण ही आप उस क्षेत्र में रह सकते हैं, अन्यथा आप बाहर निकल जाते हैं। आप अपने छोटे कुएं बना लेते हैं और आप उसी

में नीचे गिर जाते हैं। आप जितना स्वयं का विस्तार करते हैं, उतना ही ऊपर उठते हैं और फिर अपनी बाधाओं के साथ होते हैं। परन्तु यदि आप सोचते हैं कि, 'मुझे विराट के साथ रहना है, मैं विराट के लिए जिम्मेवार हूँ। मैं उस कोषिका के केन्द्र को बनाने के लिए जिम्मेवार हूँ, जो सामूहिकता की देखरेख करने वाला है और यदि मैं नीचे गिर जाऊं तो, बाकी भी पीडित होंगे, मुझे बिल्कुल नीचे नहीं गिरना है क्योंकि मुझे उस स्थिति तक पहुँचने के लिए पुनर्जन्म मिला है। मैंने उस सामूहिकता की स्थिति में प्रवेश किया है, जहाँ मेरा व्यक्तित्व, जो कि आत्मा है, वह सामूहिक व्यक्तित्व है और मुझे वहाँ रहना है। मुझे वहाँ होना ही है। मैं नीचे नहीं गिर सकता। मुझे नीचे गिर कर नहीं रहना है।'

क्रिसमस पूजा प्रवचन के सारांश

प.पू.श्रीमाताजी द्वारा

क्रिसमस पार्टी प्रवचन, लन्दन १९८३

हमें यह याद रखना है कि ईसामसीह ने इस पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में जन्म लिया। वे इस पृथ्वी पर आए और उनका कार्य था, मनुष्य चेतना को प्रकाशित करना, ताकि वे समझे कि वे यह शरीर नहीं है, परन्तु वे आत्मा है। यह मनुष्यों की चेतना में कार्यान्वित होता है। ईसामसीह का सन्देश पुनर्जीवन है। आप आत्मा हैं, शरीर नहीं हैं और यह उन्होंने अपने पुनर्जीवन द्वारा दिखाया। कैसे वे आत्मा के क्षेत्र में ऊपर उठे, जो वे थे, क्योंकि वे प्रणव थे। वे ब्रह्मा थे। वे महाविष्णु थे। जैसा कि मैंने आपसे उनके जन्म के विषय में बताया था। जब वे इस पृथ्वी पर मनुष्य शरीर में आये, वे दिखाना चाहते थे कि आत्मा का धन से कुछ लेना-देना नहीं है। सत्ता के साथ कुछ लेना-देना नहीं है। यह बहुत शक्तिशाली है, सर्व व्यापक है। यह अस्तबल में जन्म लेता है न कि महल में या राजा के घर। परन्तु वे बड़े ही साधारण, बढ़ई के घर पैदा हुए। इसका अर्थ है कि आपसे ऊँचा कुछ नहीं है: न ही आपका कोई नाश कर सकता है, न सजा दे सकता है, क्योंकि जो भी आप हैं, आप उच्चतम हैं। सब सांसारिक वस्तुएं सूखे घास के समान है, इसीलिये उन्हें सूखे घास में रखा गया था।

वे प्रसन्नता थे, वे आनन्द थे। वे इस पृथ्वी पर आए, ताकि आपको प्रसन्नता दे सकें। आपको प्रसन्नता का प्रकाश देने, जिसका स्रोत हृदय में स्थित आत्मा में है। केवल आपको बचाने के लिए ही नहीं, वरना आपको खुशी देने के लिए आनन्द देने के लिए, क्योंकि मनुष्य अपनी अज्ञानता और बेवकूफ़ी के कारण स्वयं को नष्ट कर रहे हैं। वे आपको प्रसन्नता एवं आनन्द

देने के लिए सुबह के पुष्प के समान आते हैं।

आप कहीं भी, किसी भी बच्चे को देखें, वह कितना आनन्द प्रदायक होता है और यह तो परमात्मा के बच्चे थे जो पृथ्वी पर आयें एक बच्चे के रूप में, जो अत्यन्त आनन्द-प्रदायक है, इसलिये क्रिसमस हम सबके लिए, पूरे ब्रह्माण्ड के लिए आनन्दभरा त्यौहार होना चाहिए, क्योंकि वे हमारे लिए वह प्रकाश ले कर आये, जिसमें हम भगवान का अस्तित्व देख सकते हैं, जो हमारी अज्ञानता दूर कर सकते हैं, यह प्रथम प्रारम्भ था।

इसलिये हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम प्रसन्न रहें। आनन्दमय रहें और आराम से रहें और किसी बात को इतनी गम्भीरता से न लें, जैसे कि हम लेते हैं, क्योंकि दिव्यता का जीवन आपको गम्भीर नहीं बनाता। यह एक नाटक है। यह माया है। मैंने लोगों को सब प्रकार के कर्मकाण्डों में देखा है। सब लोगों में, जो धार्मिक व्यक्ति कहलाते हैं, वे अत्यन्त गम्भीर हैं धार्मिक कहलवाने के लिए। एक धार्मिक व्यक्ति हंसी से भरा रहता है। वह अपना आनन्द किसी से छुपाना नहीं जानता। जब वह लोगों को अनावश्यक कारणों से गम्भीर देखता है तो उसे समझ नहीं आता कि अपनी हंसी कैसे रोके। सो

क्रिसमस पूजा, गणपतिपुले १९८५
प्रकाश देवता श्रीमाताजी की पूजा करते हुए

आप आनन्द में रहें कि आपके आज्ञा चक्र में ईसामसीह फिर से जन्मे हैं और आप जानते हैं कि आप उनसे किस प्रकार सहायता मांग सकते हैं, सदैव।

गणपतिपुले, सहजयोग के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है (कोल्हापूर १९८७)। यह स्थान है, जहाँ श्री गणेश, महागणेश बनते हैं और वहाँ वे पितृतत्त्व, गुरु तत्त्व, समुद्र... महासागर... हिन्द महासागर से घिरे हैं, अर्थात् वहाँ वे गुरु तत्त्व बन जाते हैं। (गणपतीपुले, १९८५)

गणपतिपुले में श्री गणेश अपने सम्पूर्ण परिपक्व स्वरूप में हैं, तब हमारी आँखें शुद्ध, शक्तिशाली और दिव्य हो जाती हैं (गणपतिपुले १९८५)। भारत वर्ष में हम कुछ लोग गणपतिपुले गये थे। जैसा कि आपको पता है, वहाँ गणेश, महागणेश बन गए हैं, वे ईसा हैं जो पृथ्वी माँ से बाहर आए हैं, महागणेश, शरीर का नीचे का भाग वहाँ दिखाई देता है। और सिर पूरा पहाड़ है और वहाँ समुद्र का जल भी मीठा है और वहाँ अनेक मीठे जल के कुएं हैं। (मैंडरिड़, स्पेन, १९८६)

क्रिसमस पूजा, १९९०

आज हमें बहुत बड़ा अवसर मिला है, ईसामसीह का जन्मदिवस मनाने के लिए। वे चारे की नाद में पैदा हुए। ये सब पूर्वनियोजित होता है, ताकि वे आपको दिखा सकें कि चाहे आप अमीर पैदा हों या गरीब, चाहे आप मुश्किलों में पैदा हों, परन्तु यदि आपमें दिव्यता हैं तो वह स्वयं ही चमकती है।

आज हम यहाँ ओम्कार का जन्म मनाने आए हैं। यह बहुत बड़ी बात है। मैं नहीं जानती कि आप इस बात को अभी समझ रहे हैं या नहीं कि यह क्या है? जो हर चीज़ में गतिशील है। चाहे वह अणु-परमाणु है। रासायनिक पदार्थों की व्यवस्था में, संपूर्ण खंडों में और गुरुत्व-आकर्षण शक्ति में। हर चीज़ में जो गतिशील है, वह ओम्कार है। आपकी चैतन्य लहरियाँ और कुछ नहीं, ओम्कार ही हैं। वास्तव में मेरी फोटो में जो चैतन्य लहरियाँ हैं वे ओम्कार हैं। लोगों के सिर के ऊपर ओम्कार है। यह कैसे हो रहा है? ये

प्रकाश रेखायें ओम्कार के समान दिखती है। यह, सहजयोगियों के सिर के ऊपर कैसे हैं? सब सहजयोगियें के सिर के ऊपर ओम्कार है, या अरबी भाषा में अल्लाह है। मेरा नाम भी अरबी भाषा में यही है।

यह सब कौन कर रहा है? यह वही हैं जो सब कुछ कर रहे हैं। सो, ओम्कार ही आकार लेते हैं ताकि आपको आदिशक्ति के बारे में पूर्ण विश्वास दिला सकें। वही हैं जो इन सब शक्तियों को सम्भाल रहे हैं। वे फोटो के भीतर नहीं प्रवेश करते, परन्तु वे एक युक्ति करते हैं। यदि आप विस्तार में जाएं, आपको प्रकाश में से फोटो कैसे मिलती है? प्रकाश सीधी लाईन में जाता है, पर वे चाहें तो वे प्रकाश को दूसरे रास्ते में से पार करा सकते हैं। वे प्रकाश को रूपांतरित कर सकते हैं। वे जो चाहे कर सकते हैं और वे आपको विश्वासित करने के लिए यही करते हैं।

उन्होंने कहा कि, जो कुछ भी मेरे विरोध में है, मैं सहन कर लूंगा। पर 'होली घोस्ट' के विरोध में कुछ नहीं। यह 'होली घोस्ट' ही आदिशक्ति हैं। उनके बिना आप सहस्रार में नहीं जा सकते। तो इस सब में वे सूत्रधार है। वे ही परिचालक हैं, जो कि कठपुतली के खेल में धागे गतिशील करते हैं। इसलिये यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि पूजा में हम हर समय श्री गणेश को प्रार्थना करें। हमें उनसे प्रार्थना करनी चाहिए और इस प्रकार हम ईसामसीह से प्रार्थना करते हैं, हर समय। उनकी मंगलता के बिना, सहायता के बिना हम सहजयोग नहीं कर सकते। वे प्रबन्धक हैं। आप देख रहे हैं, मैं यहाँ बैठी हूँ और वे प्रबन्ध कर रहे हैं। यदि कोई प्रबन्ध नहीं हो तो मैं कैसे बोलूंगी यहाँ? कुछ नहीं हो सकता, पर वे इतने कार्यकुशल हैं और आप उन्हें काम करते हुए, कुछ करते हुए कभी नहीं देख सकते।

क्रिसमस पूजा, १९९१

यह बड़ा महत्वपूर्ण दिवस है, हमें सीखना है कि यदि आप गणपति जी की या ईसामसीह की पूजा कर रहे हैं तो हमारे अन्दर उनके कौनसे गुण आए हैं।

क्रिसमस पूजा, १९९२

उन्होंने कहा है कि आपकी आँखे अपवित्र नहीं होनी चाहिए कितनी सूक्ष्म बात है। यहाँ तक कि आँख में भी अपवित्रता नहीं होनी चाहिए। उसमें वासना और लोभ नहीं होना चाहिए। उन्होंने कितनी सूक्ष्म बात कही है।

सबसे प्रथम व बड़ी बात उन्होंने कही है कि आपको परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करना है। आपका दूसरा जन्म होना ही चाहिए।

हमें यह समझना चाहिए कि ईसामसीह ने अपनी चमत्कारी ज़िन्दगी में, कितने चमत्कार दिखायें हैं। सर्वप्रथम उनका जन्म, जो निष्कलंक था।

मैंने बहुत समय पूर्व आपको बताया है, कि कैसे यह सिद्ध कर सकते हैं कि ईसा ही गणेश थे। वे 'लोगोस' थे। वे ब्रह्मनाद थे, सब से प्रथम शब्द। यदि आप दायीं और से बायीं ओर को देखें, यदि आप मूलाधार को देखें, आप स्वस्तिक देखेंगे क्योंकि यह कार्बन के अणू से बना है। यदि आप बायीं ओर से दायीं को देखेंगे तो आपको ओम्कार दिखेंगे और यदि आप नीचे से ऊपर देखेंगे तो यह 'अल्फा' और 'ओमेगा' दिखेगा। उन दिनों में ईसामसीह ने कहा, 'मैं अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ।' हमने इसका 'एनीमेशन' (सजीव चित्र) बनाया है, पर उसे दिखाने का यहाँ प्रबन्ध नहीं है। मैं नहीं जानती कि कैसे आपको दिखाने का प्रबन्ध करें, पर आप स्पष्ट देख सकते हैं कि जो मैंने कहा है, वह सिद्ध किया जा सकता है।

श्री गणेश में सबसे पहले आप देखते हैं विवेक बुद्धि और वह विवेक बुद्धि आप प्रारम्भ से ही ईसा के जीवन में देखते हैं। वे इतने विश्वस्त थे कि बारह साल की आयु में उन्होंने फारसी अर्थात् पंडितों के साथ बातचीत करी। अभी भी सब स्थानो में पंडित मुल्ले और भटजी आदि धर्ममार्तण्ड हैं, पर उन्होंने छोटी आयु में ही उनके साथ तर्क-वितर्क किया और कहा कि 'आप यहाँ क्या कर रहे हैं?' सब केवल कथन है।' वे उनके साथ तर्क-वितर्क कर रहे थे परन्तु उनके माता-पिता

को भय था कि लोग उन्हें कहीं मार न दें इसलिये वे उन्हें भारतवर्ष में ले आए।

वे भारतवर्ष में ज्ञान के लिए आए। मैं नहीं जानती वह ज्ञान भारतीयों में से कहाँ चला गया। पर यह देश ज्ञान से भरा था। जब वे भारत वर्ष में आकर रहे, हमें उनकी अनेकों स्मृतियाँ हैं। शालिवाहन राजा भी उनसे मिले, उनकी पुस्तक में यह वर्णन है कि वे काश्मीर के एक पुरुष से मिले जो संत किस्म के थे और उन्होंने उनसे पूछा, 'आपका नाम क्या है?' उन्होंने कहा, 'मेरा नाम ईसा है।' अब देखिए, ईसा वेदों में आदिशक्ति के लिए 'ई' का प्रयोग होता है, 'सा' का अर्थ है, साथ। उन्होंने कहा, 'मेरा नाम ईसा है।' राजा ने पूछा कि, 'आप कौनसे देश से आए हैं?' ईसा ने कहा कि, 'मैं ऐसे देश से आया हूँ जो मेरे लिए विदेश है, मेरा यही देश है।'

हाल ही में मुझे एक पुस्तक मिली है जो मिस्त्र में पचास सालों से एक मर्तबान में छुपाई हुई थी और ढूंढ़ ली गई है। इस पुस्तक को 'लाईब्रेरी ऑफ हम्मादी' कहते हैं, जहाँ से यह पुस्तक ढूंढ़ी गई, उस स्थान को हम्मादी कहते हैं। जो ईसा ने कहा, वह थौमस ने लिखा है। जब थॉमस भारत में आए, तो उन्होंने वे सब बातें लिखी, वे बड़ी रोचक हैं। पीने के बारे में उन्होंने कहा, 'पीने से व्यभिचार आता है।' यह अच्छा शब्द नहीं है और ईसाईयों को ज्ञात नहीं है।

ईसा के जीवन का मूल है नीतिमत्ता। वे बायीं ओर है, जैसा कि आप कह सकते हैं कि वे श्री गणेश से हैं और तब वे स्वयं को आज्ञा पर स्थापित करते हैं, पर सदाचार उनके जीवन का सार है, जो कि हम भारतीय भाषा में चरित्र कहते हैं।

ईसा के जीवन में श्री गणेश का एक और गुण दिखाई देता है-माँ के प्रति निष्ठा। उस पुस्तक में 'मरिया माँ उन्हें ज्ञान के विषय में बता रही है।' पर उसमें पौल ने आपत्ति करी है। वे कहती हैं कि, यह आपको प्राप्त करना है, पर पौल उसे नहीं जानना चाहता और बहस करता है।

थॉमस ने कहा, जो ईसा ने 'क्रौस' पर कहा, 'माँ को पकड़ कर रखो,

वह ईसा की माँ है, आप उनकी बेइज्जती कैसे कर सकते हैं?' पर इसके विपरीत पौल कभी स्त्रियों की इज्ज़त नहीं करता था। इसीलिये उसने उन्हें बिना किसी आदर के केवल एक स्त्री कहा। महालक्ष्मी के लिए कोई मान नहीं! क्या आप सोच सकते हैं, केवल एक स्त्री।

क्रिसमस पूजा, १९९३

उत्क्रान्ति के मार्ग में, हर अवतरण ने कुछ अतुलनीय कार्य किया है। अन्त में ईसामसीह ने पुनर्जीवन का कार्य किया और वह इसलिये किया क्योंकि उन्हें मरना ही था।

अन्यथा आप अपने आप कैसे पुनर्जीवन प्राप्त कर सकते थे? बहुत सी ऐसी बातें हैं जो पौराणिक लगती हैं, पर होती नहीं। कल वे कहेंगे कि, ईसा ने कभी पुनर्जीवन किया ही नहीं और वास्तव में बाद में वे काश्मीर में मृत्यु को प्राप्त हुए। इस का सबूत है, परन्तु लोग उसे विश्वास नहीं करते और वे केवल ईसाई धर्म फैलाना चाहते थे, क्योंकि उन्हें यह पता था कि यदि आपके पास अधिक संख्या है तो वे राज कर सकते हैं।

यह बाईबल में या ईसाई धर्म में नहीं है, यह लोगों ने कहा। लोगों ने उसे 'मैडोना' कहा और 'मैडोना' के स्तर से लोगों ने माँ व मातृत्व को देखना शुरू किया। वह महालक्ष्मी थी। हम इसे अच्छी तरह से जानते हैं और हम उसे महालक्ष्मी के रूप में पूजते हैं। वह राधा थीं। राधा का भी एक पूत्र था और वह एक अण्डकोष के समान था। अण्डे का आधा भाग ईसा था व आधा श्री गणेश। जब यह बच्चा पैदा हुआ, वह अपने पिता के लिए रोने लगा। पिता श्रीकृष्ण थे। यदि हम देवी महात्म्यम् पढ़े, तो उसमें यह लिखा है। सो वे हमेशा अपना हाथ, अपने पिता की ओर इस प्रकार रखते हैं। एक, जैसा कि आप जानते हैं, श्रीकृष्ण की उंगली है व दूसरी विष्णु की।

और वे थी रा-धा। 'रा' का अर्थ है ऊर्जा, 'धा' का अर्थ है ऊर्जा को

धारण करने वाली। उन्होंने ही उन्हें 'जीज़स' कहा। वास्तव में 'हिब्रू' भाषा में इसे 'येसू' कहते हैं। मैंने बाईबल को मराठी भाषा में पढ़ा है जो सीधे 'हिब्रू' भाषा से अनुवादित है, येसू ही नाम है। ईसा की माँ का नाम येसू है, श्रीकृष्ण की माँ, जिन्हें हम जेसू या येसू-जशोदा से बना नाम या यशोदा। 'क्राईस्ट' शब्द कृष्ण से बना है। सो वे उन्हें क्रिस्त और येशू या जीज़स बुलाती थीं। हम भी कभी-कभी यशोदा को जेसू या येसू बुलाते हैं।

कैसे उन्होंने लोगों को क्षमा किया। जिन्होंने उन्हें क्रूस पर चढ़ाया वे वास्तव में यहूदी नहीं थे, वे 'रोमन' थे। रोमन शासकों ने उन्हें सूली पर चढ़ाया पर पौल ने तय किया कि, 'हमें यहूदियों को दंड देना चाहिए, ताकि यहूदियों को ही किमत चुकानी पड़े।' यह कार्य यहूदियों ने नहीं किया और हमेशा के लिए यहूदियों को अपराधी ठहरा दिया गया। इस प्रकार के बर्ताव के कारण लोगों ने यहूदियों के प्रति घृणा की। उन्हें तकलीफ़ दी गई और उन्हें सताया गया। यहूदियों ने भी प्रतिक्रिया की। वे भी बराबर के वैसे ही हैं। सो वे यहूदी नहीं थे, क्योंकि ऐसा कभी नहीं होता कि मैजिस्ट्रेट जनता से पूछे कि चोर को सूली पर चढ़ाया जाये या इस आदमी को ऐसा कभी नहीं होता। उन्हें अपना स्वयं का फैसला लेना होता है। सो इस पौल ने सबसे बड़ा नुकसान यह किया है कि यहूदियों को शापित कर दिया।

क्रिसमस पूजा, १९९४

'मेरी क्रिसमस' और नये वर्ष के लिए आपको आशीर्वाद। आज हम बड़ी लम्बी पूजा नहीं करेंगे। परन्तु कुछ बातें हैं जो हमें ईसा के जीवन से समझनी हैं। ईसा बहुत गरीब हालातों में पैदा हुए, केवल यह दिखाने के लिए कि आध्यात्मिकता किसी भी हाल में, किसी भी समस्या में रह सकती है और उन्हें अपने ही समाज से इतना विरोध सहना पड़ा। वे यहूदी परिवार में पैदा हुए और उस समय यहूदी उनका स्वीकार नहीं करना चाहते थे, पर यहूदियों ने उन्हें मारा नहीं, वह खास बात है जो हमें समझनी है। उन्होंने उन्हें मारा नहीं।

किसी भी कानून के तहत जनता मार नहीं सकती। वह वास्तव में रोमन जज था, जिसने उनकी मृत्यु का आदेश निकाला।

उनके जीवन का अनुकरण करना बड़ा कठिन है क्योंकि वे पूर्णतया दिव्य व्यक्तित्व थे और इसीलिये जो भी नियम आदि उन्होंने बनाये वे मानने मुश्किल हैं, बड़े कठिन हैं। मैं सोचती हूँ कि बहुत कम व्यक्ति उनके जीवन का अनुकरण कर पाते हैं। यह अत्यन्त कठिन हैं क्योंकि उन्होंने कहा कि यदि आप अपनी आँखों से कोई व्यभिचार करते हैं तो उन्हें बाहर निकाल दो। यदि अपने हाथ से कोई अपराध करें तो उसे काट दें। उनके लिए अपराध बहुत सूक्ष्म बात थी। यदि कोई दायीं गाल पर चाँटा मारे तो बायीं गाल आगे कर दो। ऐसी इतनी कठिन बातों का अनुकरण करना असंभव है। और यह भी उन्होंने कहा कि, 'आपको करना है, दूसरों को नहीं।'

वे सर्वोत्तम सहजयोगी थे, पर उनके पास इतनी शक्तियाँ थीं जो मनुष्यों के पास होनी कठिन है। परन्तु उनके त्याग, समायोजन, हर बात जो उन्हें कही गई थी, उसको स्वीकारना सब स्वीकार किया। उनका अपनी माँ के प्रति प्रेम, क्रूस पर उन्होंने कहा, 'बी होल्ड द मदर', उन्होंने केवल कहा, 'बी होल्ड द मदर।'

हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हम यह समझें कि हम क्या हैं यह सहजयोग के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ईसा ने कहा, 'मैं परमात्मा का पुत्र हूँ।' ठीक है, उन्होंने खुले आम कहा, जब कि, इसके लिए लोगों ने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया। परन्तु उन्होंने स्पष्टतः कहा कि, 'मैं परमात्मा का पुत्र हूँ। जो करना है करो।' यह सत्य था जो उन्हें कहना था।

सो अब सहजयोगियों को कहना है कि, 'मैं आदिशक्ति का पुत्र या पुत्री हूँ।' एक बार आप इस बात को स्वयं से कहें, तो अचानक ही आपमें बदलाव आ जाएगा क्योंकि यह बहुत बड़ा पद है, यह एक पूजनीय पद है। एक बार आप ऐसा कहेंगे, तो आप समझना शुरू कर देंगे कि आपकी क्या जिम्मेदारी

है? आप हैरान होंगे।

जैसा कि मैंने आपसे कहा कि एकादश रूद्र हमारे भवसागर से बाहर आते हैं। सो हम कह सकते हैं कि विनाशकारी भाग भवसागर से आता है। ये शक्तियाँ महाविष्णु द्वारा दी गई हैं, जो कि प्रभु ईसामसीह हैं, जो पूरे ब्रह्माण्ड का आधार हैं। वे ओम्कार का मानवीकरण हैं। वे चैतन्य का मानवीकरण हैं। जब वे क्रोधित होते हैं तो पूरा ब्रह्माण्ड टूटने लगता है क्योंकि वे माँ की शक्ति, जो हर अणु में है उसे मानवीय रूप देते हैं। हर परमाणू में, हर मनुष्य में, हर जीव एवं निर्जीव वस्तू में है, उसे मानवीय रूप देते हैं। एक बार जब वह अव्यवस्थित हो जाता है, तो सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता है। इसलिये ईसा को प्रसन्न करना अत्यन्त आवश्यक है। ईसामसीह ने कहा है, कि आपको छोटे बच्चों के समान होना है, जो कि अबोधिता है। हृदय की शुद्धता उन्हें प्रसन्न करने के लिए सर्वोत्तम है।

क्रिसमस पूजा, १९९५

सर्वप्रथम, ईसा का जन्म चारे की नाद में हुआ था। इसका अर्थ है कि बड़े गरीब हालातों में जन्म हुआ। इसका अर्थ है कि उन्होंने यह दिखाया कि धन की इतनी आवश्यकता नहीं है, या बहुत बड़ी जमीन-जायदाद की आवश्यकता नहीं है, दूसरों को प्रभावित करने के लिए। उन दिनों लोग तापसी व्यक्तियों का आदर करते थे, जो तपस्या करते थे। वह तपस्या करने का समय था।

वे इस पृथ्वी पर आए और एक तपस्वी के समान रहे। इसके विपरीत ईसाई लोग सबसे अधिक अपने आप में आसक्त रहते हैं। आप किसी भी ईसाई देश में जाएं तो आप हैरान होंगे कि वे कितने धन व घड़ी के गुलाम हैं। जिस प्रकार वे रह रहे हैं, यह बड़ी धक्का लगने वाली बात है कि वे ईसा को मानते हैं, 'हाँ हम ईसामसीह को मानते हैं।' तब मानने का क्या अर्थ है? वे वहाँ हैं और आप पीछे की ओर चल रहे हैं। क्या इसे मानना कहते हैं?

सो आज हम ईसामसीह के बारे में बात कर रहे हैं। वे आज्ञा चक्र पर बैठे हैं व 'पीनियल एवं पिट्यूटरी' को नियंत्रण में रखते हैं। इस प्रकार वे हमारी 'कंडिशनिंग' (कार्यकाण्ड) को नियंत्रित करते हैं। यदि हम उन्हें मानते हैं तो हम किसी कर्मकाण्ड या बंधन में नहीं रह सकते क्योंकि उन्होंने केवल आत्मा के विषय में कहा है। आत्मा को बाधित नहीं कर सकते, किसी भी चीज़ से। जो भी आत्मा के लिए अच्छा है, संवेदनशील है वह स्वीकारा जाएगा।

यदि आप उनके उपदेश सुनें, वे इतने गहन व प्रकाशित हैं। मिस्टर पौल के हस्तक्षेप के बावजूद भी, आप पाएंगे कि, ईसा लोगों को बोलते थे। हर प्रकार से बखान करते थे। साक्षात्कार के पश्चात् क्या होता है? कैसे बीज अंकुरित होता है? और वह कैसे खराब हो सकता है? उन्होंने लोगों को यह सब अत्यन्त सुन्दर ढंग से बताया।

वास्तव में हमें समझना है कि ईसा ने कोई विशेष धर्म नहीं प्रारम्भ किया। कभी नही, उनमे से किसी ने भी नहीं। विशेषतया मोहम्मद साहब ने अब्राहम के बारे में कहा, मोज़िज के बारे में कहा। उन्होंने ईसा और उनकी माँ के बारे में बाईबल से भी अधिक बताया। उनका आदर करते थे।

ईसामसीह का जीवन बड़ा आकर्षक और सुन्दर था। एक उल्का के समान वे इस पृथ्वी पर आये और लोगों पर एक विलक्षण प्रभाव छोड़ गये। उनका सूली पर चढ़ाया जाना, नाटक का एक भाग था। क्योंकि उन्हें आज्ञा चक्र में मार्ग बनाना था। आज्ञा चक्र को पार करने के लिए ही वे सूली पर चढ़ाए गये। पर उनका संदेश सूली पर चढ़ना नहीं है। लोग गले में क्रौस पहनते हैं और मुझे इसके कारण बड़ा दु:ख होता है। उन्होंने स्वयं को क्रूस पर चढ़ाया। वह संदेश नहीं है, आप को उसे नहीं मनाना है कि वे सूली पर चढ़ाए गये। कुछ लोग हैं वे इसे मनाते हैं।

आपको उनका पुनर्जीवन मनाना है, क्योंकि मनुष्यों का पुनर्जीवन होना

है। सहजयोग में कोई भी सूली पर नहीं चढ़ता क्योंकि ईसा उस पर चढ़े, वह काफ़ी है। आप अपने कंधों पर क्रॉस नहीं खींच सकते, उन्होंने आपके लिये वह खींच लिया है। उन्होंने आपके लिए सब कुछ कर दिया है। उन्होंने यह भी कहा, कि वे सब पापियों के लिए मर रहे हैं। यह सत्य है। यदि उन्होंने यह नहीं किया होता तो आपका आज्ञा खोलना कठिन होता, दो कारणों के कारण अहंकार व प्रतिअहंकार।

ईसा की शुद्ध प्रकृति है, अबोधिता। आपको पता है, वे श्री गणेश हैं। श्री गणेश जी एक अनन्त बाल स्वरूप हैं। ईसा भी सम्पूर्ण अबोधिता हैं, क्योंकि वे न तो प्रतिक्रिया करते हैं और न ही किसी बंधन में हैं।

क्रिसमस पूजा, १९९६

आज हम ईसामसीह का जन्मदिवस मना रहे हैं। ईसा का जन्म बड़ा प्रतीक रूप है क्योंकि वे इस प्रकार पैदा हुए कि गरीब से गरीब भी इस प्रकार अस्तबल में पैदा नहीं होगा। वे सूखे घास से बने बिस्तर पर लिटाये गए। वे पृथ्वी पर यह दिखाने के लिए आए कि जो व्यक्ति एक अवतरण है या एक अत्यन्त उच्च आत्मा है, उसे शारीरिक आराम होने न होने से फ़र्क नहीं पड़ता।

जातीयता, ईसा की क्या जाति थी? क्या वे गोरे थे? नहीं क्या वे श्वेत थे? बिल्कुल नही। उनका रंग क्या था? वे भारतीयों के सम्मान 'ब्राऊन' थे।

ईसा के केवल बारह शिष्य थे। एक या दो के सिवा सभी समर्पित थे। बिना साक्षात्कार के, ईसाई धर्म के प्रति पूर्णतया समर्पित और वह फैला।

क्रिसमस पूजा, १९९७

मैं उन्हें बता रही थी ईसा के बारे में, उनकी क्या शक्ति थी? उनकी शक्ति प्रेम की शक्ति थी न की क्रोध की, क्योंकि उन्होंने सबसे कठिन चक्र, आज्ञा को पार किया है।

आप सहजयोग में क्यों आए? आप एक महान गुरु बनने के लिए आए हैं, जैसा कि आपने मुझसे कहा, 'गुरुपद दीजिए।' उसके लिए आपको सहजयोग में सम्पूर्ण विनम्रता, स्वाभाविक नम्रता, प्राकृतिक सन्तुलन होना चाहिए, यही हमें ईसा ने सिखाया है।

यदि आप में कुछ भी अनुशासन नहीं है तो आप कभी भी एक अच्छे सहजयोगी नहीं बन सकते। ईसा के जीवन से हमें ये बातें सीखनी हैं, जब तक कि ये सब बातें हम में नहीं आतीं, हम अच्छे सहजयोगी नहीं बन सकते।

ईसामसीह को देखिए, उन्होंने अत्यन्त छोटे स्थान पर जन्म लिया, पर वे राजा थे। वे गरीबों के साथ रहे और उन्हें बचाने का प्रयत्न किया। उन्होंने कोढ़ियों को बचाया। उन्होंने अनेक लोगों को बचाया, इक्कीस लोगों को आरोग्य दिया।

ईसामसीह केवल एक ही बार क्रोधित हुए, जो उनका अधिकार था, कि जब उन्होंने देखा कि लोग मंदिर में सामान बेच रहे हैं। तब ईसा ने 'हन्टर' लेकर उन लोगों को मारा जो कि गिरजाघर के पास सामान बेच रहे थे।

ईसा एक विवाह में गए और वहाँ कोई 'वाईन' नहीं थी। यहूदियों की 'हिब्रू' भाषा में 'वाईन' का अर्थ है अंगूर का रस, इसका अर्थ उबाला हुआ नहीं है। तो उन्होंने पानी को रस में बदल दिया। आप तत्क्षण पानी को 'वाईन' में नहीं बदल सकते। वाईन को सड़ना होता है। उसमें से गंध आती है। जितनी गंध हो, उतनी ही अच्छी मानी जाती है। परन्तु वे सोचते हैं कि ईसा ने कहा कि आप शराब जरूर पीओ। उन्होंने ऐसा कभी नहीं कहा। उन्होंने केवल पानी को अंगूर के रस में बदल दिया।

एक बार मैं एक टैलिविज़न पर गई। वहाँ इटली में एक बड़ा अच्छा पुरुष था। उसने कहा, 'माँ, आप पहले मुझे साक्षात्कार दीजिए।' तो मैंने कहा, 'कुछ पानी लाओ।' मैंने अपना हाथ उसमें डाला और कहा, 'अब इसे पी जाओ।' वह बोला, 'यह वाईन के स्वाद के जैसी है।' मैंने कहा, 'यही है जो

ईसा ने किया।' उसे साक्षात्कार मिल गया। तत्क्षण आप वाईन नहीं बना सकते।

परन्तु यदि किसी की मृत्यू हो जाए तो वे पीएंगे। किसी का जन्म हो तो वे पीएंगे। किसी भी कीमत पर, बिना पीये वे सामान्य नहीं होंगे। परन्तु जिन लोगों को साक्षात्कार मिला है, वे पीना नहीं चाहते। उन्होंने पीना बंद कर दिया है। उनका चित्त अच्छा हो गया है। यह परिवर्तन है, जो कार्यान्वित हुआ है। जिसके विषय में ईसा ने कहा है, मोहम्मद साहब ने कहा है, सब ने इस विशेष समय के बारे में कहा है, जब लोग परिवर्तित होंगे।

सो, आपको ईसा को समझने के लिए, आपमें उनके गुण होने चाहिए। अपने अहंकार को समर्पित करें। आपकी सब समस्यायें सुलझ जाएंगी। क्योंकि जब तक अहंकार है, तब तक वह दिव्य शक्ति अपने ऊपर नहीं लेती। आप कुछ भी कर लें, आप जुड़े नहीं है। जोड़ का अभाव है। ईसा का अभाव है। वे और अब वहाँ नहीं है। उन्हें स्थापित करने के लिए सर्वप्रथम आपको दिखाना है, आप कैसे प्रेम करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि आप अपनी पत्नी से प्रेम करें, बच्चों से प्रेम करें, अपने घर से प्रेम करें। आपको सबसे प्रेम करना है। सबको प्रसन्न करने का प्रयत्न करें।

ईसा को धन्यवाद दें कि उन्होंने अपने आपको सूली पर चढ़ाया। हमारे लिए अपने शरीर का त्याग किया कि हमारा आज्ञा खुल गया है, अन्यथा मैं सहजयोग नहीं कर सकती थी। परन्तु इस स्थान पर (एकादश रूद्र की ओर इशारा करते हुए) हमारे अन्दर बुद्ध, महावीर एवं ईसामसीह हैं और उन्हें तपस्या करनी थी, जो उन्होंने की, तप:। आपको अब नहीं करनी है। उन्होंने आपके लिए कर ली है।

यह अच्छा है, कि ईसामसीह का जन्म दिवस मनाने के लिए यहाँ गुब्बारे हैं और ये सब अहंकार के गुब्बारे जो आपके सिर में हैं, फूटने चाहिए। खत्म होने चाहिए।

ईसामसीह के विषय में अनेक बातें, मैं चाहूँगी कि आपको पता चलें। पर यह कम समय है, जिसमें मैं आप को नहीं बता सकती, किस प्रकार उनकी खुद की प्राथमिकतायें थीं। बाईबल में वे पूर्णतया वर्णित नहीं हैं। मैं कहूँगी कि जो होना चाहिए था, वह कम कर दिया गया है और जिस प्रकार वे ईसाई धर्म का पालन करते हैं वह भी अचरजपूर्ण है। सो हमें ईसाई धर्म को हृदय से सीखना चाहिए और कोई मार्ग नहीं है, उन्हें हृदय से सीखना चाहिए। माँ का हृदय।

क्रिसमस पूजा, १९९८

बहुत समय पूर्व, आज के दिन ईसामसीह पैदा हुए थे। आप सबको उनके जन्म व जो पीड़ायें उन्होंने झेलीं, उसकी कथा पता है। वे ही हैं जिन्होंने हमें एक आदर्श सहजयोगी का नमुना दिया है। वे अपने लिए नहीं पर दूसरों के लिए जिये। आज्ञा चक्र पर कार्य किया।

मैं सोचती हूँ कि ईसा ने सबसे अधिक सहन किया है। जैसा कि आपको ज्ञात है, उनमें श्री गणेश की सब शक्तियाँ थीं, क्योंकि वे श्री गणेश का अवतार हैं। उन सब में सर्वप्रथम उनकी अबोधिता है। वे अनन्त बाल स्वरूप थे और इस संसार की क्रूरता एवं आडम्बर समझ नहीं सकते। यदि आप समझ भी जाएं तो आप इस बारे में क्या कर सकते हैं। बहुत ही हिम्मत के साथ उन्होंने एक ऐसे देश में जन्म लिया, जहाँ लोगों को आध्यात्मिकता का कुछ भी विचार नहीं था।

मैंने उनके विषय में एक पुस्तक* पढ़ी थी जिसमें कहा गया है कि वे काश्मिर आए थे, जहाँ वे मेरे पूर्वज, शालिवाहन को मिले थे।

यह लिखा गया है कि उन्होंने ईसा से पूछा, 'आप भारत में क्यों आए हो?' तो उन्होंने कहा, 'यह मेरा देश है, इसलिये मैं यहाँ आया हूँ। जहाँ लोग

*उल्लेखित पुस्तक है *'Jesus Lived in India: His Unknown Life Before and After the Crucifixion by Holger Kersten'*

आध्यात्मिकता का मान करते हैं। पर मैं ऐसे लोगों के बीच में रहता हूँ जो आध्यात्मिकता को बिल्कुल भी नहीं समझते।' उनका वार्तालाप ईसा के साथ रोचक था, क्योंकि शालिवाहन ने कहा, 'यह तो और भी बड़ा कारण है, जिसके लिए आपको अपने देश वापिस जाना चाहिए और उन्हें निर्मल तत्त्व सिखाईये, वही शुद्धता का सिद्धांत है।' वे वापिस चले गए और उसके साढ़े तीन साल बाद वे सूली पर चढ़ा दिए गए।

उनके सुन्दर जीवन से मैंने देखा है कि हमें सीखना है कि जब तक हम साक्षात्कारी आत्मा नहीं बनते, हम ईसा की आत्मा को सताते रहेंगे। हमने यह होते हुए देखा है। जो लोग ईसामसीह के बारे में बोलते हैं। उन्होंने यह स्पष्टतः कहा है कि, 'आप मुझे क्राईस्ट, क्राईस्ट कह कर पुकारेंगे, पर मैं आपको नहीं पहचानूंगा।' बड़े स्पष्ट रूप से उन्होंने यह कहा है। मुझे पता नहीं क्यों इसे बाईबल में से हटाया नहीं गया। इसका अर्थ है, जो बोलेंगे एवं सिखाएंगे और अपने आप को बड़े आध्यात्मिक दिखाने के लिए वैसे कपड़े पहनेंगे, ईसा के नाम से, वे ऐसे लोगों को नहीं पहचानेंगे। यह इतना साधारण सा है।

अब इस समय जब यह आखिरी जजमैंट है, वे पूरे विश्व को आध्यात्मिकता के आधार पर न्यायित करेंगे, जिसका अर्थ है चैतन्य। उनका न्याय शुरू हो चुका है, मैंने देखा है। आप देख सकते हैं, कितने ही देशों में चीज़ें गायब हो रही हैं। उनका अहंकार, उनकी आक्रमकता, उनकी क्रूरता की ललकार जा रहा है। और जिन्होंने युद्ध में गलत कार्य किए हैं, उन्हें भी ठिकाने लगाया जा रहा है। उनका कोई मतलब नहीं था, लोगों पर आक्रमक होने का और उन्हें सताने का। यह गणेश तत्त्व सहजयोग के द्वारा कार्यान्वित हो रहा है।

ईसा ने वह नहीं कहा पर यह जरूर कहा कि आखिरी न्याय होगा। एक ओर वे बड़े दयालु और करुणामय थे, दूसरी ओर वे वास्तव में श्री गणेश थे। उन्होंने कोड़ा उठाया और उन लोगों को मारा जो मन्दिर के बाहर सामान बेच रहे थे। आप धर्म के नाम पर व्यापार नहीं कर सकते।

क्रिसमस २०००

ईसामसीह के आगमन विषय में मैंने उन्हें बताया है कि वे इस पृथ्वी पर एक बड़े महान उद्देश्य के साथ आए थे। मैं कहूँगी महानतम उद्देश्य - क्योंकि वे इस आज्ञा चक्र को खोलना चाहते थे, जो इतना सँकरा था और इससे पहले नहीं किया जा सका। उसके लिए, उन्हें अपना बलिदान देना पड़ा। उस बलिदान के कारण ही इतना बड़ा आज्ञा खुल सका। वे इसे जानते थे। उन्हें पता था कि यह होने वाला है, उन्हें इस बलिदान को स्वीकार करना पड़ा। वैसे वे दिव्य व्यक्तित्व थें। उन्हें ऐसा करने में कोई समस्या नहीं थी : परन्तु उन्होंने सोचा कि कोई दूसरा मार्ग हो सकता है जिसके द्वारा इस आज्ञा चक्र को खोला जा सके।

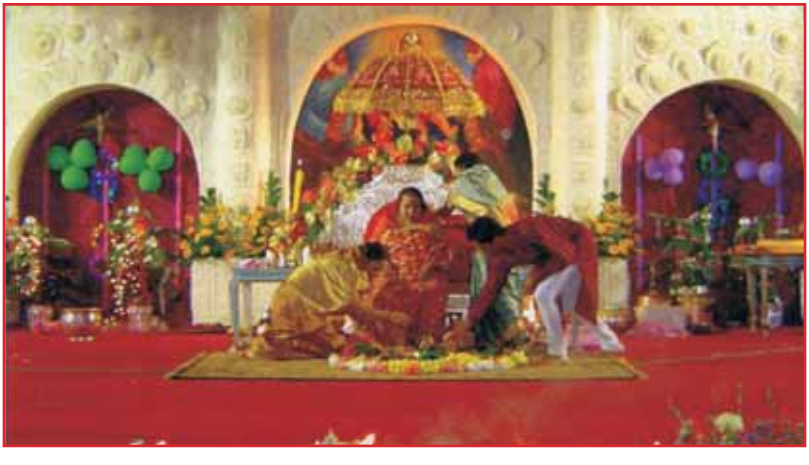

क्रिसमस पूजा, २००३

ईस्टर पूजा प्रवचन के कुछ सारांश

प.पू.श्रीमाताजी द्वारा

ईस्टर पूजा, १९९१, ऑस्ट्रेलिया

आज हम ईसामसीह की पूजा करने के लिए यहाँ हैं, जब वे मृत्यु के पश्चात पुनर्जिवित हुए। उनकी मृत्यु के बारे में कई बातें लिखी गयी हैं। परन्तु वास्तव में वे पुनर्जिवित हुए और वे भारतवर्ष गए और वहाँ अपनी माँ के साथ बस गये। किसी भी पुस्तक में उनके पुनर्जीवन के पश्चात् के जीवन के विषय में नहीं लिखा गया है, पर एक पुराण में शालिवाहन के बारे में लिखा गया है, जिस वंश से मेरा सम्बन्ध है, उसके एक राजा, ईसा को काश्मिर में मिले और पूछा, 'आप का नाम क्या है?' उन्होंने कहा, 'मेरा नाम ईसा है।' उन्होंने फिर यह भी पूछा, 'आप किस देश से आए हैं, कौन से स्थान से?' उन्होंने कहा, 'मैं एक देश से आया हूँ वह मेरे व आपके लिए विदेश है और अब मैं यहाँ अपने देश में आया हूँ।' इस प्रकार उन्होंने भारत की प्रशंसा करी। तब उन्होंने लोगों को आरोग्य दिया। उनकी कब्र वहाँ है व उनकी माँ की कब्र भी वहाँ है।

अब ईसा को देखिये। वे करीब चार ही साल जीये, अर्थात वे उस देश से बाहर थे। जो उद्देश्य उन्हें पूरा करना था, उसे पूरा करने के लिए वे चार साल ही जीये। वे केवल आज्ञा चक्र पर पुनर्जीवन प्राप्त करने के लिए ही वहाँ थे। उस छोटे समय में उन्होंने कितने ही सुन्दर उपाख्यान दिये, कितने लोगों से उन्होंने बातचीत की। पूरा जीवन उन्होंने वैसे ही व्यतीत किया। वे बड़े साधारण तरीके से रहे, उनके पास कोई टैन्ट आदि नहीं थे, सो वे पहाड़ों पर जाते थे और माऊन्ट - आप जानते हैं कि माऊन्ट के उपदेश कितने मशहूर हैं।

वहाँ वे लोगों को एकत्रित करके उनसे बात करते थे। वे उन्हें सुनते थे,

पर किसी ने उसे धारण नहीं किया, जो उन्होंने कहा। उनके केवल बारह शिष्य थे। उन्होंने उन्हें समझा केवल उनकी मृत्यु के बाद। उसके पहले उन्हें समझ नहीं आया कि वे कौन थे? वे वास्तव में, अपने मन में देख नहीं सके कि वे क्या कर रहे हैं? क्या बोल रहे हैं? पर जब उनका पुनर्जीवन हुआ, तब वे सोचने पर विवश हो गये कि, 'वे कौन थे?' और उन्होंने क्या किया? यह कैसे कि हम उनके शिष्य हैं।' और वे साधारण मछुआरे थे, आपको यह अच्छे से ज्ञात है, पर उनकी बुद्धि अचानक ही प्रखर हो गयी। उनकी विलक्षणता उभर आयी और उन्होंने वास्तव में बड़े अच्छे तरीके दिखाये, जिससे हम दूसरा जन्म प्राप्त कर सकते हैं।

ईस्टर पूजा, १९९६, भारत,

आज हम ईस्टर पूजा कर रहे हैं। आज सहजयोगियों के लिए एक बड़ा महत्वपूर्ण दिन है क्योंकि ईसामसीह ने हमें दिखाया है कि पाप से मुक्ति संभव है और उस मुक्ति के लिए हमें सदैव कार्य करना चाहिए। हमें यह भी समझना चाहिए कि वे क्यों सूली पर चढ़ाए गए। वे क्रौस पर चढ़ाए गये और वह क्रौस आज्ञा चक्र पर स्वास्तिक का प्रतीक है। वे सूली पर चढ़ाए गये और उन्होंने अपने शरीर को वहाँ ही छोड़ दिया। उस समय उन्होंने कुछ महत्त्वपूर्ण बातें कहीं और उनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात थी 'बी होल्ड द मदर'।

'बी होल्ड द मदर'

हर कोई इसका अर्थ निकाल सकता है, पर उन्होंने कहा कि वे हमें एक शक्ति भेजेंगे, जिसके तीन मार्ग होंगे-त्रिगुणात्मिका, और वह बड़ी सुन्दरता से बखान किया गया है। एक शक्ति, इनमें से सांत्वना (कम्फर्ट) देगी, यह सांत्वना देने वाली शक्ति हमारे अंदर महाकाली शक्ति है, जो हमें आराम देती है, हमारी बीमारियाँ ठीक करती है। जो हमारे भूतकाल के अनेक प्रश्न सही करती है व खंडित करती है। दूसरी शक्ति जो उन्होंने हमें दी, हमें भेजी, वह थी महासरस्वती, और इस महासरस्वती शक्ति को उन्होंने 'काऊन्सेलर' कहा, जो आपको परामर्श देगी-इसका अर्थ है कि जो हमें योग का आकार दिखाती है। इस दूसरी शक्ति की सहायता से हमें ज्ञान मिलेगा। हमें सूक्ष्म ज्ञान होगा और तीसरी शक्ति महालक्ष्मी, जिसके द्वारा हमें पाप से मुक्ति मिलेगी।

ईस्टर पूजा, १९९९, टर्की

आपको यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि आप हर समय सुरक्षित हैं। मैंने सदा आपसे कहा है कि ईसा आपके पास बड़े भाई के समान हैं, परन्तु आपके पास आपकी माँ हैं, आप के पास गण हैं और सब देवदूत हैं आपके आस-पास।

ईसा के जीवन का यह संदेश है कि जिन लोगों ने उन्हें कष्ट दिया, उन्होंने उन्हें क्षमा कर दिया। उन्होंने यहाँ तक कहा, 'हे परमात्मा, इन्हें क्षमा कर दीजिए, क्योंकि उन्हें पता नहीं है कि वे क्या कर रहे हैं।' यह सब उन्होंने क्रौस पर कहा, जब वे सताये जा रहे थे, अपमानित हो रहे थे। उन्होंने ये शब्द कहे, 'इन्हें क्षमा कर दीजिए। उन पर दया कीजिए। हमदर्दी कीजिए, क्योंकि उन्हें पता नहीं कि वे क्या कर रहे हैं। वे परमात्मा के पुत्र को मार रहे हैं। और उनके साथ क्या होगा?' वे कहाँ जाएंगे? उनकी क्या स्थिति होगी? यह एक बड़ा संदेश हमारे लिए है। यहाँ तक कि 'क्रौस' पर उन्होंने कहा, 'क्षमा, ओ परमात्मा, हे पिता इन्हें क्षमा करें।'

इसी प्रकार हमें भी लोगों को क्षमा करना है। ईसा के जीवन से, यह बड़ा

महत्वपूर्ण है कि हमें लोगों को क्षमा करना है। उनकी क्षमा विश्व के लोगों के समझने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, आप को क्षमा करना चाहिए। यदि आप सीख जायें कि कैसे क्षमा करना चाहिए, तो आप हैरान होंगे कि विश्व के आधे युद्ध खत्म हो जाएंगे।

क्या ईसा ने किसी बात का गर्व किया? कभी नहीं। उन्होंने कभी भी किसी बात की डिंगे नहीं हाँकी। पर जब उन्होंने देखा कि लोग पवित्र स्थानों पर सामान बेच रहे हैं, तो उन्होंने क्या किया? उन्होंने उन्हें हन्टर से मारना शुरू कर दिया क्योंकि वह गलत थे, पूर्णतया गलत, पवित्रता के विरोध में। परन्तु उन्होंने यह नहीं कहा, कि, 'मुझे ये पसन्द नहीं।' नहीं, उन्होंने सिर्फ पवित्र स्थानों में सामान बेचने के प्रति पूर्ण अस्वीकारिता दिखाई। लोग वहाँ पूजा करने जाते हैं। उन्हें वहाँ ऐसा चित्त चाहिए जो पैसे की भौतिकता से दूर हो। जब आप ध्यान में लीन हैं तो पैसे की दुनिया में नहीं होना चाहिए।

ईस्टर पूजा, २००१, टर्की

ईसा के जीवन से यह समझ लेना चाहिए कि वे अत्यन्त सीधे, गरीब, एक बढ़ई के पुत्र थे। उनके लिए पैसा और कुछ नहीं, बल्कि पूर्णतया निरर्थक था। उनके लिए आत्मा ही सब कुछ थी। वे लोगों को सिखाते थे कि, 'आपको आध्यात्मिक जागृति पानी चाहिए। अत्यन्त महत्वपूर्ण। समझने की कोशिश करिए, कि इस सब के ऊपर भी एक जीवन है और तब आप इस जीवन का सर्वोत्तम लाभ उठा सकें, जो आप व्यर्थ कर रहे हैं। वे अत्यन्त बुद्धिमान थे और जिस प्रकार वे चर्च के फादर लोगों के साथ धर्म के विषय में वाद-विवाद करते थे, यह हैरानगी की बात है कि कैसे एक छोटा बच्चा धर्म के बारे में गम्भीरता से समझ सकता है।

नि:सन्देह, उस समय वे एक छोटा बच्चा थे। पर वे दिव्यता से आये थे। दिव्यता द्वारा बनाए गये थे। वे श्री गणेश थे। वे ॐ हैं, वे ज्ञान हैं, सब कुछ।

ईसा के बारे में और उन सब महान लोगों के अन्दर बहुत बड़ी बात थी कि वे प्रेम करते थे। वे सब मनुष्यों से प्रेम करते थे। यह हमें भी करना है।

हमें ईसा ने यह सिखाया है, उनमें सब मनुष्यों के प्रति प्रेम था और वे उन्हें पुनर्जन्म के लिए तैयार करना चाहते थे। वे सहजयोग के आने के पहले आये। यदि उन्होंने वह कार्य नहीं किया होता तो मेरे लिए इसे प्राप्त करना कठिन होता। सो उन्होंने सहजयोग के लिए मचान तैयार किया।

ईसा के जीवन को देखें, उन्होंने किसी से झगड़ा नहीं किया। किसी से बहस नहीं की और उन्होंने स्वीकार किया, क्रौस पर मृत्यू स्वीकार की। उन्होंने इसलिये स्वीकार किया क्योंकि वे जानते थे कि यह पुनर्जन्म के लिए है, केवल उनके ही लिए नहीं परन्तु पूरे विश्व के पुनर्जन्म के लिए।

ईसा का जीवन बहुत छोटा था, केवल तैतीस साल का, कितनी छोटी आयु। वे सब समय घूमते रहते थे। वे भारत गये और उन्होंने कितना कार्य किया। कितने ही स्थान व संस्थायें उनके नाम पर रखे गये।

ईस्टर पूजा, २००२, टर्की

आज हम यहाँ ईसामसीह और उनकी माता की पूजा करने हेतु आए हैं। यह एक ऐसी अनुरूपता है कि ईसा की माँ ने आ कर टर्की में निवास किया। क्या यह हैरानगी की बात नहीं है कि वे ईसा के सूली पर चढ़ने के पश्चात् यहाँ आयीं और निवास किया। मैं सोचती हूँ कि अगर वे भी उनके साथ आए तो उसके बाद? पर कहा जाता है कि वे काश्मीर गये और उनकी माँ भी उनके साथ थीं।

इस्तंबूल में हुई ईस्टर पूजा

दूसरे प्रवचनों के सार

प.पू.श्रीमाताजी द्वारा
प्रभु ईसा व माता मेरी के विषय में

हृदय चक्र पर कथन, १९७७, भारत

मैं यह कह रही हूँ कि इन तीनों शक्तियों में तीन ध्वनियाँ हैं और इस प्रकार यह शब्द 'ॐ' बना है। साक्षात्कारी आत्मा के लिए 'ॐ' बहुत शक्तिशाली शब्द है। उदाहरणतया, यदि आप स्वयं को सुरक्षित करना चाहते हैं, तो ॐ शब्द ही सुरक्षा कर सकता है और जब ये तीन शक्तियाँ आपस में जुड़ जाती हैं, ॐ के रूप में, तो हम कह सकते हैं कि ये केवल बच्चा या ईश्वर के पुत्र अपने शुद्धतम स्वरूप में ॐ का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसीलिये ईसा के जीवन में या हम कह सकते हैं कि ऐसे व्यक्तित्व के जीवन काल में जो ईश्वर के पुत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। ॐ बड़ा महत्वपूर्ण है, क्योंकि ॐ स्वयं उनके भीतर है। ये तीनों शक्तियाँ उनके अन्दर हैं और सर्वोच्च अबोध रूप में हैं।

मैं यह कहने का प्रयत्न कर रही हूँ, कि आप किसी अन्य देवी-देवता को इनके अतिरिक्त लें। आप जानेंगे कि उन में दूसरी प्रकार की शक्तियाँ हैं। उदाहरणतया यदि आप श्री विष्णु को लें, जो उत्क्रान्ति के द्योतक हैं। यदि आप ब्रह्मदेव जी को लें, वे रचना करते हैं। यदि आप महेश को लें, तो वे प्रतिअहंकार को देखते हैं। यहाँ तक कि यदि आप श्रीकृष्ण को लें, वे उत्थान को देखते हैं। पर जब आप यहाँ ऊपर उठते हैं तो आप पाते हैं कि ये तीनों शक्तियाँ यहाँ आज्ञा पर जुड़ जाती है। आज्ञा से पूर्व वे पृथक हैं, आज्ञा पर वे जुड़ जाते हैं।

इसलिये, यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि ये तीनों शक्तियाँ ईसा द्वारा नियंत्रित होती हैं, इसलिये ईसा मसीह बड़े महत्वपूर्ण प्रभु हैं, सहजयोगियों के लिए,

क्योंकि उत्थान तो ठीक है, पर सम्पूर्ण ताल-मेल व सुरक्षा तभी संभव है यदि ये तीनों शक्तियाँ आपके हाथ में हैं।

पब्लिक प्रोग्राम, १९८२, इंग्लैंड

हम ईसा को जानने में चूक सकते हैं, क्योंकि वे बढ़ई के पुत्र थे। हम कैसे जानें कि ईसा कौन थे? क्या कोई तरीका है यह जानने का कि ईसा कौन हैं? बहुत लोग कह रहे हैं, 'ईसा आने वाले हैं। वे टैलिविजन पर आने वाले हैं।' आप वहाँ किसी को भी ईसा के रूप में खड़ा कर सकते हैं। हम कैसे पहचानेंगे? उनके कपड़ों से या किसी और चीज़ से, जो उन्होंने की है। अधिकतर ईसा के चित्र व ईसा की मूर्तियाँ जो मैंने देखी हैं, वे बिल्कुल भी उनसे मेल नहीं खाती। वे भयंकर हैं। मुझे नहीं पता वे क्या है? तो आप कैसे जानेंगे कि वे ईसा हैं या नहीं? क्या यह कोई फालतू इन्सान है या कोई व्यक्ति है जो जानबूझ कर हमें वास्तविकता से दूर ले जाने के लिए आया है। सत्य जानने का कोई भी तरीका नहीं है, क्योंकि हमें भौतिक आकृतियों की इतनी आदत हो गयी है, उदाहरण के लिये हमारे कला से सम्बन्धित विचार भी बदल गये हैं।

यदि एक बीज़ चमत्कारी है, तो ये फूल, एक प्रकार के फूल उसी प्रकार के पेड़ पर होते हैं और दूसरे पेड़ पर नहीं। यह कैसे होता है? उन्हें कौन चुनता है? कौन उन्हें सही आकार देता है? उस सबकी कौन व्यवस्था करता है? यह हम सब को समझना चाहिए कि परमात्मा की सर्वव्यापी परम चैतन्य शक्ति ही सब जीवित कार्य करती है और जब आप आत्मा हो जाते हैं, तब यह शक्ति आपमें से बहने लगती है। आप अपने में से इस शक्ति का अनुभव करते हैं। जैसे कि जब ईसा मसीह को छुआ गया तो उन्होंने कहा कि किसी में कोई शक्ति चली गई है। आप उस बहती हुई शक्ति के माध्यम बन जाते हैं, पर आपमें वह शक्ति आ जाती है कि आप उसे चला सकें। उसकी व्यवस्था कर सके, समझ सके। आपको इस बारे में पूर्णतया ज्ञात है। आपको मालूम है, इसे कैसे देना है।

श्री सरस्वती पूजा, १९८३, भारत

यदि आज्ञा के स्तर पर सूर्य चक्र ईसामसीह के अधिकृत है, तो यह और भी आवश्यक है कि जीवन की शुद्धता, जिसे 'नीति' कहते हैं, वह जीवन का सदाचार है।

आज्ञा चक्र पर बातचीत, १९८३, भारत

यह आज्ञा चक्र दरवाज़ा है, स्वर्ग जाने का दरवाज़ा है और प्रत्येक व्यक्ति को इसे पार करना है। इस चक्र पर हमारे महान अवतरण प्रभु ईसा मसीह निवास करते हैं। हमारे भारतीय शास्त्रों में उन्हें राधा जी के पुत्र महाविष्णु कहते हैं। उनके तत्त्व ग्यारह रूद्रों से बने हैं। अर्थात् ग्यारह विनाशकारी शक्तियाँ, परन्तु मुख्य तत्त्व श्री गणेश का है, अर्थात् अबोधिता। सो वे अबोधिता के स्वरूप हैं। अबोधिता का अर्थ है, सम्पूर्ण शुद्धता। उनका शरीर पृथ्वी माँ से नहीं बना था। अर्थात् उनका ऐसा शरीर ही नहीं था जो नष्ट होता है। ये ओम्कार हैं। सो जब वे मृत्यु को प्राप्त हुए, वे ऊपर उठ गए। यह सत्य है, वे ऊपर उठे क्योंकि वे ओमकार से बने थे। चूंकि वे राधाजी के पुत्र हैं। आप उनमें व दूसरे देवताओं में सम्बन्ध आसानी से देख सकते हैं। देवी भागवत में महाविष्णु के विषय में लिखा है।

पर देवी भागवत कौन पढ़ता है? किसी के पास इन पुस्तकों को पढ़ने का समय नहीं है। अधिकतर जो कचरे के समान पुस्तकें वे पढ़ते हैं। उनमें आप सब अवतरण जो पृथ्वी पर आए हैं, उनके विषय में नहीं पढ़ सकते। सो ईसा मसीह को समझने के लिए आपको देवी भागवत पढ़ना चाहिए।

क्योंकि ईसा को देवी भागवत में स्पष्टत: वर्णित किया गया है और हम कुण्डलिनी में इसे सिद्ध कर सकते हैं, कि जब कुण्डलिनी उठती है और आज्ञा चक्र पर रुकती है, तो आपको 'लॉर्डस् प्रेयर' कहनी पड़ती है। अन्यथा यह नहीं खुलता। ईसा मसीह को जागृत करने के लिए यदि आप ऐसा नहीं

करेंगे तो वह नहीं खुलेगा। इससे सिद्ध होता है कि इस पर ईसा का राज्य है या आप महाविष्णु का नाम लें, तो यह खुल जाता है। सो महाविष्णु और ईसा मसीह एक ही हैं। आपको इसका सबूत देखना चाहिए। केवल आप यह विश्वास करना चाहते हैं कि ईसा ही आपके अपने हैं बाकि सब मूर्तिपूजक हैं, तो आप गलत हैं। आप पूर्णतया दुर्भाग्यवश गलत हैं।

यदि मैं आपसे कहूँ कि राधाजी ने ईसा को बनाया है और यदि आप ईसा को देखें, उनकी उंगलियाँ इस प्रकार हैं। समझने की कोशिश करें। दो उंगलियाँ इस प्रकार एक कृष्ण की व एक विष्णु की। और वे कहते हैं, 'पिता'। तब ईसा के पिता कौन हैं? वे श्री विष्णु हैं। श्री कृष्ण हैं। क्योंकि महाविष्णु के वर्णन में, श्री कृष्ण ने स्वयं अपने पुत्र की पूजा करी और कहा, 'आप ब्रह्माण्ड के आधार होंगे, और जो भी मेरी पूजा करेगा, उसका फल आपको मिलेगा।' और उन्होंने उन्हें अपने से भी ऊपर के स्थान पर बिठाया। वह आप देख सकते हैं कि विशुद्धि चक्र से ऊपर महाविष्णु स्थित हैं। और वे ही दरवाज़ा हैं जिसमें से प्रत्येक को जाना है। श्री कृष्ण ने वास्तव में उनको आशीर्वाद दिया और कहा, 'आप ब्रह्माण्ड के आधार होंगे।' देखिए, आपको पता है, कि श्री गणेश मूलाधार में रहते हैं। मूलाधार चक्र का अर्थ है, मूल का आधार। जड़ों का आधार। परन्तु ईसा का स्थान फल के आधार पर है। सो वही बात प्रकट होती है कि आपको ईसा की जानकारी तभी होती है जब आपका आज्ञा चक्र खुलता है।

वास्तव में यही होता है जब ईसा आपमें जागृत होते हैं, वे आपके कर्मों को खींच लेते हैं। वे आप का अहंकार एवं प्रति अहंकार खींच लेते हैं। वे आपके कर्म, आपके पाप आपके बंधन (कर्मकाण्ड) खींच लेते हैं और इसी के कारण आप स्वतंत्र हो जाते हैं। यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है जो लोगों को ज्ञात होनी चाहिए कि, यह बड़ा महान कार्य उन्होंने किया कि इन दो चीज़ों को खींचने के लिए स्वयं को आज्ञा चक्र पर स्थापित किया। जब वे इन दोनों

को खींच लेते हैं तब हम अपने कर्मों से व पापों से ऊपर उठते हैं। तब हमें पापों आदि के बारे में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

यदि लोगों ने देवी भागवत पढ़ी होती और कहा होता कि महाविष्णु पैदा हुए हैं, तो लोग इस विचार को छोड़ देते, कि उन्हें कर्मों के कारण सहना होता है। भारतीय लोग अभी भी यही सोचते हैं कि हमें अपने कर्मों को भोगना है। हमें उपवास करना है। चलना है और अपने आपको किसी पास वाले पेड़ के साथ लटकाना है, सारे समय। इस की आवश्यकता नहीं है। आपको क्या करना है कि प्रतीक्षा करनी है कि कब आज्ञा चक्र खुले। हमें सन्तुलन में रहना है।

यहाँ तक की ईसा ने भी कहा, 'मैं ही प्रकाश हूँ। मैं ही मार्ग हूँ।' क्योंकि वे ओमकार हैं। वे ही मार्ग हैं। और वे ही द्वार हैं। वे ही दरवाज़ा हैं। और सबको उनके द्वार से हो कर जाना होगा। उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला। परन्तु उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया। उन्होंने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया क्योंकि ईसा ज़्यादा कुछ कह नहीं सके और जो कुछ भी उन्होंने कहा, वह उनके शिष्यों को जैसा समझ आया वैसा लिखा गया। ईसा को समझने के लिए आपको अपना साक्षात्कार पाना जरूरी है।

मैं प्रकाश हूँ।
(मिरॅकल फोटो)

दिवाली पूजा, १९८३, लन्दन, यू.के.

यह वर्णन नहीं किया जा सकता है कि उन्होंने कैसे अपनी माँ की देखभाल की, यह असंभव है। उनका प्रेम, उनकी विनम्रता, उनकी देखरेख,

उनका समर्पण, उनकी श्रद्धा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। आपको पता है कि वे श्री गणेश जी के विकसित रूप में आए और पीछे वे श्री गणेश हैं, सामने वे श्री कार्तिकेय हैं, बड़े शक्तिशाली ग्यारह रूद्र और इस कारण उनका बड़ा ऊँचा स्थान है।

मैडरिड पूजा, १९८६

प्रारम्भिक, ईसाई, मेरी की मूर्ति की पूजा करते थे और काँच की खिड़कियों की, जिन पर ईसा की माता का प्रतिबिम्ब था। बाद में लोग अधिक तर्क-संगत हो गये और पूजा का महत्व नहीं समझ पाये क्योंकि वे इसे समझा नहीं सके और उन्होंने नियमित पूजा को छोड़ दिया। उसकी प्रशंसा छोड़ दी। ईसा के पूर्व, वे एक तंबू को विशेषतया पूजा के लिए बनाते थे जिनमें एकदम सही नाप होते थे, उन्हें पवित्र स्थानों पर रखा जाता था, 'जिहोवा' की पूजा के लिए। सहजयोग में जिहोवा का अर्थ श्री सदाशिव है और मेरी माता, महालक्ष्मी हैं। वे इस समय से पूर्व श्री सीता और श्री राधा के रूप में अवतरित हुई थीं और फिर मेरी माता के रूप में।

देवी महात्म्यम में ईसा के जन्म के विषय में लिखा गया है, जो राधा के पुत्र थे और राधा ही महालक्ष्मी थीं। वे एक दूसरे देश में पैदा हुए थे और एक अण्डे के भीतर, जिसके आधे भाग से श्री गणेश जी अवतरित हुए और दूसरा आधार भाग महाविष्णु बना जो कि हमारे ईसा मसीह हैं। सो, ईसा मसीह और महाविष्णु एक ही हैं। जब श्री महालक्ष्मी इस पृथ्वी पर आयीं वे अपने साथ निष्कलंक गर्भधारण द्वारा अपना बच्चा लाईं, जो उन्होंने पहले भी राधा के रूप में किया था। ईसा मसीह एक महान व्यक्तित्व के विराट के पुत्र हैं। विष्णु, विष्णु तत्व (विराट के आधार) थे। सो, महाविष्णु विराट बने, जिन्हें अकबर भी कहते हैं (सबसे महान व्यक्ति)

अपने उत्थान में, ईसा मसीह पृथ्वी से ऊपर उठे और अन्य तत्वों से

और ओमकार बने जो चैतन्य का स्रोत और आधार हैं। अन्य समस्त देवताओं के अवतरणों को अपने तत्वों को पृथ्वी माँ में से लेना था। जब उनके शरीर बनाये गये। इस सिद्धांन्त के ईसा मसीह अपवाद थे। उनका शरीर जो कि असीम या ओमकार है। वे श्री गणेश के अवतरण थे। श्री गणेश में पृथ्वी तत्व था क्योंकि वे रचना से पूर्व पृथ्वी माँ से बनाये गये थे।

ईसा मसीह श्री गणेश के अवतरण की शक्ति हैं, और इसी कारण वे पानी के ऊपर चल सके (क्योंकि वे तत्वों से ऊपर हैं)। वे दिव्यता की विशुद्ध आकृति हैं क्योंकि वे चैतन्य की अभिव्यक्ति हैं। जब आप मेरी पूजा करते हैं और क्योंकि मैं यहाँ साकार हूँ। इसमें किसी प्रकार का असत्य नहीं है।

ईसा के जीवन काल में यदि उनकी पूजा की गई होती, तो तब वे उनकी माँ, मेरी माता की भी पूजा करते। श्री मोज़िस को जो आदेश दिये गये थे, उनमें लिखा गया है, 'जो कुछ भी स्वर्ग द्वारा या पृथ्वी द्वारा बनाया गया है, उसे दुबारा नहीं बनाना चाहिए और उनकी पूजा नहीं करनी चाहिए।' (मेरे सामने आपको झूठी मूर्तियाँ नहीं रखनी है।) अवतरण स्वर्ग द्वारा बनाये जाते हैं। यह केवल आधुनिक समय है, जिसमें अवतरणों की फोटो खींची जा सकती है। पूर्व समय में यह असंभव था। जो कुछ भी पृथ्वी माँ द्वारा रचित हुआ है और पृथ्वी माँ से बाहर निकला है वे स्वयंभू हैं। स्वयंभू (वे प्रकृति में परमात्मा के प्रतीक हैं) मनुष्यों द्वारा नहीं बनाये गये हैं। सब स्थानों में कुछ साक्षात्कारी लोगों ने भी सुन्दर पुतले बनाये हैं।

मैं पुर्तगाल गयी थी, जहाँ वे 'लेडी ऑफ द रौक्स' का त्यौहार मनाते हैं, वहाँ मेरी माता की एक छोटी सी पाँच इंच ऊँची मूर्ति देखने जाते हैं, उनका चेहरा एकदम मेरे जैसा है।

कहा जाता है कि इसे दो बच्चों ने ढूंढा था, जो एक खरगोश को ढूंढते हुए वहाँ पहुँचे और यह एक आले में छुपी थी। बच्चों ने देखा कि उस आले में से प्रकाश आ रहा था और उन्होंने पाया कि इस प्रकाश का स्रोत यह मूर्ति थी, जो एक पहाड़ी के नीचे छुपी थी और उन्होंने उसे बाहर निकाला। वे उस प्रकाश में चले और बहुत सारे लोग वहाँ एकत्रित हो गये, और आले से बाहर निकाली गयी मूर्ति को देखकर चकित हा गये।

वे अब वहाँ उस मूर्ति की पूजा करते हैं। उसमें से चैतन्य निकलता हैं, पर इतना नहीं, जितना मैं आपको देती हूँ।

श्री महालक्ष्मी पूजा, ८ सितम्बर १९९३, बुलगारिया

आज एक बहुत बड़ा दिन है, जब हम महालक्ष्मी की पूजा कर रहे हैं। आपको पता होगा, कि आज मेरी माता का दिन है, ईसामसीह की माँ, जो महालक्ष्मी थीं।

श्री कृष्ण पूजा, १९९३, यमुनानगर, भारत

श्री कृष्ण की माँ भी थीं, यशोदा और राधाजी महालक्ष्मी थीं। मदर मेरी ने श्री गणेश को जन्म दिया, जो ईसा मसीह थे। भारत में निष्कलंक गर्भधारण को कोई भी संदेह नहीं करेगा, पर बाकियों के लिए निष्कलंक गर्भधारण को विश्वास करना कठिन है या वे सब तर्क कर रहे हैं व हर प्रकार की निरर्थक बातें कर रहे हैं। गणेश वैसे ही बनाये गये थे और ईसा भी वैसे ही बनाये जा सकते थे। आज्ञा।

राधाजी मदर मेरी थीं और यदि आप देवी माहात्म्य पढ़े तो उसमें यह स्पष्टत: लिखा है कि ईसा कौन थे, कि वे आधार थे। वह विश्व का प्रकाश है। वे ब्रह्माण्ड का आधार थे। ये सब आपस में सम्बन्धित थे, पर हम मूर्खता से झगड़ा करते हैं, क्योंकि हमें वास्तविकता का ज्ञान नहीं है। सो, राधाजी उन्हें यशोदा नाम देना चाहती थीं, इसलिये उन्होंने उन्हें जेसू बुलाया। हिब्रू भाषा में यह जेसू है व भारत में यशोदा को जशोदा कहते हैं। अनेक लोग जेसू कहते हैं। इस प्रकार वे जीज़स बने। जो मैं कह रही हूँ उसे आप अपने चैतन्य से जान सकते हैं।

पब्लिक प्रोग्राम, जिनेवा, स्विटज़रलैण्ड, १९८८

हाल ही में, ईसा के एक शिष्य सेंट थौमस का लेख पाया गया है, जो भारत जा रहे थे। उन्होंने बहुत सुन्दर वर्णन किया है कि एक संत को कैसा होना चाहिए और ईसा हमें कैसा बनाना चाहते थे। यह सब एक बड़ी मोटी पुस्तक में है व एक मर्तबान में, मिस्र (इजिप्त) में रखी गई थी। यह पुस्तक केवल अड़तालीस साल पहले पायी गयी और एक बड़े ही अच्छे पुरुष के द्वारा स्पष्टत: वर्णित की गयी है। पुस्तक का नाम 'ग्नौस्टिक' है। 'ग्न' का संस्कृत भाषा में अर्थ है ज्ञात होना। अपने 'सैन्ट्रल नर्वस सिस्टम' पर ज्ञात होना, मानसिक ज्ञान नहीं है। पुस्तकें पढ़कर आप आत्मसाक्षात्कारी नहीं बन सकते। यह मानसिक उपलब्धि नहीं है। एकदम यही सेंट थॉमस ने लिखा है कि यह मानसिक उपज नहीं है। यह हमारे अन्दर घटित होना चाहिए, जिसके द्वारा हम स्वयं को जानते हैं और हमें अपना बाप्तिस्मा प्राप्त होता है। वे हर प्रकार के कष्ट सहने के सिद्धान्त के विरोध में हैं। वे कहते हैं, कि ईसा ने हमारे लिए कष्ट सह लिया है। हमें केवल अपने अन्दर ईसा को जागृत करना है। परम पिता परमेश्वर एक पिता हैं। जो करुणा से भरे हैं और अपने बच्चों के लिए प्रेम से भरपूर हैं। वे आपको क्यों कष्ट देंगे ?

यह तर्क संगत है कि आप को समझना चाहिए कि यदि ईसा ने हमारे लिए सहा है, तो क्या हम ईसा से अधिक सहने वाले हैं? क्या उन्होंने कोई ऐसा कार्य छोड़ा है कि हमें और अधिक कष्ट सहना है। उन्होंने कष्ट सहा क्योंकि मनुष्यों की जागृकता में समस्या थी। लोग कर्मकाण्डों में गुम गये थे और दर्शन शास्त्र के तर्क वितर्क में फँसे थे। सो, उनका संदेश पुनर्जन्म था। यदि आप सिस्टीन चैपल वैटिकन की देखें तो उसमें यह स्पष्टत: दिखाया गया है। वहाँ आप देखते हैं एक बहुत बड़े ईसा बैठे हैं और लोगों को न्यायित कर रहे हैं व पुनर्जन्म दे रहे हैं। सो, अब समय आ गया है हम सबके लिए, कि हम परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करें। अब वह विकसित होने का समय आ गया है, कि बहुतों को फल बनना है।

श्री विष्णु पूजा, १९९४, फ्रान्स

हमें यह समझना है कि धर्म का आधार क्या है। आपको शायद ज्ञात होगा कि भौतिक पदार्थ में आठ वेलैन्सी होती हैं, वे हैं नकारात्मक, सकारात्मक व उदासीन। परन्तु मनुष्यों में दस वेलैन्सीज होती हैं और ये दस वेलैन्सीज श्री विष्णु द्वारा हमारे अन्दर बनाई गयी है। वे श्री विष्णु द्वारा संरक्षित है, देखरेख में हैं, और पोषित हैं। जब भी वे देखते हैं कि मनुष्य अपने धर्म से नीचे गिर रहे हैं, वे इस पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। अन्तिम स्तर विराट है। उस स्तर पर विष्णु सिद्धान्त दो में विभाजित हो जाता है। एक विराट को जाता है व दूसरा विराटांगना को। परन्तु तीसरा सिद्धान्त, जिसे महाविष्णु कहते हैं, वे ईसामसीह के रूप में अवतरित हुए। ये तीनों सिद्धान्त इस समय, सहस्रार में मुख्यत: कार्यान्वित होते हैं।

श्री हनुमान पूजा, १९९९

ईसाई लोग कहते हैं कि ईसा मसीह ने एक शादी में पीने के लिए 'वाईन' बनायी। वह झूठ है। जब वे ईसा मसीह के विषय में बात करते हैं तो वे पूर्णतया गलत हैं। हिब्रू भाषा में मैंने पढ़ा है कि वे जो पीते हैं, वह अंगूरों का रस होता है। ईसा मसीह ने अपनी उंगली पानी में डाली और वह अंगूरों के रस में बदल गया।

श्री गणेश पूजा, १९९९

जैसा कि मैंने आपसे कहा श्री गणेश ने ईसा मसीह के रूप में अवतरण लिया। और ईसा भी बड़े अबोध व्यक्ति थे। यदि वे अबोध न होते तो सूली पर न चढ़ाए जाते, पर वे चालबाज़ नहीं थे व दूसरें की चालबाज़ी न देख सके। उनके खुद के शिष्य ने उन्हें धोका दिया और उन्हें पता था कि वह कौन था। उन्होंने बिल्कुल नहीं कहा कि कौन था। यदि आप उनका जीवन काल देखें तो यह सुन्दर अबोधिता से भरा था, इतना सीधे हृदय का व्यक्तित्व इतना सुन्दर व्यक्तित्व और जहाँ भी वे देखते थे कि कुछ गलत है, तो वे पूर्णतया उसमें जूझ जाते थे। श्री गणेश भी इसी समान हैं।

लेख के सारांश

प.पू.श्रीमाताजी द्वारा

दिव्य अवतरण

आदिशक्ति का मनुष्य रूप में चौथा अवतरण था, कुमारी मेरी, ईसा की माँ। वे मध्य पूर्वी राज्य, जूड़ा में अवतरित हुईं। उस जन्म में उन्होंने विवाह नहीं किया और राधा के समान नहीं रहीं, जो अपने पुत्र महाविष्णु को पृथ्वी पर सबके समक्ष नहीं लाई, जब कि उन्होंने वैकुंठ में उसे विराट के शरीर में बनाया था। कुमारी मेरी ने ईसा मसीह को कुमारी के रूप में गर्भ में धारण किया, जो कि आदिविष्णु के नौवें अवतरण थे। इस अवतरण की महानता को पूर्ण रूप से शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता, परन्तु देवी भागवत में ईसा के विषय में लिखा गया है। इसमें बताया गया है कि वे कैसे महाविष्णु स्वरूप में श्री राधा द्वारा स्वर्ग में उत्पन्न हुए, विराट के एक मात्र पुत्र। वे और कोई नहीं बल्कि श्री गणेश थे। अनन्त बालक के प्रतीक। उनका शरीर श्री कार्तिकेय के शरीर से बनाया गया था, श्री गणेश के एक मात्र भाई। यह शरीर ब्रह्मा ने स्वयं बनाया। श्री कृष्ण के सोलहवे भाग द्वारा धारण किया गया, विराट, जो उनके पिता थे। महाविष्णु के रूप में वे पूरे विश्व के आश्रय थे। एक पिता सदैव चाहते हैं कि उनका पुत्र उनसे भी महान हो, सो श्रीकृष्ण ने उन्हें वरदान दिया जिसके द्वारा उन्हें महाविष्णु बनाया, स्वयं से हज़ारों गुना अधिक महान और उन्हें अपने से भी उच्च स्थान देने का वादा किया। उनके भीतर अनगिनत ब्रह्मा, विष्णु, महेश होंगे और उनके माथे से एकादश रुद्र बनेंगे।

मेरी के अवतरण में राधा अपने पुत्र को कृष्ण का नाम देना चाहती थीं। कृष्ण का तात्पर्य है, कृषि+ना। कृषि का अर्थ है खेती, ना का अर्थ है, जो उसे

करता है। सो, क्राईस्ट नाम कृष्णा के कृषि शब्द से आया। जीज़स नाम जसोदा से आया, जो यशोदा का ही भाग है, श्री कृष्ण की पालक माँ। राधा भी अपने पुत्र को यशोदा का नाम देना चाहती थीं, वृन्दावन व गोकुल में उनके समर्पण व पूजा के कारण। यशोदा का संक्षिप्त रूप था जेसू या येशू, सो राधा। मेरी के बेटे का नाम जीज़स क्राईस्ट।

ईसा मसीह के जीवन में आध्यात्मिक अबोधिता के सार की उच्चतम अभिव्यक्ति है कि परमात्मा का पुत्र पृथ्वी पर आया। परमात्मा (विराट) के एकमात्र पुत्र और अत्यन्त प्रिय पुत्र का बलिदान जो मनुष्यता के लिए था, उसके मनुष्य साक्षी थे। इससे परमात्मा के मनुष्यों के प्रति महान प्रेम का लोगों को बोध हुआ। ईसा का सूली पर चढ़ना उस समय घटित हुआ जब लोगों को पिता परमेश्वर का तो पता था, परन्तु यह नहीं पता था कि आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति के लिए मनुष्य को कैसे सूली पर चढ़ाया जा सकता है। यह ईसा के पुनर्जन्म का वास्तविक अर्थ है, आत्मा जो अमर है, उसे कभी कष्ट नहीं होते और कभी नष्ट नहीं होती, इसको मनुष्यों ने साक्षी रूप में देखा। पहली बार मनुष्यों की चेतना में आत्मा के अमर होने का सत्य स्थापित हुआ, जो कि श्री कृष्ण ने अपने जीवन काल में सिखाया और यह कवी व्यास द्वारा रचित भगवद् गीता में लिखा हुआ है।

जब कोई श्रीकृष्ण का नाम लेता है तो उसे पहले राधाजी का नाम लेना होता है। इसलिये साधक विराट के लिए राधा-कृष्ण का मंत्र लेता है। इसी प्रकार जब रामजी का नाम लेना होता है तो पहले सीताजी का नाम लिया जाता है और सीता-राम का मंत्र होता है। यहाँ तक कि कन्या मेरी, जो अत्यन्त शान्त व शक्तिशाली थी। ईसा के समय वे ईसा के शिष्यों द्वारा ईसा के पीछे की शक्ति के रूप में पहचानी गयीं। प्रारम्भिक ईसाईयों द्वारा वे मृत्यु के बाद अनेक वर्षों तक पूजी गयी थी। आधुनिक समय में जो मनुष्य शैतानी व्यक्तित्व के हैं, वे आदि माँ की पवित्रता और पवित्र जन्म के प्रति आपत्ति कर

रहे हैं। मेरी ने स्पष्टत: दिखाया है एक माँ की पवित्रता की शक्ति, जो अत्यन्त उच्चतम स्तर पर ऊपर उठ सकती है और वह इच्छा मात्र से गर्भधारण कर सकती है। वे उत्थान के ऐसे उच्च स्थान पर पहुँच गयी थीं कि वे अपनी दिव्य इच्छा शक्ति से निष्कलंक गर्भधारण कर सकती थीं। हिन्दू पौराणिक शास्त्रों में भी ऐसे कई दृष्टान्त हैं, कुंती ने मंत्रों के द्वारा पाण्डवों और कर्ण को निष्कलंक तरीके से जन्म दिया।

राधा ने अपने एक मात्र पुत्र महाविष्णु को वैकुंठ में निर्माण किया, पर राधा के रूप में वे बच्चे का गर्भ धारण नहीं कर सकती थीं। क्योंकि वे अविवाहित थीं। मेरी के रूप में उन्होंने अपने बच्चे का गर्भधारण पूर्ण पवित्रता में किया (विवाह के बाहर)। यह पवित्रता की शक्ति है, जो निष्पाप, निष्कलंक गर्भधारण को अभिव्यक्त करता है। मेरी के जीवन काल में पवित्रता की शक्ति से सम्बन्धित सामाजिक चेतना में उच्चतम प्रगति हुई और समाज में एक और उत्क्रान्ति हो गई। कुमारी होते हुए भी, ईसा के जन्म द्वारा वे इतने उच्चतम स्तर पर आदरणीय हुई कि जनता ने उन्हें भगवान की माँ माना, न केवल तब परन्तु आज भी।

सहजयोग का गहराई से समझने से, पाठक को निष्कलंक गर्भधारण की सहजता समझ आएगी। मेरी ने सिद्ध किया कि वे आदि माँ हैं, अपने पवित्र हृदय में बच्चे को धारण कर के (आदि हृदय चक्र)। पवित्र हृदय वह स्थान है, जहाँ ब्रह्माण्ड की माँ जगदम्बा निवास करती हैं। जिस प्रकार उन्होंने ब्रह्माण्ड को धारण किया, उसी प्रकार उन्होंने ईसा मसीह को धारण किया और उसे आदि सुषुम्ना नाड़ी द्वारा आदि स्वाधिष्ठान चक्र में गतिशील किया जो आदि कुम्भ को नियंत्रित करता है, ताकि ईसा को बच्चे के रूप में मनुष्य जन्म दे। उस दिव्य स्वर्गीय रचना में निष्कलंक गर्भधारण ने अण्डा (जाईगोट) का आकार लिया। यह उस स्थिति में अनेक कल्पों तक रहा, जब तक कि आदिशक्ति ने मेरी के रूप में जन्म लिया। तब उन्होंने इसे ईसा मसीह के रूप में अभिव्यक्त किया।

आदिशक्ति के लिए ऐसा करना कठिन नहीं था। दुर्भाग्यवश उनकी शक्तियों की महानता उनके पृथ्वी से जाने के बाद ही पहचानी गईं।

सहजयोग में साधक का पुन:जन्म इसी प्रकार होता है। आदिशक्ति सब साधकों को दूसरा जन्म देना चाहती हैं। वे अपने हृदय में साधक के सूक्ष्म शरीर को धारण करती हैं। उनका चित्त साधक के सूक्ष्म शरीर में कुण्डलिनी को उठाती हैं। वे उसकी जीवात्मा को आशीर्वादित करती हैं, जो उनके हृदय तक ऊपर उठाये जा चुके हैं और अपने चित्त द्वारा उस आत्मा को मस्तिष्क के तालू भाग में लाती हैं। वहाँ वो उसे मस्तिष्क के समस्त चक्रों में से पार कराती हैं, जब तक कि इसका जन्म ब्रह्मरन्ध्र में से होता है। खोपड़ी के तालू भाग के मध्य में छेद से। इस प्रकार हर सहजयोगी की आत्मा का पुनर्जन्म होता है।

श्री गणेश एवं श्री जीज़स में सम्बन्ध

श्री गणेश सब सहजयोगियों के बड़े भाई हैं क्योंकि वे आदिशक्ति के प्रथम पुत्र के रूप में रचे गये। कलियुग में उनके जिन बच्चों ने पुन: जन्म लिया है, वे उनका मूल आदर्श हैं। वे सहजयोगी जाने जाते हैं। आदिशक्ति इसे अपने संकल्प द्वारा करती हैं और इसके द्वारा वे शक्तिशाली व्यक्तित्वों को जो स्वयं का ज्ञान जानते हैं, रचती हैं। ईसा मसीह अपने मनुष्य शरीर के विकसित रूप में, सहजयोग विश्वविद्यालय के कुलपति के समान कार्य करते हैं। हर साधक के भरती होने की योग्यता की वे जाँच करते हैं और अपने दिव्य विश्वविद्यालय में नामांकन की अनुमति देते हैं। चार स्तर, नाभि, स्वाधिष्ठान, अनाहत और विशुद्धि चक्रों को पार करने के बाद वे प्रत्येक साधक को डिग्री देते हैं इस स्तर पर साधक जागृत अवस्था में उठ जाते हैं।

आज्ञा चक्र को पार करने के बाद साधक का चित्त मस्तिष्क के तालु भाग में प्रवेश करता है, जिसे सहस्रार कहते हैं। जब सिर के ऊपर तालू भाग में छेदन हो जाता है और योग घटित होता है तो वे प्रत्येक साधक को उच्च

स्नातक की उपाधि देते हैं। यह आत्मसाक्षात्कार है। जब अचेतन मस्तिष्क में प्रवेश प्राप्त हो जाता है, तो इससे ऊंची उपाधियाँ भी श्री गणेश प्रमाणित करते हैं। चाहे उच्च स्नातक का अनुष्ठान आदिशक्ति द्वारा प्राप्त होता है पर फिर भी श्री गणेश को प्रत्येक स्नातक को आशीर्वादित करना होता है।

मनुष्य के व्यक्तित्व के ऊपर सदाशिव का आसन है और क्योंकि श्री गणेश अपने माता-पिता के श्री चरणों में हर समय समर्पित हैं वे सदाशिव की गोद में एक अत्यन्त प्रिय बच्चे के समान बैठते हैं। सदाशिव के आसन से ऊपर भगवान शिव के सिर पर श्री गणेश अर्धचन्द्र, अर्ध बिन्दू के रूप में बनाते हैं और उसके प्याले के सब ओर से प्रणव नीचे बहता है। बिन्दु के स्तर पर वे एकदम सूक्ष्म हो जाते हैं ताकि वे बिन्दु में प्रवेश कर सकें, जिस की न लम्बाई है न चौड़ाई, केन्द्रीय चेतन के पूर्ण घनत्व के रूप में। अन्त में वे एक गोल लाईन हैं जो आदिशक्ति की शक्ति को वलय में सीमित करती है अर्थात् पूर्ण स्थिति। आदिशक्ति परमेश्वर की शक्ति हैं पर उनकी शक्ति श्री गणेश है। वे अचेतन अवस्था में निवास करते हैं और आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् चेतन अवस्था में, प्रणव स्वरूप, रचना के हर कण में।

उनका प्रतीक स्वस्तिक हैं, जो रचना के समय घड़ी की सुइयों के समान घूमता है और उल्टी सुईयों के समान विनाश के समय घूमता है। विकसित होते समय यह बराबर एवम् विपरीत बल से कार्य करता है व स्थिरता देता है। स्वास्तिक की चार लाईने श्री गणेश की चार भुजाओं के समान हैं जो अपने हाथ में प्रतीकी आयुध आदि धारण करते हैं।

ईसा मसीह के जीवन में स्वस्तिक का रूप क्रौस है। वास्तव में क्रौस स्वास्तिक का विकसित रूप है। क्रौस के दोनों डंडे जहाँ एक दूसरे के साथ जुड़ते हैं वह केन्द्र स्वास्तिक से ऊपर है, क्योंकि ईसा उस समय आए, जब रचना उत्थान के ऊपरी स्तर पर थी और मनुष्यों में अधिक चेतना थी।

श्री गणेश के चार हाथ हैं। उनके आयुध व सहायक वस्तुएं ईसा के शरीर के अन्दर चले गए हैं, इसलिये क्रौस जो ईसा का प्रतीक है वह खाली है। ये आयुध (शस्त्र) है -

१) ऊपर का दायां हाथ परशु धारण करता है। गणेश जी का आयुध ईसा मसीह में क्षमा बन जाता है। यह मनुष्यों के लिए महानतम आयुध है। सहजयोग में, क्षमा का आयुध किस प्रकार उपयोग में लाना है, बाद में बताया जाएगा।

२) बायीं ओर का नीचे का हाथ अन्नपूर्णा देवी का कटोरा धारण करता है। उस कटोरे में मोदक होते हैं जो ईसा मसीह के जीवन के साथ एक हो जाते हैं। ईसा ने अपने जीवन में दिखाया कि वे भूख को जीत सकते थे और दूसरों के भूख को सन्तुष्ट कर सकते थे। उन्होंने चालीस दिन उपवास किया और शैतान भी उन्हें प्रलोभित नहीं कर सक। जब उन्होंने 'माऊन्ट' पर उपदेश दिया, तब उन्होंने हज़ारों की भूख को ब्रैड और मछली के चमत्कार से सन्तुष्ट किया।

३) बायीं ओर का ऊपर का हाथ एक छोटे साँप के रूप में कुण्डलिनी को धारण करता है। इसका अर्थ है कि वे ब्रह्माण्ड की कुण्डलिनी को नियंत्रित करते हैं। अनेक लोगों की कुण्डलिनी ईसा के आगमन से जागरूक हो गयी और वे सब इस कलियुग में सहजयोग के द्वारा साक्षात्कार प्राप्त करेंगे। अपने प्रेम एवं समर्पण के द्वारा उनका अपनी माँ पर प्रभाव था। वे उन्हें अपनी सेवा द्वारा सांत्वना देते हैं और उनके अन्दर वात्सल्य उत्पन्न करते हैं। वे माँ को अत्यधिक प्रसन्नता देते हैं।

श्रीमद् देवी भागवतम् के कुछ सारांश

महाविष्णु का जन्म

नारायण ने कहा, 'हे देवर्षी, मूल प्रकृति से जो अण्डा उत्पन्न हुआ था, वह ब्रह्मा की आयु के बराबर के समय से पानी में तैर रहा था, वह पूरा समय होने पर दो भागों में विभाजित हो गया। उस अण्डे के अन्दर एक शक्तिशाली बच्चा था। हज़ारों करोड़ों सूर्यों के समान चमक रहा था। वह बच्चा माँ का दूध नहीं पी सका क्योंकि वह उससे दूर हो गया था। भूख से थक कर बच्चा बार-बार रो रहा था। वह बच्चा जो अनगिनत ब्रह्माण्डों का स्वामी होने वाला था, इस समय अनाथ समान, बिना माता और पिता के, ऊपर की ओर देखने लगा। इस बालक का नाम बाद में महा विराट के नाम से जाना गया...

इस महाविराट की शक्ति, श्री कृष्ण की शक्ति का उच्चतम सोलहवां भाग है। यह बालक (प्रकृति राधा द्वारा उत्पन्न) इस सारे ब्रह्माण्ड का आधार है और महाविष्णु के नाम से पुकारा जाता है। उनके हर छिद्र में अनगिनत ब्रह्माण्ड बसे हैं.... सो, अनेक ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर हैं। हर ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं....

अब विराट पुरुष फिर से आकाश की ओर देखने लगा, पर वह अण्डे के भीतर कुछ नहीं देख सका सिवाय भवसागर के। तब भूख से परेशान वह बार-बार रोने लगा और व्यग्रता से भर गया। अगले क्षण वह कृष्ण के बारे में सोचने लगा जो उच्चतम व्यक्ति थे और उसी समय उसे वहाँ ब्रह्मा का अनन्त प्रकाश दिखाई दिया...

अपने पिता, परमेश्वर को देख कर बालक प्रसन्न हो गया और मुस्कराया। वरदानों से आशीर्वादित करने वाले प्रभु ने उसे समयानुसार अनेक वरदान दिए।

'हे बालक, तुम्हें मेरे समान ज्ञान हो, तुम्हारी भूख-प्यास चली जाए, तुम्हारे अन्दर प्रलय के समय तक अगणित ब्रह्माण्ड निवास करें। तुम नि:स्वार्थ रहो, निर्भय रहो और सब को वरदानों से आशीर्वादित करो, तुम्हें कभी वृद्धावस्था, बीमारी, दु:ख या कोई तकलीफ न सताये....'

श्री कृष्ण ने उसके भोजन की इस प्रकार व्यवस्था की, हर ब्रह्माण्ड में जो भी समर्पण श्री कृष्ण को दिया जाएगा, उसका सोलहवां भाग नारायण को जाएगा व पन्द्रहवा भाग इस बालक को जाएंगे, विराट को। श्री कृष्ण ने स्वयं को कोई भी भाग नहीं दिया....

तब श्री कृष्ण ने कहा, 'हे बालक, कहो और क्या चाहिए, मैं उसे तत्क्षण दूँगा।'

श्री कृष्ण के इन शब्दों को सुन कर विराट बालक ने कहा, 'हे सर्वव्यापक, मेरी कोई इच्छायें नहीं हैं। मैं जब तक रहूँ, कम समय या ज़्यादा समय, मेरे अन्दर आपके चरण कमलों के प्रति शुद्ध भक्ति रहे।'

तब श्री कृष्ण ने मधुर शब्दों में कहा, 'तुम हमेशा मेरे समान तरोताज़ा रहो। तुम कभी नहीं गिरोगे, चाहे कितने भी ब्रह्मा चले जाएं।'

'तुम अपने आपको अनेक भागों में विभाजित कर छोटे-छोटे विराट रूप में हर ब्रह्माण्ड में रहो। ब्रह्मा तुम्हारी नाभि से बाहर आकर सृष्टि की रचना करेंगे। उस ब्रह्मा के माथे से ग्यारह रूद्र रचना के विनाश के लिए आएंगे, पर वे सब शिव के भाग होंगे.... इसके अलावा तुम्हारे हर उपभागों से विष्णु निकलेंगे और भगवान इस विश्व के संरक्षक होंगे। तुम सदैव मेरे प्रति भक्ति से भरपूर रहोगे और ज्योंही तुम मेरा ध्यान करोगे तो तुम मेरी सुन्दर आकृति को देखोगे... और तुम्हारी माँ, जो मेरे हृदय में रहती हैं, उसे देखना तुम्हारे लिए कठिन नहीं होगा....'

ऐतिहासिक प्रतिनिर्देश

भारत में प्रभु ईसा

एक दिन शाक्यों के मुख्य, शालीवाहन, हिमालय में गये। वहाँ हन के देश में (लद्दाख, कुशान राज्य का एक हिस्सा), उस शक्तिशाली राजा ने एक पहाड़ पर एक पुरुष को बैठे देखा, जिससे मंगलता बह रही थी। उनका रंग सफ़ेद था और उन्होंने सफ़ेद कपड़े पहने थे।

राजा ने उस पवित्र पुरुष से पुछा कि, 'वे कौन थे?' उन्होंने उत्तर दिया, 'मुझे परमात्मा का पुत्र कहते हैं, कुमारी द्वारा पैदा हुआ हूँ, अविश्वासियों का राजदूत, बिना थकावट के सत्य की खोज में।' राजा ने तब उन्हें पूछा, 'आपका धर्म क्या है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'हे शक्तिशाली राजन, मैं एक विदेश से आया हूँ, जहाँ अब कोई सत्य नहीं है और शैतान की कोई हद नहीं है। उस अविश्वासियों के देश में, मैं मसीहा के रूप में प्रकट हुआ।'

हे राजन, उन अविश्वासियों में मैं जिस धर्म को लाया, उसे सुनिए, अशुद्ध शरीर के शुद्धीकरण के बाद और नैगम की प्रार्थना में शरण लेने के बाद, मनुष्य अनन्त को पूजेगा।' न्याय, सत्य, ध्यान और आत्मा के साथ एकाकारिता द्वारा मनुष्य प्रकाश के मध्य में स्थित ईसा की ओर मार्ग ढूँढ़ लेंगे। परमात्मा, जो सूर्य के समान स्थिर हैं, अन्त में सब की आत्मा को अपने साथ एकाकार कर देंगे। ईसा की सुखमयी छवि, प्रसन्नता देने वाली, सदैव हृदय में रहेगी और मैं ईसा मसीह के नाम से पुकारा जाता था।' (भविष्य पुराण २१)

संपादक की व्याख्या - प्रभु जीज़स का नाम येसु या ईसा बोला जाता था और वे मसीहा थे, इसलिये वे ईसा मसीह के नाम से जाने जाते थे।

इसी काल में, इस पवित्र स्थान पर हज़रत युज आसफ़ यहाँ मुक्कदस (पवित्र स्थान) से आए और उनके पैगम्बर (धर्म प्रवर्तक) होने की घोषणा की। उन्होंने दिन रात अपने आप की परमात्मा की प्रार्थना में समर्पित कर दिया और धर्म परायणता एवं सदाचार की ऊँचाईयाँ प्राप्त कर के, स्वयं को काश्मीर के लोगों के लिए परमात्मा का संदेश वाहक घोषित किया। उन्होंने लोगों को अपने धर्म में आमन्त्रित किया क्योंकि वहाँ के घाटी के लोगों को उनमें विश्वास था। राजा गोपदत्त ने उन्हें हिन्दुओं की आपत्ति का बताया। इस पीर के आदेशानुसार, सुलेमान ने जिन्हें हिन्दू सांदेमान कहते थे, गुम्बज की मरम्मत का कार्य पूरा किया, वह साल चौवन का था।

आगे सीढ़ियों के एक पत्थर पर सुलेमान ने लिखवाया 'इस समय में युज़ आसफ़ ने स्वयं को पैगम्बर घोषित किया और दूसरे पत्थर पर यह भी लिखवाया 'युज़ आसफ़ येसु थे, यहूदियों के पैगम्बर थे।'

मैंने हिन्दुओं की एक पुस्तक में देखा है कि, यह पैगम्बर वास्तव में हज़रत ईसा थे, परमात्मा की आत्मा, उन्होंने अपना युज़ आसफ़ का नाम रख लिया था। वास्तविकता का ज्ञान परमात्मा का है। उन्होंने अपना जीवन इस घाटी में व्यतीत किया। उनकी मृत्यु के पश्चात वे मोहल्ला अन्जभारा में दफनाए गये। कहा जाता है कि इस पैगम्बर की कब्र से प्रकाश निकलता था। मुल्ला नादरी, ताहरी की काश्मीर (काश्मीर का इतिहास) 1420 CE।

संपादक की व्याख्या - प्रभु ईसा को युज़ आसफ़ हज़रत भी कहा जाता था। अर्थात् सन्त। राजा गोपानन्द (या गोपादत्ता) ने काश्मीर पर 49 से 109 A.D. में राज्य किया।

उस शहर से जाने के बाद वे अनेकों दूसरे शहरों में गये और लोगों को सीख दी। अन्त में वे काश्मीर की राजधानी में आए। वहाँ बसने के बाद, उन्होंने सब लोगों को परमात्मा के साम्राज्य में बुलाया। वे काश्मीर में अपने

जीवन के अन्तिम दिवस तक रहे। मृत्यु के अन्तिम क्षण में उन्होंने अपने एक शिष्य, जिसे याबिद के नाम से जाना जाता था, को बुलाया। इस शिष्य ने अपने गुरु की अत्याधिक श्रद्धा के साथ सेवा की थी और आध्यात्मिक उन्नति में उच्च स्थान प्राप्त किया था।

अपनी अन्तिम इच्छा में युज़ आसफ़ ने कहा, 'अब इस अन्तिम क्षण में मेरी आत्मा उस परम पवित्र की ओर जाने के लिए तैयार है। आप सब के लिए यह आवश्यक है कि परमात्मा के आदेश का पालन करो। सत्य को छोड़ कर किसी को कभी भी असत्य की ओर नहीं जाना है। आप सब प्रार्थनाओं के साथ रहें और सत्य को पकड़े रहें।' यह कह कर उन्होंने अंतिम सांस ली।

प्रिय पाठकों, इस कथा में बहुत बुद्धिमत्ता है। इस में छुपी हुई ज्ञानता को समझें और सदाचारी एवं आध्यात्मिक सीख का पालन करें ताकि आपके हृद से भौतिक संसार की इच्छायें नष्ट हो जाएं।

किसा शाज़ादा युज़ासफ़ वो हाकिम बालोहर, पी.-१३

क्या ईसा भारत आये थे?

सबूतों और हाल ही में बीसवीं शताब्दि के विद्वानों द्वारा किये गये शोध से यह माना जाता है कि ईसा दो बार भारत आये, एक बार सूली पर चढ़ने के पहले और फिर अपने पुनर्जन्म के पश्चात् अपनी माँ के साथ आये। उनके अनुसन्धान में समाधी एवं काश्मीर और पाकिस्तान के पुराने ग्रन्थों से काफ़ी सहयोग मिला है। उसी, पास के स्थान में बौद्ध मठों में कुछ प्रमाण-प्रलेख पाए गये हैं और कई लोगों द्वारा अनुवाद किये गये हैं। (नोटोविच १८९६ में, स्वामी अभेदानन्द, १९२३ और रोरिक, १९२५ में) परन्तु किसी ने उनकी फोटो नहीं ली और हस्तलिपी बाद में नष्ट की गयी या चोरी हो गयी।

प.पू.श्रीमाताजी, अपने उपदेशों में प्रकट करती हैं कि ईसा और उनकी माँ क्रौस पर चढ़ने के पश्चात टर्की चले गये। उन्होंने भी यह कहा कि वे छोटी

उम्र में भारत गये थे और फिर क्रौस के बाद दुबारा गये। और उन्होंने उसके बाद यह भी कहा है कि, राजा शालिवाहन, जो उनके पूर्वज थे, ईसा को काश्मीर में मिले।

डैन कोस्टियन ने अपनी पुस्तक 'बाईबल आलोकित - धर्म और योग' में ईसा और उनकी माँ मेरी का यात्रा-विवरण, इज़राईल से टर्की तक का करने का प्रयत्न किया है, जहाँ एक घर है, जिसे मदर मेरी का घर पुकारा जाता है। उसके बाद उन्होंने उनकी यात्रा पर्शिया के आगे की बताई है। जब तक अन्त में वे पाकिस्तान के उत्तर में स्थित तक्षशिला पहुँचे। उसके बाद वे यात्रा कर के मूरी शहर पहुँचे, यह नाम मेरी से आया है, इसे ब्रिटिश शासकों ने बदल दिया। पहले वह मारी कहलाता था। इस शहर में ईसा की माँ की समाधी है। उसका नाम है, 'माई मारी का स्थान।' अर्थात् मदर मेरी के आराम का स्थान। ईसा काश्मीर के श्रीनगर में दफ़नाये गये थे, जिसे आजकल 'रोसाबैल मौस्क' कहते हैं।

www.nirmalnagari.org/india2009/calender/christmas/FSQ-india.pdf

क्रिश्चियन बाईबल और एपोक्रिफल टैक्स्ट के सारांश

प्रभु ईसा मसीह का जन्म और ईसा प्रभु के कुछ शब्द और कार्य, श्रीमाताजी का प्रिय पुत्र

प्रभु ईसा मसीह का जन्म

प्रारम्भ में शब्द था और शब्द परमात्मा के साथ था और शब्द परमात्मा था। ऐसा ही प्रारम्भ में परमात्मा के साथ था। सब कुछ उनके द्वारा बनाया गया था, और जो कुछ भी बना था, उनके बिना कुछ भी नहीं बना था। उनमें जीवन था और जीवन मनुष्यों का प्रकाश था और प्रकाश अंधेरे में चमकता है और अंधेरा प्रकाश में सम्मिलित नहीं होता।

यह सत्य प्रकाश था, जिसने हर संसार में आने वाले मनुष्य को प्रकाशित किया। वे इस संसार में थे और संसार उनके द्वारा बनाया गया था। संसार उन्हें नहीं जानता था। वे स्वयंभू होकर आये पर उनके अपनोंने उनका स्वागत नहीं किया। पर जितने सारे अपनों ने उन्हें अपनाया, उन्होंने उनको शक्ति दी कि वे परमात्मा के पुत्र बनें। उनको भी दी जो उनके नाम में विश्वास रखते थे, जो पैदा नहीं हुए रक्त से, न ही माँस की इच्छा से, न ही मनुष्य की इच्छा से, परंतु परमात्मा से। और शब्द का मांस बना और हमारे बीच रहे और हम उनके गौरव को देखते हैं। पिता परमेश्वर के एक मात्र उत्पन्न हुए गौरव, दया और सत्य से परिपूर्ण। जॉन १.१

उन दिनों सीज़र औगस्टस ने यह विधान बनाया कि सारे विश्व पर कर लगाना चाहिए। सब अपने शहरों में कर लगवाने के लिए गये। और जोज़फ भी नाज़रथ के गौलिली शहर से जुड़ा और फिर 'सिटी ऑफ़ डेविड' आये, जिसे बैथलहेम कहते हैं। क्योंकि वे डेविड के वंश से थे, अपनी पत्नी मेरी व

बच्चे के साथ कर लगवाने आये। जब वे वहाँ थे तो मेरी के वो दिन आये जब उनका बच्चा पैदा होना था। उनका एक बेटा हुआ। उसे कपड़ों में लपेट कर, उसे चारे की नांद में लिटा दिया क्योंकि उस सराये में उनके लिए कोई स्थान नहीं था।

वहाँ कई गडरिए थे, जो खेतों को देखते थे व रात्रि में पशुओं की निगरानी करते थे, वे दस थे। तब वहाँ प्रभु के देवदूत आए और प्रभु की ज्योति उनके आस-पास चमक रही थी। गडरिये बड़े भयभीत हो गये। देवदूत ने कहा, 'डरो मत। मैं तुम्हारे लिए महान आनन्द की खबर लाया हूँ, जो सब लोगों के लिए है। आप सबके लिए इस 'सिटी ऑफ डेविड' में एक रक्षक पैदा हुआ है, जो ईसा प्रभु हैं। उसका प्रतीक यह होगा कि आपको नया जन्मा बच्चा शिशुओं के वस्त्रों में लिपटा चारे की नांद में मिलेगा। अचानक ही वहाँ देवदूत के साथ बड़ा जनसमूह स्वर्गीय जनसमूह परमात्मा की प्रशंसा गाते हुए आ गया और कहा, 'परमात्मा का उच्चतम गौरव है पृथ्वी पर शांति और मनुष्यों के प्रति शुभ चिन्तक। ल्यूक २.१

पानी को 'वाईन' में बदलने पर

और तीसरे दिन गैलिली के कैना में एक विवाह था। वहाँ ईसा की माँ थीं। वहाँ ईसा और उनके शिष्य विवाह में आमंत्रित थे।

जब उन्हें 'वाईन' चाहिए थी तो ईसा की माँ ने उन्हें कहा, 'उनके पास वाईन नहीं है।' उनकी माँ ने नौकरों से कहा कि जैसे वे कह रहे हैं, वैसा करो। वहाँ छः पत्थर के बने पानी के मटके रखे गये थे। ईसा ने उन्हें कहा कि पानी के बर्तनों को पानी से भर दो। और उन्होंने उन्हें ऊपर तक भर दिया और फिर उन्होंने कहा, अब निकालो और गर्वनर को दावत में दो। उन्होंने उन्हें खोला।

जब उस दावत के मुखिया ने उस पानी को चखा जो वाईन बनाया गया है, उसे पता नहीं था कि वह कैसे आई। उसे पता नहीं था कि वह कैसे आई, परन्तु जिन नौकरों ने पानी निकाला था, उन्हें पता था, उस दावत के गर्वनर ने

दुल्हे को बुलाया और कहा, कि प्रत्येक मनुष्य ने शुरू में अच्छी वाईन बाहर निकाली, और जब लोग नशे में डूब गये तब खराब वाली निकाली गयी, परन्तु तुमने अच्छी वाईन अभी तक रखी है। जौन २-१

माऊन्ट पर प्रवचन के सारांश

बड़े जनसमूह को देख कर ईसा पहाड़ के ऊपर चढ़ गये और वहाँ बैठ गये, तो उनके शिष्य उनके पास आए और उन्होंने अपना मुख खोला और यह कह कर सीख दी, जो उत्साह रहित हैं वे आशीर्वादित हैं क्योंकि परमात्मा का साम्राज्य उनका है। जो दु:ख में हैं वे आशीर्वादित हैं क्योंकि उन्हें सांत्वना दी जाएगी। जो विनम्र हैं, वे आशीर्वादित हैं क्योंकि उन्हें उत्तराधिकारी में पृथ्वी मिलेगी। वे आशीर्वादित हैं, जिन्हें भूख और प्यास सत्यनिष्ठा के पश्चात होती है, वे भर दिये जाएंगे। जो दयालु हैं वे आशीर्वादित हैं। क्योंकि उन्हें दया मिलेगी। जो हृदय में पवित्र हैं वे आशीर्वादित हैं, क्योंकि वे परमात्मा को देखेंगे। शान्ति रखने वाले आशीर्वादित हैं क्योंकि वे ही परमात्मा के बच्चे कहलाएंगे। वे आशीर्वादित हैं जो सत्यनिष्ठा के कारण उत्पीड़ित किये जाते हैं, क्योंकि परमात्मा का साम्राज्य उनका है। आप लोग आशीर्वादित हैं। जब लोग आपको गाली देंगे, उत्पीड़ित करेंगे और आपके विरोध में झूठे अनिष्ट कहेंगे, मेरे कारण।

आनन्दित हो जाओ और अत्यधिक प्रसन्न हो जाओ। क्योंकि स्वर्ग में आपके लिए महान इनाम है, क्योंकि जो आपके सामने पैगम्बर उत्पीड़ित हुए हैं। उनके कारण आप पृथ्वी का नमक हो, परन्तु यदि नमक अपना स्वाद खो दे तो वह कहाँ से नमकीन होगा? तब वह किसी काम का नहीं है, वह बाहर फेंक दिया जाएग और लोगों के पैरों के नीचे कुचला जाएगा। आप विश्व का प्रकाश हैं। एक शहर जो पहाड़ी पर बसाया गया हो, उसे छुपाया नहीं जा सकता। लोग मोमबत्ती जला कर उसे बुशैल के नीचे नहीं रखते, पर स्टैंड पर रखते हैं और घर में जो कुछ भी होता है, सबको प्रकाश देती है। आपका प्रकाश भी सबको दिखने दें, ताकि वे आपके अच्छे कार्य देखें और स्वर्ग में

स्थित परमेश्वर का गुणगान करें।

यह मत सोचो कि मैं कानून या पैगम्बरों को नष्ट करने आया हूँ। मैं नष्ट करने नहीं, परंतु परिपूर्ण करने आया हूँ। जो भी इन आदेशों को तोड़ेगा और लोगों को भी वैसा ही सिखायेगा, वह स्वर्ग के साम्राज्य में अल्पतम कहलाएगा, पर जो उन्हें ठीक से पालन करेगा व सिखाएगा। वह स्वर्ग के साम्राज्य में महान कहलाएगा। मैं आपसे कहता हूँ कि धर्म व सत्यनिष्ठा के सिवाय आप स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

आपने सुना है कि पुराने समय में वे कहते थे आप मारेंगे नहीं, और जो भी मारेगा वह न्याय के खतरे में होगा। पर मैं कहता हूँ आप से कि जो भी अपने भाई से क्रोधित है, बिना किसी कारण के, वह न्याय के खतरे में होगा, और जो भी अपने भाई को 'राका' कहेगा वह परिषद के खतरे में होगा। परन्तु जो भी किसी को मूर्ख कहेगा, वह नर्क की आग के खतरे में होगा।

आपने सुना है कि ऐसा कहा गया है, आपको अपने पड़ोसी से प्रेम करना है और शत्रु से घृणा। परन्तु मैं आपसे कहता हूँ कि अपने शत्रुओं से प्रेम करो। आशीर्वाद दो उन्हें जो आपको श्राप देते हैं। जो आपसे घृणा करते हैं, उनका भला करो और जो आपका इस्तेमाल करते हैं और आपको उत्पीड़ित करते हैं उनके लिए प्रार्थना करें। क्योंकि वे आपके पिता जो स्वर्ग में हैं उनके बच्चे हो सकते हैं, क्योंकि उन्होंने सूर्य बनाया है, जो दुष्ट एवम् अच्छे, दोनों के लिए उगता है और न्याय पूर्ण और अन्यायी, दोनों को वर्षा देते हैं। यदि जो आपको प्रेम करते हैं, आप उन्हें प्रेम करते हैं तो क्या पारितोषिक हैं? क्या कर इकठ्ठा करने वाले यही नहीं करते? यदि आप केवल अपने भाईयों को सलाम करते हैं, क्या आप दूसरों से अधिक करते हैं? कर एकत्रित करने वाले क्या यह नहीं करते? सो आप निर्दोष बने। आपके पिता परमेश्वर जो स्वर्ग में हैं वे भी निर्दोष हैं।

पृथ्वी के गढ़े घन पर मत लेटो, वहाँ पतंगे और जंग खराब कर देंगे और

जहाँ चोर सेंघ लगा कर चोरी कर लेंगे, परन्तु स्वर्ग के घन पर आराम करो, जहाँ न तो पतंगे और न ही जंग उसे खराब कर सकेंगे और जहाँ चोर उसे सेंघ लगा कर चोरी नहीं कर सकते क्योंकि जहाँ आपका घन होगा, वहाँ ही हृदय होगा। शरीर का प्रकाश आँख है। यदि आपकी आँख सीधी (अबोध) है तो पूरा शरीर प्रकाश मय होगा। परन्तु यदि आपकी आँख में दुष्टता है तो पूरा शरीर अंध:कारमय होगा।

किसी को भी न्यायित नहीं करोगे तो आप भी उनके द्वारा न्यायित नहीं होंग। क्योंकि जिस प्रकार आप न्यायित करेंगे, वे भी आपको उसी प्रकार न्यायित करेंगे और जिस प्रकार आप लोगों को नापेंगे वैसे ही आप भी नापे जाएंगे। आपके भाई की आँख में जो कण है उसे क्यों देखना है, परन्तु जो तराजु का डंडा आपकी आँख में है, उसे देखना चाहिए। आप कैसे अपने भाई से कह सकते हैं, कि मैं तुम्हारी आँख से कण निकाल दूँ, जब कि पूरा डंडा आपकी आँख में हैं। आप पाखंडी, पहले अपनी खुद की आँख से डंडा निकालो, तब आप अपने भाई की आँख का कण ठीक से निकाल पाओगे।

आप माँगो और आपको मिलेगा, ढूंढो और आप पाओगे। खटकाओ और आपके लिए खुल जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति जो मांगेगा वह पाएगा और जो ढूंढता है, पाता है और जो खटकाता है उसके लिए खुल जाएगा। या, किसी मनुष्य से उसका बेटा रोटी मांगेगा तो क्या वह उसे पत्थर देगा? या वह मछली मांगेगा तो क्या उसे साँप देगा? यदि आप बुरे होते हुए भी जानते हो कि अपने बच्चों को अच्छी भेंट कैसे देनी चाहिए तो आपका पिता परमेश्वर जो स्वर्ग में है, वह माँगने पर कितनी अधिक अच्छी भेंट देंगे? इसलिये जो कुछ भी आपके लिए कोई करता है, आप भी उसके साथ करें। यही पैगम्बरें का कानून है।

गलत गुरुओं से सावधान रहो, जो आपके पास भेड़ के कपड़ों में आते हैं, पर अन्दर से वे खूँकार भेड़िये हैं। आप उन्हें उनके फलों से जानेंगे। लोग अंगूर एकत्रित करते हैं या काँटे या अंजीर या कंटीला पौधा? यहाँ तक कि अच्छे पेड़ में अच्छे फल आते हैं पर बुरे पेड़ में बुरे फल आएंगे। अच्छे पेड़ पर

बुरे फल नहीं आ सकते और न ही बुरे पेड़ पर अच्छे फल आ सकते हैं। जो भी पेड़ अच्छा फल नहीं देता, उसे काट कर आग में जला दिया जाता है। आप उन्हें उनके फल द्वारा जानेंगे। जो लोग मुझे प्रभु, प्रभु कह कर पुकारेंगे, वे सब ही स्वर्ग के साम्राज्य में नहीं प्रवेश करेंगे, पर जो मेरे पिता की इच्छा को मानेंगे, जो स्वर्ग में हैं। उस दिन मुझे अनेक 'प्रभु, प्रभु' कह कर पुकारेंगे कि हमने आपका नाम नहीं लिया था क्या? और तुम्हारे नाम में अपने शैतान डाल दिये? और तुम्हारे मान में कई बढ़िया कार्य किए? आर तब मैं कहूँगा उन्हें, मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था। मुझसे दूर जाओ। मैथ्यू, चैप्टर ५-७

मन्दिर की सफ़ाई

यहूदियों का मेला था और ईसा जेरूसलेम गये और पाया कि मन्दिर में बैल, भेड़े और कबूतर बिक रहे थे और पैसे ब्याज पर देने वाले बैठे थे। उन्होंने कुछ छोटी रस्सियों से कोड़ा बनाया था। उन्होंने उन सबको मन्दिर से बाहर निकाला। बैलों को, भेड़ों को,पैसे ब्याज पर देने वालों को टेबल नीचे फ़ेंक दिये और कबूतरों को बेचने वालों से कहा, 'इन सबको यहाँ से ले जाओ और मेरे पिता का घर व्यापार केंद्र नहीं बनाओ। जौन २.१३

साक्षात्कार के बाद क्या होता है :

बीज कैसे अंकुरित होता है?

उन्होंने अनेक बातें, कहावतों के रूप में कहीं। उन्होंने कहा, देखो, एक व्यक्ति बीज बोने गया और जब उसने बोये, कुछ बीज बाहर, रास्ते में गिर गये और पक्षियों ने उन्हें खा लिया। कुछ पत्थरीली सतह पर गिरे, जहाँ उन्हें ज़्यादा पृथ्वी की मिट्टी नहीं मिली और वे उगे नहीं क्योंकि उन्हें पृथ्वी की गहराई नहीं मिली और जब सूर्य ऊपर चमका तो वे जल गये और क्योंकि उनकी जड़ें न थीं, वे मुरझा गये। कुछ कांटों में गिर गए और कांटों ने उन्हें घोंट दिया। परन्तु दूसरे अच्छी भूमि पर गिरे और सामने फल लाये, कुछ सौ गुना,

कुछ साठ गुना, कुछ तीस गुना।

जिसके पास सुनने के लिए कान हैं उसे सुनने दो। जब कोई राज्य का शब्द सुनता है और उसे समझता नही है तब दुष्ट आता है और उसे पकड़ कर ले जाता है, वह उसके हृदय में बीज उगा था। यह वह है जिस रास्ते में गिरा बीज मिला था। पर जिसने पत्थरीली सतह वाला बीज पाया, वह उस शब्द को सुनकर आनन्द प्राप्त करता है। उसमें जड़ नहीं थी पर कुछ समय के लिए सहता है, पर जब शब्द के कारण उत्पीड़ित होता है, वह धीरे-धीरे अप्रसन्न हो जाता है। जिसने कांटों में गिरे बीज को पाया, उसने शब्द सुना : विश्व की चिन्तायें, ऐश्वर्य का धोखा, शब्द उसे घोंट देते हैं और वह फलरहित हो जाता है। पर जिसने अच्छी भूमि वाला बीज़ पाया वह शब्द सुनता है, समझता है और सामने फल लाता है, कोई सौ गुना, कुछ साठ गुना, कुछ तीस गुना। मैथ्यू १३.३

पुनर्जन्म पर

सप्ताह के पहले दिन शीघ्र ही मेरी मैगड़ेलीन आई। जब भी अंधेरा था वह कब्र के पास आई और देखा कि कब्र से पत्थर हटाया हुआ था। तब वह भाग कर ईसा के प्रिय शिष्य जौन के पास आई और कहा, वे लोग प्रभु को कब्र में से ले गये हैं और पता नहीं उन्हें कहाँ लिटाया है। वह शिष्य कब्र के पास आया उसने झुक कर नीचे देखा। उसने देखा कि कपड़े नीचे पड़े थे। उसने देखा और विश्वास किया और फिर वह चला गया।

परन्तु मेरी कब्र के पास खड़ी हो कर रो रही थी : रोते हुए वह नीचे झुकी और दो देवदूतों को देखा, जहाँ ईसा को लिटाया गया था, एक देवदूत सिर की ओर व एक पैरों की ओर। उन्होंने कहा, 'क्यों तुम रो रही हो?' उसने उनसे कहा, 'क्योंकि वे मेरे प्रभु को ले गये हैं और पता नहीं उन्हें कहाँ लिटाया है।' यह कह कर जब वह पीछे मुड़ी तो उसने देखा कि ईसा वहाँ खड़े वह जान नहीं पाई कि वे ईसा थे। ईसा ने उससे कहा, 'हे स्त्री, तुम क्यों रो रही

हो? किसे ढूंढ रही हो?' उसने सोचा कि वह माली है और उससे कहा कि, 'यदि तुमने सहारा दिया है, बताओ, कहाँ उन्हें लिटाया है? मैं उन्हें साथ ले जाऊंगी।' ईसा ने उससे कहा, 'मेरी'। वह मुड़ी और कहा, 'रब्बोनी', अर्थात् 'मास्टर'। जीज़स ने उससे कहा, 'मुझे मत छूओ क्योंकि मैं अभी अपने पिता के पास ऊपर नहीं पहुँचा हूँ, परन्तु मेरे भाईयों के पास जाओ और उनसे कहो, मैं ऊपर उठ रहा हूँ अपने पिता को व तुम्हारे पिता, अपने परमात्मा को और तुम्हारे परमात्मा को।' मेरी मैगड़ेलीन ने आ कर शिष्यों से कहा, कि उसने प्रभु को देखा था और उन्होंने ये बातें उससे कही थीं। जौन २०.१

सम्पादक की व्याखा : श्रीमाताजी ने बताया है कि मेरी मैगडेलीन महाकाली का अवतार थी और जौन गुरु तत्त्व का अवतरण थे।

ईसामसीह का सूक्ष्म स्वभाव

'मैं जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से आई है। यदि इस रोटी को कोई खाएगा वह हमेशा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं संसार के जीवन के लिए दूंगा, वह मेरा माँस है।' जौन ६.५

यदि कोई प्यासा है, वह मुझे बुलायें व पी ले। जो मुझ में विश्वास करता है, जैसा कि ग्रन्थों में कहा गया है उसके हृदय में जीवित पानी की नदियाँ बहेंगी। जौन ७.३७

'सूक्ष्म द्वार से प्रवेश करने का पूरा प्रयत्न करो, क्योंकि मैं बता रहा हूँ, कई प्रयत्न करेंगे पर कर नहीं पाएंगे।' ल्यूक ३.२४

'मैं दरवाजा हूँ, यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करता है, वह बचा लिया जाएगा और वह अन्दर व बाहर जा सकेगा और हरियाली पाएगा। जौन १०.९

कुण्डलिनी के कार्य पर

'परमात्मा के साम्राज्य की मैं किस से तुलना करूँ? यह खमीर के

समान है, जो एक स्त्री ने तीन नाप के आटे में छुपा दिया और सारा खमीर में बदल गया।'

परमात्मा का साम्राज्य कैसा है? और उसे मैं किस से तुलना करूँ? यह ऐसा है, जिस प्रकार एक राई का दाना होता है। जिसे एक मनुष्य ने अपने बगीचे में दबा दिया और वह बढ़ कर एक बड़ा वृक्ष बन गया और हवा के पक्षियों ने उसकी शाखाओं में घोंसले बना दिये। ल्यूक १३.१

श्रीमाताजी पर

मनुष्यों के पुत्रो, मैं सत्य कह रहा हूँ कि जो भी आप धर्म निंदा करेंगे, पाप करेंगे वे माफ़ कर दिये जाएंगे परन्तु जो भी 'होली घोस्ट' के प्रति पाप या निंदा करेगा वह कभी माफ़ नहीं होगा पर वह अनन्त पाप का दोषी होगा। मार्क ३.२८

'और जो भी मनुष्य के बेटे के विरोध में कुछ भी कहेगा, वह माफ़ हो जाएगा। पर जो भी 'होली स्पिरीट के विरोध में कुछ कहेगा वह माफ़ नहीं होगा। मैथ्यू १२.३२

यह बातें मैंने आपसे कही हैं, मैं अभी आपके साथ हूँ पर 'कौन्सलर, होली स्पिरीट' जिसे पिता परमेश्वर मेरे नाम के साथ भेजेंगे, वह तुम्हें सब कुछ सिखाएगा और जो भी मैंने आपसे कहा है, वह आपकी स्मृति में आएगा। जौन १४.२५

मुझे अभी भी आपको अनेक बातें बतानी हैं, पर अभी आप उन्हें धारण नहीं कर सकते, जब सत्य की आत्मा आएगी, वह आपको सत्य की ओर मार्गदर्शन करेगी। जौन १६.१२

सहजयोगियों की विराट के साथ सामूहिक चेतना

'उस दिन आपको पता चलेगा कि मैं अपने पिता में हूँ और आप मुझ में और मैं आपमें।' जौन १४.१८

पिता, जो गौरव आपने मुझे दिया है, वह मैंने उन्हें दिया है ताकि वे भी एक हो सकें, जिस प्रकार हम एक हैं। मैं उनमें और आप मुझ में, वे पूर्णतया एक हो जाएं, ताकि संसार को ज्ञात हो कि आपने मुझे भेजा है। और उन्हें मैंने वैसे ही प्रेम किया है। जिस प्रकार आपने मुझसे प्रेम किया है। जौन १७.२२

प.पू.श्रीमाताजी, ख्रिसमस पूजा २००४

पवित्र पैगम्बर थौमस के कार्यों से (एपोक्रिफाल टैक्स्ट)

मैं .....उस मौसम में हम सब पैगम्बर जेरुसलेम में थे... और हम सब ने संसार के कुछ भागों को विभाजित किया, ताकि हम में से प्रत्येक उस भाग में जाए, जो उसके लिए चुना है। उस देश में, जो उसके लिए प्रभु ने चुना है। उस विभाजन में भारत जूड़ा थौमस के हिस्से में आया। वे जुड़वा थे, पर वे नहीं जाना चाहते थे व कहा कि, शरीर की कमजोरी के कारण वह यात्रा नहीं कर सकता और वह यहूदी आदमी है व भारतीयों को कैसे सत्य सिखा सकता है? जब उसने वे कारण बताए तो रात को उसके सामने 'रक्षक' आए और उसे कहा, 'थौमस डरो मत। तुम भारत जाओ और वहाँ सत्य सिखाओ। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

(थौमस दक्षिण भारत गये व लोगों को ईसा के विषय में व उनके शब्द और संदेश बताए)

३६ ...और यदि महंगे दावत, उनके सम्बन्ध में हमने आदेश प्राप्त किया है कि उनसे सावधान रहें और खाने-पीने और शराब, जीवन के ऐश्वर्यों के वज़न से दबना नहीं है।

३९ ...हम आपको, आपके अदृश्य पिता और समस्त रचना की माँ आपकी 'होली घोस्ट' की महिमा की प्रशंसा करते हैं।

४९ ...और उन्होंने अपना हाथ उन पर रखा और आशीर्वादित किया और कहा, हमारे प्रभु का आशीर्वाद सदा के लिए आपके ऊपर रहेगा और उन्होंने आमीन कहा।

५० ...और वे बोलना शुरू हुए : आओ हे पूर्ण दयालु, आओ, हे मनुष्यों का बन्धुत्व, आओ, वह जिसे उनके रहस्य पता हैं, वे चुनी हुई हैं, वे जो सब युद्धों की तेजस्वी योद्धा हैं। उनकी मौनता, जो महान बातें व्यक्त करती है। आओ, जो गुप्त बातों की अभिव्यक्ति करती हैं। जो अनकही बातों को स्पष्ट करती हैं। वह पवित्र कबूतर जिसके छोटे जुड़वे हैं, आओ, हे छुपी हुई माँ, आओ, वह जो अपने कार्यों में व्यक्त होती है और जो उनमें शामिल होते हैं। उन्हें आनन्द देती हैं।

द लॉर्ड्स् प्रेअर

अवर फादर, हू आर्ट इन हेवन,
हॅलोड बी दाय नेम
दाय किंगडम कम,
दाय विल बी डन,
ऑन अर्थ अॅज इट इज इन हेवन.
गिव्ह अस धिस डे अवर डेली ब्रेड;
अँड फर्गीव्ह अस अवर ट्रेसपासेस,
अॅज वी फर्गीव्ह दोज हू ट्रेसपास अगेन्स्ट अस;
अॅण्ड लीड अस नॉट इनटू टेम्पटेशन,
बट डिलिवर अस फ्रॉम इव्हिल;
फॉर दाईन इज द किंगडम,
द पॉवर अँड द ग्लोरी,
फॉर एवर अँड एवर, आमेन.

वास्तविक क्रिसमस - दीवाली

जिस प्रकार ईसा मसीह इस पृथ्वी पर आये और श्री गणेश की रचना हुई, उसमें काफ़ी समानता है। दोनों ही पूर्णतया माँ से आये। श्री गणेश श्री पार्वती द्वारा हल्दी से बनाए गये थे, जो उनके शरीर पर लगी थी और प्रभु ईसा मसी का जन्म कुमारी मेरी द्वारा हुआ था।

क्रिसमस को दिसम्बर में ईसा के जन्म के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि लगभग सत्रह सौ वर्षों से यह परंपरा अधिकतर चर्चों में रही है। पुराने शक्तिशाली रोमन लोगों ने ईसाई धर्म को तीसरी सदी ए.डी. में अपनाया और ऐसा सोचा जाता है कि उन्होंने क्रिसमस मनाने के लिए २५ दिसम्बर को चुना क्योंकि अनेक रोमन त्यौहार उस तारीख के आसपास होते हैं।

एक अवसर पर श्री माताजी ने हमें नक्षत्र चिन्हों के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि, ईसा मसीह जो श्री गणेश के अवतरण थे, वे 'स्कौरपियो' नक्षत्र चिन्ह में उत्पन्न हुए थे, यह मृत्यु व पुनर्जीवन का चिन्ह है, जो दिवाली के समय में आता है और यह भी कहा कि वे 'कैप्रीकोर्न' चिन्ह के नहीं हो सकते थे जो दिसम्बर में होता है। ईसा का चक्र आज्ञा है और यह चक्र प्रकाश तत्त्व से जुड़ा है और वे दीवाली पर उत्पन्न हुए थे, प्रकाश का त्यौहार। ईसा प्रभु एक प्रकाश के रूप में आये थे, अंधेरों को प्रकाशित करने के लिए। इस प्रकार फिर, प्रकाश से सम्बन्ध जुड़ता है।

१९८० की दीवाली पूजा के प्रवचन में श्रीमाताजी ने बताया कि वास्तव में जीजस का जन्म दीवाली पर हुआ था।

'श्री महालक्ष्मी का जन्म समुद्र में हुआ। मेरी का नाम भी वही है मरियम या मेरी, मुझे पता नहीं कि अंग्रेजी में कैसे कहते हैं, पर मरिया शब्द, 'मारी' से आता है। मारी भी मेरी शब्द से आता है। सो, महालक्ष्मी, मेरी नाम है क्योंकि वे समुद्र में पैदा हुईं और इसी कारण उनका नाम मेरी था। कुछ लोग मरियाना कहते हैं। कुछ उन्हें मरियम कहते हैं। ये सारे शब्द इस ओर संकेत करते हैं कि वे समुद्र में पैदा हुई थीं। सो, वे महालक्ष्मी हैं। अब मेरी ही महालक्ष्मी हैं और गणेश उनके बच्चे हैं। अब देखिये, यह किस प्रकार कार्यान्वित होता है कि केवल दीवाली पर ही लक्ष्मी और गणेश की पूजा होती है, केवल इन दोनों की। क्या आप समझ सकते हैं?

मेरे लिए महालक्ष्मी का प्रतीक 'मेरी' है, आपके लिए यह महालक्ष्मी प्रतीक है। गणेश के प्रतीक स्वरूप बाहर ईसा हैं। वे गणेश के प्रतीक हैं। सो, दोनों केवल दीवाली पर पूजे जाते हैं। वास्तव में यह वास्तविक क्रिसमस है, जो पहले भी था और इस समय ईसा बच्चे के रूप में पैदा हुए थे, न कि २५ दिसम्बर। यह गलतफ़हमी है। कोई बात नहीं, कुछ फ़र्क नहीं पड़ता। वे जब भी पैदा हुए क्योंकि एक बहुत बड़ा त्यौहार होता था और उस त्यौहार के बाद वे जन्मे थे, उसे वलानन कहते थे। आधुनिक समय में मुझे पता नहीं, क्या कहते हैं, उस समय वैसे ही कहते थे। तब यह बच्चा जन्मा था और क्रिसमस मनाई जाती थी, पर किसी प्रकार यह बदल गई। मुझे ज्ञात नहीं है कि यह कैसे बदल गई। शायद आपको कहीं लिखा मिल जाए जिससे आपको पता चल जाएगा कि यह तारीख बदल गई है।

इसी तरह कलीयुग में भी जीवनकाल में यही हुआ है कि महालक्ष्मी और गणेश ने जन्म लिया और इसीलिए उनकी पूजा होती है। आप किसी को भी पूछिये कि क्यों महालक्ष्मी और गणेश की पूजा होती है दिवाली पर। यह घनघोर अंधेरे की रात थी। ठीक है! यह अत्याधिक अंधेरे की रात थी और उस रात एक सितारा था और क्योंकि बड़ी अंधेरी रात थी, इसीलिये सितारे को अच्छी प्रकार सबके द्वारा देखा गया। यह ठंडी रात थी। अत्यधिक ठंडी रात थी और अंधेरी रात थी।

श्रीमाताजी निर्मला देवी, पूजा प्रवचन, दिवाली पूजा, लंदन, ९.११.१९८०

सम्बन्ध

कार्बन के अणु एवं
मूलाधार में

कार्बन के अणु में, इलेक्ट्रॉन चार आँसू के आकार के बादल के समान 'टैट्रा-हैड्रोन' व्यवस्था में स्थान घेरे होते हैं। ये बादल उस स्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ इलेक्ट्रॉन अपना अत्यधिक समय व्यतीत करते हैं। ये इतने अधिक वेग से गतिशील होते हैं कि वे एक विशेष मार्ग बनाने के स्थान पर बादल बना देते हैं। हाल ही में अनेक शोधकों ने बताया है कि इन बादलों के अन्दर विशेष मण्डल होते हैं। ये मण्डल आँसू के आकार के बादलों की सतह के आसपास वलयाकार बनाते हैं।

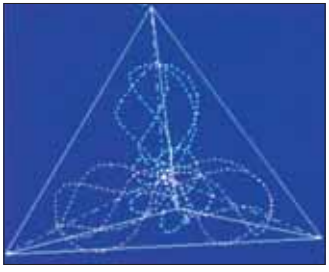

'...मूलाधार चक्र में आप स्वस्तिक देखेंगे क्योंकि ये कार्बन के अणु से बना है। यदि आप बाईं ओर से दायीं को देखेंगे। आप ॐकार देख सकते हैं। यदि आप नीचे से ऊपर की ओर देखेंगे, तो यह अल्फ़ा और ओमेगा के समान दिखेगा। उन दिनों ईसा ने कहा, 'मैं ही अल्फ़ा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ।'

प.पू.श्रीमाताजी निर्मला देवी, क्रिसमस पूजा १९९२, गणपतिपुले, भारत

'...श्रीमाताजी निर्मलादेवी ने अमरीका के जाने माने वैज्ञानिक डा.विनोद राम राव वर्लीकर, सैरिटोस, लॉस एन्जलीस, को कार्बन अणु के विषय में अपनी दैविक प्रेरणा के आधार पर कई बातें आलोकित कीं। उसका विवरण नीचे उस वैज्ञानिक के शब्दों में दिया गया है :

डा.... वरलीकर..... ने एक वार्तालाप में कहा कि..... 'उसी समय

यह विश्वास करना कठिन था। परन्तु लॉस एन्जलीज़ वापिस आकर मैंने अपनी प्रयोगशाला में इसे प्रमाणित करने का प्रयत्न किया और मैं आचम्भित हो गया। वह बिल्कुल वैसा ही था। जैसा कि श्रीमाताजी ने बताया था।'

मैडिकल साईन्स एनलाईटेन्ड, प्रो.यू.सी.राय, १९९३, पी.१५०

जब इस आकृति को विशिष्ट कोणों से देखा गया तो भौतिक शास्त्री हैरान हो गया यह देख कर कि जो वलयाकार बने थे वे पहचाने गये चिन्ह थे। पहले दृश्य में तीन आयाम वाला ओमकार दिखाई दिया।

ॐ के चिन्ह का भाग, ओम्कार

एक अलग कोण से ओम्कार चपटा दो आयाम वाला स्वस्तिक बन गया। उन्होंने यह सारांश निकाला कि स्वस्तिक वास्तव में तीन आयाम वाले ओम्कार का दो आयाम वाला प्रतिनिधी है।

स्वस्तिक

उस नमूने को दूसरे कोण में घुमाने पर दिखाता है कि वे चिन्ह ग्रीक अक्षर अल्फ़ा और ओमेगा में बदल गये।

अल्फ़ा और ओमेगा

ब्रह्माण्ड के स्तर पर, ये चिन्ह जो पूर्वी अध्यात्म के हैं, ओमकार और स्वस्तिक, एक ही आध्यात्म के भिन्न पहलू हैं। वे पाश्चात्य अध्यात्म के भी प्रतिनिधी हैं, अल्फा और ओमेगा। कार्बन का अणु अपने अन्दर ये विश्व सम्बन्धी चिन्ह रख कर यह दर्शाता है कि पदार्थ उसी दिव्य चेतना की अभिव्यक्ति है, जो संत और ऋषि आज तक अनुभव करते आये हैं। विश्व का अस्तित्व विश्व चेतना से अलग नहीं है। यह उसका सीधा प्रकटीकरण है। जीवित पदार्थ, जो कार्बन पर आधारित है, उसका इस अभिव्यक्ति में विशेष कार्य है। सब लोग पदार्थ और यहाँ तक कि ऊर्जा, सब उसी दिव्यता की अभिव्यक्ति हैं।

अल्फ़ा और ओमेगा परंपरागत से ईसा से जुड़े हैं व गणेश स्वस्तिक और ओमकार पर निवासित हैं। श्री गणेश से सम्बन्धित हैं। श्री गणेश से सम्बन्धित चक्र मूलाधार है, रीढ़ की हड्डी के नीचे। मूलाधार का अर्थ है, जड़ का आधार, कुण्डलिनी का आधार। ईसा के समान श्री गणेश भी अपनी माता द्वारा बनाये गये थे। ईसा के महान गुण, क्षमा, पुनर्जन्म और सूक्ष्मता में रूपांतरित होना है। ये आज्ञा चक्र के गुण हैं, जो मस्तिष्क में स्थित है। यह चक्र सहस्रार का आधार है।

अनन्त प्रेरणा देने वाले अनुस्मरणों से

प.पू.श्रीमाताजी के

श्रीमाताजी ने एक श्री गणेश बनाया

१९८१ में श्रीमाताजी की पहली मुलाकात सिड़नी, ऑस्ट्रेलिया में जब थी, तो उन्होंने बरवुड आश्रम में गणेश-गौरी पूजा रखी। जब श्रीमाताजी पूजा की तैयारी कर रहीं थीं, उन्होंने कुछ स्त्रियों को बाथरूम में आकर सहायता के लिए कहा। उन्होंने उन स्त्रियों को उनके शरीर पर सुगन्धित पेस्ट लगाने को कहा। उन्होंने बताया कि यही पेस्ट थी जो पार्वती ने श्री गणेश को बनाने के लिए उपयोग में लाई थी। बाद में श्रीमाताजी ने उस पेस्ट से श्री गणेश बना कर उन स्त्रियों को दिया।

पूजा के अन्त में श्रीमाताजी ने एक कांसे की थाली जो दीवार पर टंगी थी, उसे उनके सिर के पीछे रखने को कहा। माँ ने एक योगिनी से फ़ोटो लेने को कहा और यह फ़ोटो श्रीमाताजी की श्री गणेश रूप में है, जो हम में से बहुत लोग श्री गणेश पूजा में रखते हैं। श्रीमाताजी ने कहा, कि श्री गणेश जी को पूजा के लिए जपा पुष्प सर्वोत्तम हैं और आप देख सकते हैं कि सहज ही सब लोग उन्हें लायें हैं।

सारा फ्रैंककोम्ब

श्री गणेश पूजा, सिडनी, १९८१

यह हवा सदैव बहेगी

१९८४ में श्रीमाताजी के इंग्लैंड की यात्रा के समय, उन्होंने बाथ में रोमन बाथ्स के अवशेष के पास के चाय के कमरों में पब्लिक प्रोग्राम दिया, दक्षिण-पश्चिम इंग्लैंड में जुलाई के महीने में।

उस यात्रा में आए लोगों में से एक डा.माथुर से श्रीमाताजी ने कहा, कि सब लोगों को ग्लासटोनबरी कांटे वाले वृक्ष को दिखाने ले जाएं। उन्होंने बताया, कि प्रभु ईसा ने स्वयं इस वृक्ष को, जब इंग्लैंड आयें थें, तब लगाया था और जमीन को आशीर्वादित किया था। यह कह कर कि इस स्थान पर हवा सदैव बहेगी। श्रीमाताजी ने डा.माथुर को बताया कि जो वृक्ष ईसा ने लगाया था वह ईसाईयों के संघ के क्षेत्र में नहीं मिलेगा परन्तु शहर के ऊपर हरी पहाड़ी के कगार पर है।

सीन कैली

सम्पादक की व्याख्या - ग्लासटोनबरी काँटा ग्लासटोनबरी में है। यह एक दक्षिण-पश्चिम इंग्लैंड में छोटा शहर है, बाथ के पास। यह सदा क्रिसमस के दिन या उसके आसपास खिलता है। यह वृक्ष इंग्लैंड में नहीं पाया जाता है और मध्य पूर्व से आता है। ग्लासटोनबरी इंग्लैंड का आज्ञा है।

जो इंग्लैंड आया था, उन्हें नमस्कार

१९८२ में जब श्रीमाताजी को ब्रिस्टल से एग्ज़ीटर ले जा रहे थे। इंग्लैंड के दक्षिण-पश्मिच में, पूजा व पब्लिक प्रोग्राम के लिए, तब किसी ने कहा, वे ग्लासटोनबरी के पास से जा रहे थे, कि यहाँ एक पौराणिक कथा है कि ईसा ने यहाँ आगमन किया था और यह भी कहते हैं कि अपनी माँ के लिए मन्दिर बनाया था। श्रीमाताजी ने कहा, कि वे वहाँ सब जगह गये थे।

१९८४ में हैम्पस्टैड में ईस्टर पूजा में जब जीज़स के नाम ले रहे थे तो श्रीमाताजी ने कहा, 'जो इंग्लैंड आया था, उन्हें प्रणाम।'

क्रिस ग्रीव्ज़

परमात्मा का पवित्र मेमना

१९८० के बाद शुरू के वर्षों में श्रीमाताजी प्राय: हैम्पस्टैड आती थीं। उत्तर लन्दन में पब्लिक प्रोग्राम, जो एक बृहस्पतिवार को रखा जाता था, और प्रोग्राम के अन्त में हम प्राय: 'जेरुसलेम' गाते थे जो विल्यम ब्लैक द्वारा रचित सुन्दर वंदना है, जो प्रभु ईसा व श्रीमाताजी के लिए है। विल्यम ब्लैक स्वयं श्री भैरव के अवतार थे। यह पहला अन्तरा है -

एण्ड डिड दोज़ फ़ीट इन एन्शिएन्ट टाइम
वॉक अपॉन इंग्लैंडज़ माऊन्टेन ग्रीन ?
एण्ड वॉज द होली लैम्ब ऑफ़ गॉड
ऑन इंग्लैडज़ प्लैजेन्ट पास्चर्ज सीन ?
एण्ड डिड द काऊन्टीनैन्स डिवाईन
शाईन फ़ोर्थ अपौन अवर क्लाऊडिड हिल्ज़ ?
एण्ड वॉज़ जेरुसलम बिल्डेड हेयर
अमंग दीज़ डार्क सैटेनिक मिल्ज ?

एक बार श्रीमाताजी ने अर्थ समझाया। 'दोज़ फीट' प्रभु ईसा के पवित्र चरणों के लिए कहा गया है और श्रीमाताजी ने कहा कि वे यहाँ आये थे और इंग्लैंड में सब जगह चले थे।

औरियोल परडी

माँ की ओर देखो (बीहोल्ड द मदर)

ब्लेक द्वारा एक पेन्टिंग बनाई गई है, उसका शीर्षक है 'बी होल्ड द मदर'। एक बार १९८५ शैफ़ील्ड में श्रीमाताजी के होटल के कमरे में, श्रीमाताजी ने वहाँ सेमिनार रखा। उन्होंने हमसे पूछा कि, क्या हम जानते हैं कि 'बी होल्ड द मदर' का क्या अर्थ है। हम में से किसी ने भी उत्तर नहीं दिया। तब श्रीमाताजी ने स्वयं उत्तर दिया कि 'बी होल्ड द मदर' का अर्थ है

कि उसे अपने हृदय में पकड़ कर रखो।

लुईस गैरिडो

ईसा और लास्ट जजमैन्ट

१९८१ में जब श्रीमाताजी रोम आयीं तो हम उनके साथ अलग-अलग स्थानों पर गये और हम भाग्यशाली थे कि वैटिकन में सिस्टीन चैपल में जा सके। जब हमने सिस्टीन चैपल में प्रवेश किया तो वहाँ माईकल एन्जिलो की सब पेंटिंग देख कर मंत्रमुग्ध हो गये।

श्रीमाताजी ने हमें बताया कि माईकल एन्जिलो साक्षात्कारी आत्मा था और कैसे वह परिपूर्ण रूप से उत्तम पेन्टिग है और ईसा का करीबी से प्रतिनिधित्व करती है। 'लास्ट जजमेंट' पेंटिंग में हम आज्ञा चक्र को देख सकते हैं-क्योंकि वहाँ अण्डे के समान का आकार है, ईसा के सब ओर और मदर मेरी उनके साथ हैं।

तब श्रीमाताजी ने दिखाया कि कैसे 'लास्ट जजमैंट' में बायीं ओर से लोग नर्क में जा रहे हैं और कैसे लोग ऊपर उठाये जा रहे थे, बचाए जाने के लिए। जो लोग नर्क में नीचे जा रहे थे वे ईसा के बायीं ओर से नीचे जा रहे थे उस पेंटिंग में। उन्होंने हमें 'लास्ट जजमैंट का वर्णन दिया।

माईकल एन्जिलो की 'लास्ट जजमेंट' की पेंटिंग प्रभु ईसा और मदर मेरी ऊपर मध्य में हैं।

हम वहाँ काफ़ी समय रुके व बड़े विस्मित थे कि श्रीमाताजी के सामने थे और वे ही सब हाल सुना रही थी।

मेरी लौरे सिरने

होली कम्यूनियन, मास का स्पष्टीकरण

१९८० में हम करीबन दस लोग एक छोटे से गांव सिन्तरा पुर्तगाल में थे, श्रीमाताजी के साथ और हम एक पहाड़ी के ऊपर एक सराय में गये। हम सब एक मेज़ के आसपास बैठ गये। श्रीमाताजी सफ़ेद साड़ी में थीं और उनके लम्बे बाल कंधों पर थे। वे मेज़ के मध्य में थीं, उस पर कुछ 'ब्रैड' और अंगूर रखे थे और हम सब खाने की इन्तजार में थें।

एन्तोनिते वैल्स

श्रीमाताजी ने एक गहरे लाल रंग की शॉल लपेटी थी, 'श्रीमाताजी, कृपया हमें 'होली कम्यूनियन' का स्पष्टीकरण करें।' मेरी बड़ी बहन एन्तोनिते ने उनसे पूछा।

मेरी लौरे सिरने

हम लोग अंगूर खाने वाले थे।

श्रीमाताजी ने कहा, 'थोड़ा रूको' और उनके ऊपर अपना हाथ फेरा। 'अब आप ले सकते हैं।'

श्रीमाताजी के अंगूरों पर हाथ फेरने से पहले हमने अंगूर का स्वाद चखा था और वे साधारण थे, मीठे पर अच्छा स्वाद नहीं था। श्रीमाताजी के हाथ फेरने के बाद वे पूर्णतया रस से भरे व अमृत के स्वाद के थे। सो, हमने अंगूर खाये। माँ की प्रशंसा की और बताया कि वे कितने अच्छे थे।

एन्तोनिते वैल्स

श्रीमाताजी वास्तव में ईसा मसीह के समान दिखाई दे रही थीं और हाथ

में एक ब्रैड के टुकड़ा (लोफ़) लिया जो बड़ा अण्डे के आकार का था। उन्होंने उसे कुछ समय अपने हाथ में रखा, तब एक छोटा टुकड़ा हम सबको दिया।

मैरी लौरे सिरने

'अब आप इस ब्रैड को आपस में बाँट लो,' श्रीमाताजी ने कहा। हमने वैसा ही किया और मैं बहुत हैरान हो गयी कि यहाँ क्या हो रहा है क्योंकि मुझे दो हज़ार साल पहले का दृश्य याद आ गया। माँ ने कहा, 'जब ईसा ने अपने शिष्यों में ब्रैड बाँटी, उन्होंने कहा कि, 'इसे लो यह मेरा शरीर है।' क्योंकि वह ब्रैड उनका स्वयं का शरीर था क्योंकि वह चैतन्य से भरी थी। वे प्रणव थे। वे स्वयं चैतन्य थे। उसे वे ब्रैड में डाल सकते थे और जब उसे उनके शिष्य खायेंगे तो वे उनका चैतन्य खाएंगे।' और यही अंगूर के साथ हुआ था, 'वाईन' में जिसे श्रीमाताजी ने रूपांतरित किया था।

एन्तोनिते वैल्स

'यह सब है। यही है, यही सब कुछ है,' माँ ने हमसे कहा। हम सबने इसे मौन में खाया और हमने समझा कि यह 'कम्यूनियन' वही है, श्रीमाताजी ने हमें चैतन्य भरा खाना दिया। वे अपना चैतन्य ब्रैड में डाल रही थीं और फिर हमें दे रही थीं। सो, हमने, अनुभव के साथ यह जाना कि यह क्या था। यह बड़ा शक्तिशाली क्षण था।

मेरी लौरे सिरने

मैं सम्पूर्ण रूप से आदरपूर्ण अचम्भे में व ध्यान में थी। क्योंकि सालों साल में 'होली कम्यूनियन' में जाती रही पर यह रहस्य कभी नहीं समझ में आया। वहाँ पाँच सैकंड में टैलिस्कोप के समान माँ ने सब खोल कर रख दिया और हम समझ गये कि क्या हो रहा था, वह अत्यन्त सुन्दर था।

इसके बाद शाम को हम बाहर गये। सिन्टरा, पुर्तगाल में सुन्दर सूर्यास्त था। श्रीमाताजी ने गहरे लाल रंग की शॉल अपने सिर पर लपेट ओढ़ी थी।

उनकी बड़ी ब्राऊन आँखें सूर्य को देख रही थीं और सूर्य विशाल था, क्षितिज पर था व ऐसा लग रहा था कि हिल ही नहीं रहा था। हम सब उनके पास थे, सूर्य को देखते हुए।' मुझे लगा कि श्रीमाताजी वहाँ हैं, इसलिये सूर्य नीचे जाने की प्रतीक्षा कर रहा हो।

तब माँ ने आँखें झपकीं और सूर्य नीचे चला गया, मुझे लगा कि सूर्य उन्हें प्रणाम कर रहा है और वह इस सुन्दर शाम का अन्त था।

एन्तोनिते वैल्स

ईसा एक बड़े व्यक्ति थे, लम्बे और चौड़े कंधों वाले

१९९१ में हम सिड़नी में बरवुड आश्रम में रह रहे थे। ईस्टर नज़दीक आ रहा था। ऑस्ट्रेलिया ईसाई धर्म को मानने वाला देश है, सो, ईस्टर एक मुख्य त्यौहार है। श्रीमाताजी ईसा के विषय में काफ़ी बता रही थीं कि चर्च, ऑस्ट्रलिया व ईसाई देश जीज़स का चित्र सही नहीं बनाते। उन्होंने कहा कि आप जीज़स की छवि अस्थिपन्जर का ढांचा के रूप में देखते हैं, छोटा सा मनुष्य, यहाँ तक कि लाल बाल। माँ ने वर्णन किया कि वे एक बड़े मनुष्य, चौड़े कन्धों वाले, लम्बे पुरुष थे। उनके काले बाल थे व रंग उत्तरी भारतीयों के जैसे, काली आँखें और जैतून के जैसा वर्ण था।

संध्या दारा

ईसा बहुत बड़े और शक्तिशाली और बड़े आनन्दमय थे

मैं श्रीमाताजी को एक रेड़ियो प्रोग्राम के लिए ऑस्ट्रेलिया में समागम के लिए मिली। मैंने वार्तालाप खत्म कर दिया था व ईसा मसीह के विषय में पूछ रही थी क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में आज्ञा चक्र की बड़ी समस्या है। सभी बड़े न्यायिक प्रकार के हैं।

उन्होंने कहा, 'संकल्पना की समस्या है' उदाहरण दे कर कहा कि, कैसे ईसा को बड़ा पतला सा बनाया है, इसका विपरीत था। वे बड़े शक्तिशाली

और बड़े आनन्दमय थे। उन्होंने बताया कि, कैसे संकल्पना गलत थी और समस्या है कि हम संकल्पना में सब करते हैं और हमें आज्ञा की पकड़ होती है। 'हम उसमें से बाहर कैसे आते हैं?' मैंने पूछा। आपको अपना हृदय का इस्तेमाल करना है, केवल भक्ति के द्वारा आप उसमें से निकल सकते हैं।

मार्क विलियम

उनके अस्तित्व के साथ गहरा आन्तरिक सम्बन्ध

मार्च १९७९ में मैं बोर्डी में श्रीमाताजी व अन्य सहजयोगियों के साथ एक सैमिनार में थी। वह मुम्बई के पास समुद्र के किनारे पर है। उस दिन दोपहर को श्रीमाताजी ने अंग्रेजी में प्रवचन दिया। हम लोगों का एक छोटा समूह था। उनके चरणों में बैठ कर उनके शब्दों को सुन रहे थे और जब मैं सुन रही थी तो मुझे एक गहरा सम्बन्ध उनके साथ महसूस हुआ। जैसे कि वे अपने अस्तित्व से बोल रही थीं, न कि उनके शब्द जो कुछ भी मेरे पास था। जिसे मैं अनमोल समझती थी। वह वास्तविक, सत्य और महत्त्वपूर्ण था।

'क्या आप सोचते हो कि ईसा एक दुबले-पतले ढाँचे के व्यक्ति थे। नहीं, वे नहीं थे।'

फैलिसिटी पेमैन्ट

एक विशाल, हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति

मैं मारी के फ्लैट में पैरिस में थी जब हम १९८० में पहली बार श्रीमाताजी के साथ गये थे। मुझे याद है कि श्रीमाताजी ने कहा, कि ईसा एक विशाल, हृष्ट-पुष्ट व्यक्तित्व के थे। काफ़ी हद तक माईकल एन्जिलो के पेंटिंग के समान। उन्होंने कहा, कि अपने शक्तिशाली शरीर के कारण वे क्रौस को उठा सके थे। कुछ ऐसे कहा था, 'यदि वे दुबले-पतले सुकड़े से होते तो क्रौस कैसे उठाते?' माँ ने कहा कि वे बिल्कुल भी वैसे दुबले-पतले नहीं थे जैसे

पश्चिम के देशों में चर्च में दिखाते हैं और वे गहरे रंग के थे।

पैटरीसिया प्रोन्ज़ा

उन्होंने अपने पूरे जीवन में एक बार भी अपनी आँखें मेरे चेहरे तक ऊपर नहीं उठाई

मैं सोचती हूँ कि शुरू में आत्मसाक्षात्कार के दिनो में श्रीमाताजी हमें एक बड़ा व्यक्तिगत अनुभव देती थीं, जो हमें बताता था कि हम सही मार्ग पर हैं। मेरे पास भी ऐसा क्षण मेरे साक्षात्कार के बाद जल्द ही आया। मैं ब्लैक एण्ड वाईट श्रीमाताजी की फोटो के सामने ध्यान कर रही थी और अचानक ही वह ईसा के चेहरे में बदल गई।

जो छवि मैंने देखी वह व्यक्ति बड़ा करीब छः फूट विशाल, ऐसा जो दरवाज़े को पूरा भर दे। उनके काले घुंघराले बाल कंधों तक थे व दाढ़ी थी। मुझे लगा कि वे बड़े आकर्षक और आनन्द से भरे हुए थे, ऐसा व्यक्ति जो कमरे को भर दे अपनी उपस्थिति से। उस समय मैं निश्चित नहीं थी कि जिसे मैंने देखा, वह सत्य अनुभव था या नहीं और क्या जो मैंने देखा, वह वास्तव में ईसा का चेहरा था।

बाद में मैं लन्दन में थी और श्रीमाताजी के साथ पैरिस जा रही थी। हम लन्दन के एक एअरपोर्ट पर थे और आसपास कोई नहीं था। मैं उनके लिए चाय का प्याला लाई और उनके चरणों पर फर्श पर बैठ गई।

तब मैंने हिम्मत कर के माँ से पूछा कि क्या ईसा की दाढ़ी थी? उन्होंने कहा, 'हाँ, परन्तु केवल बाद में, छुपाने के लिए, क्योंकि वे रोमन लोगों से छुप रहे थे।' तब उन्होंने उनके कुछ शिष्यों के बारे में बताया जो कठिन व्यक्ति थे। उन्होंने कहा, कि एन्ड्रू बड़ा बुद्धिमान था। हमेशा तर्क करता था। सूली पर चढ़ाने के बाद वे किसी को निष्कलंक गर्भधारण के बारे में बताना नहीं चाहते थे क्योंकि कोई विश्वास नहीं करता।

वह कौन था इस बात को झुठलाने वाला। परमात्मा कुछ भी कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि ईसा मसीह जौन को प्रेम करते थे क्योंकि वह बड़ा सीधा व्यक्ति था। वह केवल ईसा को प्यार करता था। तब उन्होंने कहा कि, ईसा इतने आज्ञाकारी पुत्र थे। वे किसी बात के लिए प्रश्न नहीं करते थे, जो उनकी माँ करने को कहती थीं। यहाँ तक कि जब उन्होंने उनसे कहा कि, 'स्वयं को सूली पर चढ़ा दो। पूरे जीवन में उन्होंने एक बार भी अपनी आँखें मेरे चेहरे पर नहीं उठाईं। वे जानते थे कि मैं कौन थी!'

इस बयान की गम्भीरता से मैं इतनी घबरा गयी कि मैं फ़र्श पर बैठ कर सीधे उनके चेहरे को देखती रही।

बाद में, पैरिस में पब्लिक प्रोग्राम के बाद मारी के फ्लैट में श्रीमाताजी ने उनका और अधिक विस्तार में वर्णन किया। उन्होंने बताया कि उनका रंग माँ के रंग से ज़्यादा गहरा था, रेगी के जैसा, जो एक भारतीय सहजयोगी है और उनका बड़ा पेट था क्योंकि वे श्री गणेश थे। अनेक सार्वजनिक प्रवचनों में माँ ने बताया है कि ईसा बड़े और हृष्ट-पुष्ट शक्तिशाली पुरुष थे क्योंकि उन्हें 'क्रौस' उठाने के योग्य होना था और कैसे वे आत्मा थे और सदा प्रसन्नता से भरे थे।

के मैकहग

प्रभु ईसा बढ़ई थे

कबेला में, श्रीमाताजी के निवास पर, करीब चालीस योगी उपस्थित थे। वहाँ वे प्रभु जीज़स के विषय में बता रही थीं और कैसे वे बढ़ई थे।

हैरल्ड नोबेल

यह वास्तव में हुआ

१९८० के बाद के वर्षों में श्रीमाताजी बैल्जियम में मेरे घर में रह रही थीं और मेरी एक पुस्तक पढ़ रही थीं जिसका नाम 'क्राईस्ट लिव्ड इन इंडिया' था।

उन्होंने कहा, 'हाँ यही था जो हुआ था। यह वास्तव में हुआ था।'

पैटरीसिया डीन

सम्पादक की व्याख्या - यहाँ जिस पुस्तक के बारे में कहा है वह 'जीज़स लिव्ड इन इंडिया, उनका क्रूसिफिकेशन के पहले व बाद का जीवन' होल्गर कर्सटन द्वारा।

बाईबल एनलाईटेन्ड

१९९२ में श्रीमाताजी सोफ़िया, रोमानिया में थीं और मैंने हिम्मत कर के उन्हें 'बाईबल एनलाईटेन्ड' भेंट की, जिसका मैंने एक ही भाग पढ़ा था। मैंने होल्गर कर्सटन द्वारा लीखित 'जीज़स लिव्ड इन इंडिया' पढ़ ली थी और मुझे कुछ संदेह थे। 'श्रीमाताजी, क्या वास्तव में जीज़स की मृत्यु क्रौस पर हुई थी?' मैंने पूछा, 'हाँ।' उनका उत्तर था, 'वे सच में मरे और फिर पुनर्जीवित हुए।' तब मैंने पूछा, 'क्या ट्यूरिन शराऊड जीज़स के थे?' श्रीमाताजी ने 'हाँ' कहा।

डैन कौस्टियन

जीज़स मेरा बेटा था

१९८९ में मैं पहली बार श्रीमाताजी से मिला, जब वे वैनकूवर में पब्लिक प्रोग्राम में आई और सभी नये साधक लाईन बनाकर श्रीमाताजी को मिल पाए। मैं ईसाई होने के कारण ईसा से बहुत जुड़ा हुआ था और गर्दन में क्रौस पहना था। जब मेरी बारी आई और उसी समय मुझे हल्का सा कम्पन महसूस हुआ। मेरी बाजुयें माँ की पवित्रता के समक्ष प्रतिक्रिया फलस्वरूप हिलने लगीं। उन्होंने मेरे हाथी दांत के क्रौस को देखा।

'तुम्हें पता है कि जीज़स मेरा बेटा था,' उन्होंने कहा। 'और तुम्हें यह नहीं पहनना चाहिए। उनका संदेश शरीर का आत्मा में पुनर्जीवन था न कि सूली पर चढ़ना।' मैं बहुत हैरान था। कुछ बोलेने के लिए, केवल माँ की आँखों में भय से देखता रहा, जो ऐसी लगीं कि मुझे भीतर तक भेद गईं।

'हाँ मदर' मैंने कहा और झुककर चला गया।

उस रात मुझे श्रीमाताजी का अचम्भित कर देने वाला स्वप्न आया, मेरी गर्दन में लटके हुए क्रौस के बारे में। सुबह मैंने जाग कर देखा कि वह श्री गणेश की मूर्ति के चरणों में पड़ा था और प्रभु ईसा श्री गणेश के अवतार हैं। मैंने फिर कभी नहीं पहना।

ब्रैन्ट फ़िडलर

१९९० में श्रीमाताजी बुलगेरिया में

श्रीमाताजी के होटल 'शेरेटन सोफ़िया' में प्रैस सम्मेलन था। स्पष्ट था कि माँ इतने अच्छे श्रोतागण को देख कर प्रसन्न थीं, सभी माने गये समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के तीस के करीब पत्रकार उपस्थित थे, दो घंटो तक श्रीमाताजी ने बात की और प्रश्नों के बड़े बुद्धिमानी के उत्तर दिये। आखिर में श्रीमाताजी ने कहा, कि वे विचारों को पढ़ सकती है और कमरे में हमारे साथ उपस्थित देवी-देवताओं का अनुभव कर सकती हैं, परन्तु उनकी केवल रुचि साक्षात्कार देने में है। अन्ततः ईसा ने 'कम्फर्टर, काऊन्सिलर और रीडीमर' (सांत्वना देने वाला, परामर्श देने वाला और मुक्ति देने वाला) भेजने का वादा किया था।

काफ़ी देर तक माँ ने ईसा के गुणों के विषय में बताया, कैसे उनकी माँ देवी थीं जिन्होंने पैगम्बरों को साक्षात्कार दिया था पैन्टीकौस्ट पर।

माईकल सिरने

वह ठीक है, आप ठीक है

२५ मार्च १९८१ में सिडनी में पहला पब्लिक प्रोग्राम था। सिडनी के उत्तर दिशा में एक सहजयोगी के घर के बगीचे में माँ ने सेमिनार रखा। मैं घास पर बैठा और जब श्रीमाताजी बात कर रही थीं तो मुझे उनमें अत्यन्त पवित्रता का अनुभव हुआ, जब कि मेरी चेतना साफ़ नहीं थी।

श्रीमाताजी ने कहा कि वे अन्दर कुछ आराम करेंगी और तब तक हम सबको घास पर लेटना है और वे हम पर कार्य करेंगी। जब घर के अन्दर जाने के लिए वे मेरी ओर आयीं। मैंने उनके सब ओर सफ़ेद मण्डल देखा और उसे देख कर मेरे अन्दर महसूस हुआ कि वे ईसा मसीह हैं, वे इतनी पवित्र लग रही थीं।

मैं घास पर लेट गया और बड़ा आराम महसूस किया और सो गया। मुझे महसूस हुआ कि गाढ़े तेल के समान कुछ मेरे सैन्ट्रल नर्वस सिस्टम में ऊपर आ रहा है। जैसे कि काला अलकतरा, जो मैंने सिगरेट पीये थे उनसे निकला हो। वह मेरे अन्दर से सब बाहर निकल रहा हो। कुछ समय बाद मुझे लगा कि फव्वारे के समान पानी मेरे अन्दर बह रहा हो, सारे शरीर की सफ़ाई कर रहा हो और मुझे हल्का महसूस हुआ।

श्रीमाताजी वापिस बाहर आयीं और लोगों पर कार्य करने लगीं। उन्होंने एक लड़की से प्रारम्भ किया, जिसे ल्यूकेमिया (ब्लड कैन्सर) था, वह बहुत अच्छा अनुभव करने लगी व मुस्करा रही थी और प्रसन्नता से भर गई थी। उसके बाद श्रीमाताजी ने एक अगुरु के शिष्य पर कार्य किया। हम सबने उस व्यक्ति की रीढ़ की हड्डी पर एक मोटी सूजन देखी। अचानक ही श्रीमाताजी ने अपना हाथ ऊपर उठाया जैसे कि वे उस सूजन में भाला डाल रही हों और हमारी आँखों के सामने वह चला गया।

मैं एकदम श्रीमाताजी के पास, बैठी थी और यही सोच रही थी कि मैं ईसा मसीह के साथ हूँ, जब वे बीमारों को ठीक कर रहे थे। यह सोच इतनी तेज़ हो गयी कि मैंने सोचा, 'आप ही ईसा हैं।' मैं आपको जॉर्डन नदी के पास गैलिली में बीमार लोगों को स्वास्थ्य देते हुए देख सकती हूँ। यह प्रश्न केवल मेरे मस्तिष्क में था पर श्रीमाताजी ने मेरा हाथ लेकर उस पर क्रौस अपने हाथ द्वारा बनाया।

'वह ठीक है, तुम ठीक हो,' उन्होंने कहा और मुझे मुस्करा कर इतनी

करुणा से देखा कि मैं गद्‌गद्‌ हो गयी आनन्द से, क्योंकि उन्होंने मेरे मन को पढ़ लिया था।

गौरी मैहरानी, माईलेनी

आप ही होली घोस्ट हो जो ईसा ने भेजा है

हम लोग कबेला में पलाज़ो में कार्य कर रहे थे। ऊपर की मंजिल से नीचे की मंज़िल में ईंटे भेज रहे थे। एक सहजयोगी ने ईंट फेंकी और मैं ठीक से पकड़ नहीं पाया। मेरी बायीं विशुद्धि की उंगली पीछे मुड़ गयी। मैं अस्पताल गया और उन्होंने मेरा हाथ एक बड़े प्लास्टर में बाँध दिया। शीघ्र ही उसके बाद आदिशक्ति पूजा थी और मैंने स्टेज पर जाकर आर्जेंटिना की ओर से भेंट दी।

श्रीमाताजी ने पूछा, 'क्या हुआ?' मैंने बताया, सो उन्होंने मुझे अगले दिन मिलने को कहा।

उन्होंने मुझे कहा, कि प्लास्टर ऊतार दो। तब मेरी उंगली को उन्होंने कुछ मिनट के लिए अपने हाथ में पकड़ा और मुझसे तीन बार बुलवाया कि, 'श्रीमाताजी, आप ही होली घोस्ट हैं, जिसे ईसा मसीह ने भेजा है।' तीसरी बार बोलने के बाद मैंने कुण्डलिनी ऊपर उठती हुई अनुभव की और आँखें खोलने पर मैंने उनकी सुन्दर मुस्कराहट देखी।

मेरी उंगली, बिना किसी और दर्द के या टूटने से स्वस्थ हो गयी और उस दिन से मैंने जाना कि वे हमें कितना प्रेम करती हैं और ध्यान रखती हैं और मैंने दोषी भावना को समाप्त कर दिया।

मारियानो मार्टीनेज़

सम्पादक की व्याख्या - यदि हम दोषी महसूस करते हैं तो हमें बायीं विशुद्धि की पकड़ या असन्तुलन आ जाता है।

कबेला में श्री माताजी की वहाँ के मेयरों के साथ हुई सभा २००८ में, ई-मेल द्वारा सूचना का सारांश

ये कुछ शब्द, अपनी सीमायें एवं गलतियों को जानते हुए, सामने लाने का प्रयत्न कर रहा हूँ। श्रीमाताजी की अनेक बातों में से कुछ बातें, जो तीन घंटे की सभा में हुई।

एक मेहमान ने पूछा, कि क्या यह संभव है कि मुसलमान होते हुए सहजयोग किया जा सकता है या ईसाई होते हुए सहजयोग किया जा सकता है क्या? श्रीमाताजी ने उत्तर दिया कि आत्मसाक्षात्कार के बिना किसी धर्म के सार को समझना संभव नहीं है। यदि पहले आप स्वयं को नहीं जान जाते तो यह संभव नहीं है कि आप सच्चे मायने में ईसाई हैं। ईसा ने कहा कि आपको अपना दूसरा जन्म पाना ही चाहिए। श्रीमाताजी ने उन ईसाईयों का उदाहरण दिया जो भारत में आये थे और विश्व के दूसरे भागों में भी गये थे। उन्होंने कहा कि, वे ईसाई थे पर वे प्रभाव जमाने आये थे। अहंकार एवं आक्रामिकता से भरे हुए। ईसा एकमदम विपरीत थे। विनम्रता की मूर्ति, उस हद तक कि स्वयं को मनुष्यता के लिए सूली पर चढ़ा दिया। वे इतनी शक्तिशाली थे कि वे सब का विनाश कर सकते थे, पर उसके स्थान पर उन्होंने सब को क्षमा किया।

एन्टोनी विस्कोन्टी और डूईलिओ कारटौक्सी

दो क्रिसमस कैरोल (गीत)

इन दो गीतों को क्रिसमस पूजा में कई बार श्रीमाताजी के लिए गाया गया है।

साईलैन्ट नाईट, होली नाईट
ऑल इज काम, ऑल इज ब्राईट
राऊण्ड योन वर्जिन मदर अँड चाईल्ड
होली इनफैंट सो टैंडर अँड माईल्ड
स्लीप इन हैवनली पीस
स्लीप इन हैवनली पीस

साईलैन्ट नाईट, होली नाईट
शेफर्डस् क्वेक एट द साईट
ग्लोरीज स्ट्रीम फ्रौम हैवेन अफ़ार
हैवेनली होस्ट्स सिंग एलीलूईया!
क्राईस्ट द सेवियर इज़ बोर्न
क्राईस्ट द सेवियर इज़ बोर्न

साईलैन्ट नाईट, होली नाईट
सन ऑफ गॉड, लवज प्योर लाईट
रेडियेन्ट बीम्स फ्रॉम दाई होली फ़ेस
विद द डौन ऑफ़ रीडिमिंग ग्रेस
जीज़स लॉर्ड, ऐट दाई बर्थ
जीज़स लॉर्ड, ऐट दाई बर्थ
हार्क द हैराल्ड एन्जल्ज सिंग
ग्लोरी टू द न्यू बौर्न किंग

पीस ऑन अर्थ एण्ड मर्सी माईल्ड
गौड एण्ड सिनर्स रीकन्साईल्ड
जॉयफुल, ऑल थी नेशन्ज राईज़
विद द एन्जलिक होस्ट प्रोक्लेम
'क्राईस्ट इज बौर्न इन बैथलहेम'
हार्क द हैराल्ड एन्जल्ज सिंग
ग्लोरी टू द न्यू बौर्न किंग
क्राईस्ट बाय हाईएस्ट हैवन अडोर्ड
क्राईस्ट द एवर लास्टिंग लॉर्ड
लेट इन टाईम बी होल्ड हिम कम
ऑफ़ स्प्रिंग ऑफ ए वर्जिन्ज वूम्ब
वील्डेड इन फ्लैश द गोड हैड सी
हेल द इनकार्नेट डेटी
प्लीज्ड ऐज मैन विद मैन टू ड्वैल
जीज़स अवर इमैन्यूएल
हार्क द हैराल्ड एन्जल्ज सिंग
ग्लोरी टू द न्यू बौर्न किंग
हेल द हैवन बोर्न द प्रिंस ऑफ पीस!
हेल द सन ऑफ़ राईटीयसनैस।
लाईट एण्ड लाईफ़ टू ऑल ही ब्रिंग्ज
रिजन विद हीलिंग इन हिज़ विंग्ज
माईल्ड ही लेज हिज ग्लोरी बाय
बोर्न दैट मैन नो मोर मे डाय
बोर्न टू रेज दि सन्स ऑफ अर्थ
बौर्न टू गिव दैम सैकन्ड बर्थ
हार्क द हैराल्ड एन्जल्ज सिंग
ग्लोरी टू द न्यू बौर्न किंग

प्रभु ईसा मसीह के 108 नाम

संस्कृत में

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ आज्ञाचक्रस्वामिने .....आज्ञा चक्र के प्रभु सूर्य
२ सूर्याय.....सूर्य
३ क्षमाप्रदायकाय .....क्षमा देने वाले
४ क्षमास्वरूपाय .....जिनकी आकृति क्षमा है
५ शमदमवैराग्य तितिक्षाप्रदायकाय .....जो समाधान, आत्मनियंत्रण, अलगाव और धैर्य देता है
६ ओंकाराय .....आदि शब्द ॐ
७ चैतन्याय .....दिव्य चेतना की अनुभूति
८ आदिपुरुषाय.....आदि मनुष्य
९ सहस्रशीर्ष्णे.....जिसके हज़ार सिर हैं
१० सहस्राक्षाय .....जिसकी हज़ार आँखें हैं
११ विष्णवे.....भगवान के नौवें अवतार
१२ विष्णु-सुताय .....श्रीविष्णु के पुत्र जैसे श्रीकृष्ण
१३ महाविष्णवे.....श्रीविष्णु की उच्च आकृति
१४ अनन्तकोटि ब्रह्मांडधारकाय .....जो असीमित ब्रह्माण्डों को धारण करते हैं
१५ हिरण्यगर्भाय.....जो सोने के अण्डे से उत्पन्न हुए
१६ पूर्वाघोषिताय .....जिन्हें पहले बताया गया था

१७ ब्रह्माविष्णुरुद्रसेविताय.....जिन्हें त्रिमूर्ति ने सेवित किया
१८ पावित्र्यप्रदायकाय.....पवित्रता देने वाले
१९ गोपालाय.....जो गायों को देखता है
२० गोसेविताय .....गायों द्वारा सेवित
२१ कृष्णसुताय .....श्रीकृष्ण का पुत्र
२२ राधानन्दनाय.....आनन्द देने वाले राधा के पुत्र
२३ पापनाशकाय .....पापों का नाश करने वाला
२४ पापविमोचकाय.....पापों से मुक्ति दिलाने वाला
२५ प्रकाशाय .....लाईट (रोशनी)
२६ आकाशाय .....ईथर
२७ अग्नये .....आग
२८ महाकारुण्यरूपिणे .....महान करुणा वाले
२९ तपस्विने.....महानतम साधु
३० हम्क्षम्ब्रीजाय .....बीजमंत्र 'मैं हूँ, मैं क्षमा करता हूँ'
३१ आत्मने.....व्यक्तिगत आत्मा का साकार रूप
३२ परमात्मने.....सर्वोच्च आत्मा
३३ अमृताय .....जिसका कभी विनाश न हो
३४ आत्मतत्त्वजाताय .....आत्मा से जन्मे
३५ शान्ताय .....मौन
३६ निर्विचाराय .....बिना मानसिक कार्य के
३७ आदिआज्ञाचक्रस्थाय .....आदि आज्ञा चक्र के निवासी
३८ कल्किने.....श्री विष्णु का अन्तिम अवतार
३९ एकादशरुद्रसेविताय.....परमात्मा की ग्यारह विनाशकारी शक्तियों द्वारा सेवित

४० उत्क्रान्तितत्त्वाय.....उत्क्रान्ति का सिद्धांत
४१ उत्क्रान्तिआधाराय .....उत्क्रान्ति के सहायक
४२ सर्वोच्चाय.....सबसे ऊँचे
४३ महत्मनसे .....विराट का मस्तिष्क
४४ महत्अहंकाराय .....महान 'मैं हूँ' विराट का
४५ तुरीयास्थितिप्रदायकाय .....शुद्ध आत्मा की स्थिति देने वाले
४६ तुरीयावासिने.....शुद्ध आत्मा की चौथी स्थिति में निवासित
४७ द्वाराय .....परमात्मा के साम्राज्य का गेट
४८ कार्तिकेयाय .....श्रीशिव के राक्षसों को संहारने वाले पुत्र
४९ महागणेशाय .....सम्पूर्ण अबोधिता और सम्पूर्ण ज्ञान
५० अबोधितास्वरूपाय .....अबोधिता का अवतरण
५१ अबोधिताप्रदायकाय .....भक्तों को अबोधिता देने वाले
५२ शुद्धाय .....सम्पूर्ण पवित्रता
५३ मांगल्यप्रदायकाय.....भक्तों मंगलता देने वाले
५४ औदार्याय .....उदारता का उच्चतम स्तर
५५ महालक्ष्मीनेत्रतेजसे.....अपनी माँ की आँखों की रोशनी
५६ परिपूर्णसहजयोगिने.....पूर्ण सन्तुलित सहजयोगी
५७ आदिसहजयोगिने .....
५८ श्रेष्ठसहजयोगिने.....
५९ आदिशक्ति माताजी .....जिसके कार्य माँ को प्रसन्नता देते हैं
श्रीनिर्मलादेवीप्रियम्कर्ता
६० शाश्वताय.....अनन्त
६१ स्थाणवे .....जिसे हिला न सकें
६२ सत्चिदानंदघन .....दिव्य गुणों की खान

६३ स्वैराचारनाशकाय .....व्यभिचार के नाशक
६४ धर्ममार्तंडनाशकाय.....धर्म पाखण्डियों के नाशक
६५ निरिच्छाय .....बिना इच्छा के
६६ धनदाय.....खुशहाली, घन देने वाला
६७ शुद्धश्वेताय.....पवित्र सफ़ेदी
६८ आदिबालकाय .....आदि बालक
६९ आदिब्रह्मचारिणे .....ब्रह्मचारियों में प्रथम
७० पुरातनाय .....प्राचीन
७१ अल्फाओमेगान्विताय.....अल्फा आणि ओमेगा
७२ समस्तसाक्षिणे .....सब का साक्षी
७३ ईशपुत्राय .....परमात्मा के पुत्र
७४ मोहवर्जिताय.....प्रलोभनों से मुक्त
७५ ममताहन्त्रे .....मोह निकालने वाले
७६ विवेकाय .....सत्य व असत्य में फर्क जानना
७७ अघोरनाशकाय .....जादू टोने को अपराधी ठहराना
७८ ज्ञानरूपाय .....ज्ञान की मूर्ति
७९ सद्बुद्धिदायकाय.....अच्छी बुद्धि देने वाले
८० सुज्ञाय.....सब प्रकार का विवेक
८१ श्रीपूर्णनम्राय .....सम्पूर्ण विनम्रता
८२ भौतिकतानाशकाय.....सांसारिक प्रलोभनों के नाशक
८३ अहंकारनाशकाय .....अहंकार निकालने वाले
८४ प्रतिअहंकारशोषकाय .....प्रतिअहंकार को खिंचने वाले
८५ अशुद्धइच्छानाशकाय .....अशुद्ध इच्छा नष्ट करने वाले
८६ हृदमंदिरस्थाय .....हृदय रूपी मंदिर में निवासित

८७ अगुरुनाशकाय.....गलत गुरुओं से छुटकारा देने वाले
८८ असत्यखंडनाय .....झूठ का विनाश करने वाले
८९ वंशभेदनाशकाय .....जातियता का नाश करने वाले
९० क्रोधनाशकाय .....क्रोध को सामान्य करने वाले
९१ आदिशक्ति-माताजी .....श्रीमाताजी के प्रिय पुत्र
निर्मलादेवीप्रियपुत्राय
९२ आदिशक्तिअर्चिताय.....श्रीआदिशक्ति जिनकी पूजा करती है
९३ प्रतिष्ठानक्षेत्रनिवासकृताय.....प्रतिष्ठान की पवित्र भूमि में रहने वाले
९४ कबेलावासिने .....कबेला में रहने वाले
९५ सहस्रारद्वारवासिने.....सहस्रार के गेट पर रहने वाले
९६ निष्कलंकाय.....बिना किसी धब्बे की पवित्रता
९७ नित्याय .....अनन्त
९८ निराकाराय .....बिना आकार के
९९ निर्विकल्पाय.....बिना किसी संदेह के
१०० लोकातीताय.....तीनों लोकों से परे
१०१ गुणातीताय .....सब गुणों से परे
१०२ महायोगिने.....महान योगी
१०३ नित्यमुक्ताय.....अनन्त मुक्त
१०४ अव्यक्तमूर्तये.....बिना आकार के अवतरण
१०५ योगेश्वराय .....उच्चतम योग जानने वाले
१०६ योगधाम्ने.....योग का स्थान
१०७ योगस्वरूपाय.....जिसकी आकृति दिव्य योग के लिये है
१०८ येशुख्रिस्ताय.....अनन्त प्रभु जीज़स

साक्षात श्री आदिशक्ति माताजी निर्मला देवी नमो नमः

प्रभु ईसा मसीह के 108 नाम

हिन्दी में

हम सादर प्रणाम करते हैं उनको, जो अपने कुमारी माता के केवल एकही पुत्र हैं, जिनके शरीर के प्रत्येक रन्ध्र में धूल जैसी गैलेक्सीज चक्राकार घुमती हैं, जो अपने परम पिता सर्व शक्तिमान चिरंतन सदाशिव के बारें में हमे शिक्षा देने के लिये अवतरित हुए थे। आमेन...

आप आदि पुरुष ओम् हैं।
आप श्रीविष्णु एवं श्रीविष्णु के पुत्र हैं।
आप महाविष्णु हैं।
आप शुद्ध प्रणव शक्ति हैं।
आप कोटि कोटि विश्व को समाये हुए हैं।
आप आदि ब्रह्माण्ड में जन्मे हैं ।
आपकी श्रीमाताजी के हृदय में धारणा हुअी थी।
आपकी प्रेषितों ने भविष्यवाणी की थी ।
आपके आगमनके पहले पूर्व क्षितिज पर तारा आया था।
आपकी तीन मागी ने, जो ब्रम्हा, शिव और विष्णु थे, सेवा की थी।
आपका अस्तबल मे जन्म हुआ था।
आप शिक्षक हैं।
आप गायों के मित्र हैं।
आपकी गायों ने सेवा की थी।
आपके पिता श्रीकृष्ण हैं।
आपकी माता श्री राधा हैं।
आप अपने अग्नि में हमारे पापों का दहन करके हमारा तारण करते हैं।
आप आज्ञा चक्र को सुशोभित करते हैं।

आप प्रकाश हैं।
आपकी आकाश के समान प्रकृति हैं।
आप अग्नि हैं।
आपने अपने करुणा से चमत्कार किये थे।
आपके चोगे को स्पर्श किया गया था ।
आप तपस्विओं के मित्र हैं।
आप परिवार द्वारा पूजित हैं।
आप 'हम्' और 'क्षम्' ये बीज मंत्र हैं।
आप क्षमाशील हैं।
आप हमें क्षमा करने को सक्षम करते हैं।
आप आत्मा हैं।
आप आत्मा से जन्मे हुए हैं।
आप शुद्ध आत्मतत्त्व में सूली पर चढ़े थे और (रेझरेक्ट) पुनरुत्थित हुए थे।
आप तीन दिनो के बाद जागृत हुए थे।
आप शांती हैं।
आप सर्व विचारों को खीच लेते हैं।
आप आदि आज्ञा चक्र में निवास करते हैं।
आपने कम्फर्टर को (आराम देने वाले) जो होलि स्पिरिट,
श्रीमाताजी हैं-
भेजने का वचन दिया था।
आप राजा के रूप में वापस आते हैं।
आप कल्की हैं।
आप उत्क्रांती का तत्त्व हैं।
आप हमारे उत्क्रांती का आधार हैं।
आप उत्कांति की अंतिम स्थिति हैं।
आप सामूहिक सुप्त चेतना (कलेक्टिव्ह सब कॉन्शस) से सामूहिक चेतना-(कलेक्टिव्ह कॉन्शसनेस) तक के उत्क्रांति हैं।

आप सांकरे द्वार हैं।
आप स्वर्ग के राज्य का मार्ग हैं।
आप शांति हैं।
आप भगवान कार्तिकेय हैं।
आप श्रीमहागणेश हैं।
आपअबोधिता की शुद्धता हैं।
आप ब्रह्मचर्य हैं।
आप उदारता हैं।
आप श्री महालक्ष्मी के नेत्रों की रोशनी हैं।
आप अपनी माता के आज्ञाकारी हैं।
आप परिपूर्ण सहजयोगी हैं ।
आप परिपूर्ण भाई हैं।
आप आनंद की मूर्ति हैं।
आप शालीनता की मूर्ति हैं।
आप आधे अधूरों को (हाफ हार्टेड) थूंक देते हैं।
आप सभी धर्म मार्तंडों की (फॅनॅटिक्स) निंदा (कन्डेम) करते हैं।
आप अमीरों में रुचि नहीं रखते।
आप अपने भक्तों को सभी अमीरी देते हैं।
आप विशुद्ध शुभ्र हैं।
आप पवित्र हृदय हैं।
आप काटों का मुकुट परिधान करते हैं।
आप दीनता (मिझरी) की निंदा करते हैं।
आपने सारी तकलीफें उठायी इसलिए कि हम आनंदित रहें।
आप बालक हैं।
आप सदा ही पुरातन हैं।
आप अल्फा और ओमेगा हैं।
आप स्वर्ग का राज्य सब को, जो पहले है या आखिर में हैं,

समानता से प्रदान करते हैं।
आप निरंतर हमारे साथ हैं।
आप विश्व से भी परे हैं।
क्रॉस ये आपका चिन्ह हैं।
आप सभी भेद भाव के (डिस्क्रिमिनेशन से) ऊपर हैं।
आप साक्षी हैं।
आपको साक्षी भाव में देखना हैं।
आप मोह पर विजय पाने वाले हैं।
आप दुष्टता से विमुक्त करते हैं ।
आप गूढ साधनाओं की निंदा करते हैं।
आप तपस्विता की मूर्ति हैं।
आप अपने पिता की पूजा करते हैं।
आप अपने पिता द्वारा वलयांकित (हॅलोड) हैं।
आपका नाम पवित्र है।
आप बुद्धिमत्ता हैं।
आप ज्ञान (विझ्डम) हैं।
आप परिपूर्ण नम्रता हैं।
आप भौतिकतावादियों से क्रोध करते हैं।
आप अहंकार नाशक हैं।
आप प्रति अहंकार (सुपर इगो) खीच लेते हैं।
आप इच्छाओं का नाश करते हैं।
आप शुद्ध इच्छा शक्ति हैं।
हृदय ही आपका चर्च हैं।
आपकी ग्यारह विनाशकारी शक्तियाँ हैं।
आप झूठे प्रेषितों का नाश करते हैं।
आप असत्य का नाश करते हैं।
आप असहिष्णुता का नाश करते हैं।

आप वंशवाद का नाश करते हैं।
आप क्रोध का नाश करते हैं।
आप सुवर्णयुग के अग्रदूत (हेरल्ड) हैं।
आप हमारी माता द्वारा स्तुति किये हुए (ॲडोर्ड) हैं।
आप हमारी माता द्वारा प्रशंसित हैं।
हमारी माता को आपसे प्रेम हैं।
आप चुने हुए हैं।
आप सभी सहजयोगियों मे जागृत हैं।
आप युगान्त मे श्वेत अश्व पर आरूढ होते हैं।
आप हमारे भय का अन्त हैं।
आप हमारी माता के द्वारपाल हैं।
आप ईश्वर के पुत्र हैं।
आप ही ईश्वर के राज्य का मार्ग हैं।

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

एक पवित्र कुटुंब, माइकेलएंजलो द्वारा

आज्ञा चक्र

इस सेंटर की दो पंखुडियाँ औप्टिक थेलामस के सेंटर के समतुल्य होती हैं।

१. पीनियल — मनस अहंकार को नियंत्रित करता है।

२. पिट्यूटरी — अहंकार को नियंत्रित करता है।

आज्ञा चक्र को औप्टिक नर्व (आँखों से सम्बन्धित नस) की क्रौसिंग के स्थान पर होता है। यह औप्टिक थैलेमस के मध्य में स्थित होता है। इस सूक्ष्म चक्र की खिड़की माथे के मध्य में होती है।

गुण : निर्विचार चेतना, क्षमा, करुणा, पुनर्जन्म

पकड़ के कारण : बिना नियंत्रण के सोच विचार, बहुत अधिक पढ़ना, टी.वी. देखना, ईसाई या हिब्रू धर्म मार्तंडता, चिन्ता, कामवासना, इश्कबाजी, गन्दे चित्र देखना, अक्षम्य स्वभाव.

उपचार

१. श्रीजीज़स मेरी या श्रीमहाविष्णु या श्रीमहालक्ष्मी का मंत्र लें।

२. कहिए, 'माँ मुझे क्षमाकारी एवं त्यागी बनाएं।

३. आज्ञा चक्र पर चैतन्य दें जो सिर के अन्दर ऑप्टिक कियाज्मा व पिट्यूटरी ग्लैंड के क्रौसिंग पर स्थित होता है।

४. यह जानें कि जब कुण्डलिनी आज्ञा चक्र को पार करती है तो सब पाप

क्षमा हो जाते हैं, कर्म धुल जाते हैं। भूतकाल को भूल जाईये। भविष्य होता ही नहीं है। वर्तमान में रहें।

५. निर्विचार चेतना की अवस्था को बढ़ायें। जागृत पर सोचना नहीं, निर्विचार समाधी, इस स्थिति का उपयोग करें ताकि अत्यधिक सोच की प्रवृत्ति धुल जाए।

६. लॉड्स प्रेयर, पूरे दिल से कहें।

७. श्रीमाताजी की फ़ोटो में उनके आज्ञा को आराम से देखें।

८. माथे पर आज्ञा चक्र को सुरक्षित रखने के लिए वाइब्रेटेड कुमकुम या चन्दन का तेल या बाम लगायें।

९. ब्रह्मशक्ति के नीचे की ओर के स्राव को, सोचविचार भेदभाव निकालने दें ताकि आपके विचार और चित्त शुद्ध हो जाएं।

१०. इस चक्र को प्रकाश तत्व से शुद्ध करें जो अग्नि तत्व का सूक्ष्म पहलू हैं।

११. जहाँ किसी ने अगुरु से दीक्षा ली हो तो उसके आज्ञा की बाधा निकालने में समय लगता है (भवसागर भी साफ करें)

१२. श्रीमाताजी की फ़ोटो को लौ में से देखें।

१३. खुशबू वाले फूलों को सूंघें।

१४. यह देखने का प्रयत्न करें कि प्रभू ईसा मसीह आध्यात्मिक पुनर्जीवन के लिए मार्ग खोल रहे थे। जब आज्ञा चक्र साफ़ हो जाता है तो हमारी चेतना उनके प्रकाश से भर जाती है, अब वे श्रीमाताजी में हैं।

१५. माथे पर आज्ञा चक्र पर बिना किसी साक्षात्कार वाले व्यक्ति द्वारा छुआना नहीं चाहिए या बिन्दी नहीं लगवानी चाहिए।

१६. जहाँ सामने व सिर के बायीं ओर अत्यधिक गर्मी हो या ऊपर में हो, वहाँ बर्फ रखें।

बायाँ आज्ञा चक्र

गुण : बनावट, स्मृति, देखने की शक्ति (आँखों की दृष्टि)

पकड़ के कारण : स्वयं को हानि पहुँचाना, स्वयं पर दया, बंधनों में रहना, यदि स्वयं को क्षमा न कर सकें।

उपचार

१. श्रीमहागणेश, श्रीमहाभैरव, श्रीमहावीर और श्रीमहाकाली का मंत्र लें।

२. कहिए, 'श्रीमाताजी, कृपा कर के मुझे क्षमा कर दें।'

३. सिर के पीछे के भाग को वाईब्रेशन दें और प्रति अहंकार के लिए पूरे सिर को।

४. बिना दोषी भावना के क्षमा माँगें।

५. आँखों को अपवित्रता देखने से बचाएं (यह बायें मूलाधार से भी जुड़ा होता है।

६. सिर के पीछे मोमबत्ती से उपचार करें।

७. दायीं हथेली से सिर के पीछे के भाग को थपथपायें, बायाँ हाथ माँ की फ़ोटो की ओर।

८. प्रति अहंकार का दबाव कम करने के लिए दायीं कनपटी से पीछे सिर की ओर को थपथपायें, नीचे की ओर, स्वाधिष्ठान तक।

९. जहाँ पीछे या दायीं ओर सिर के अधिक गर्मी हो, वहाँ मोमबत्ती के उपचार के स्थान पर बर्फ़ का पैक रखें।

१०. कभी प्रति अहंकार इतना फूल जाता है कि वह अहंकार को दबाता है और सिर पर गर्दन की आधार रेखा पर विशुद्धि को दबाता है (इसको कई बार गलती से विशुद्धि की समस्या सोच कर उपचार करते हैं, ऊपर के तरीके से यह ठीक हो सकता है।)

११. भूतकाल में न रहें। पुरानी बातें और सम्बन्ध को याद करने से प्रतिअहंकार पर प्रभाव पड़ता है। निरर्थक बन्धनों व आदतों को तोड़ दीजिए।

१२. श्रीमाताजी के प्रति अहंकार को समर्पित करें।

१३. अत्यन्त कष्टदायक स्थिति में कपूर से सिर के पीछे बन्धन दें।

दायाँ आज्ञा चक्र

गुण : अहंकार, 'मैं' पना

पकड़ के कारण : परमात्मा के बारे में गलत धारणा, संदेह, चिंता, दूसरों के प्रति आक्रामिकता, आक्रामिक व्यवहार, अहंकार

उपचार

१. श्रीमहाकार्तिकेय, श्रीमहाहनुमान, श्रीमहाबुद्ध और श्रीमहासरस्वती का मंत्र लें। और महत् अहंकार का मंत्र लें।

२. कहिए, 'श्रीमाताजी, मैंने सबको क्षमा किया, स्वयं को भी क्षमा किया।' और 'श्रीमाताजी, कृपा करके मुझे अपने चित्त में रखें।'

३. माथे पर वाईब्रेशन दें, पूरी दायीं ओर और बायीं ओर सिर के ऊपरी हिस्से में

४. अहंकार का दबाव कम करने के लिए बायीं कनपटी से माथे पर, दायीं ओर थपथपायें, दायीं ओर में नीचे की तरफ थपथपाते जाएं जहाँ पर दायाँ स्वाधिष्ठान चक्र होता है (महासरस्वती शक्ति)

५. जहाँ अहंकार बहुत फूल गया हो, तो प्रति अहंकार दब जाता है व स्मृति की समस्या हो जाती है, उपचार ऊपर बताये तरीके से करें।

६. सबको क्षमा करें। मन में कुढ़न या ईर्ष्या या अक्षम्य व्यवहार न रखें क्योंकि लोग आपके विचारों द्वारा कार्य करते हैं। क्षमा करना सबसे आसान तरीका है और यह बुरे विचारों से सुरक्षा भी देती है। क्षमा करने की शक्ति आपको बड़ा मजबूत बनाती है और सुन्दर तरीके से रास्ता खोल देती है, ताकि कुण्डलिनी सहस्रार में जा सके।

७. भविष्यवादी न बनें। वर्तमान में भविष्य का कोई स्थान नहीं है। यदि दायाँ स्वाधिष्ठान पकड़ा हो तो अक्सर आज्ञा भी पकड़ में आ जाती है। यह गम्भीर समस्या देता है व ऊपर दिये गये उपचार द्वारा ठीक करना चाहिए।

८. आज्ञा पर ध्यान नहीं करना चाहिए। एकाग्रता या देखने की तकनीक नहीं इस्तेमाल करें, मन को नियंत्रण करने का तरीका छोड़ दें, हिप्नोसिस सिद्धी आदि छोड़ दें। वे भूत प्रेत के कब्ज़े में होता है और उसे छोड़ देना चाहिए।

पिछे का आज्ञा चक्र

उपचार

१. सुबह जल्दी उठें और ध्यान करें (४ बजे उत्तम है)। देर से, आठ बजे के बाद उठने से बैक आज्ञा की समस्या हो सकती है।

२. तीन मोमबत्ती का उपचार, पूरी बायीं ओर एवम् पीछे की आज्ञा को साफ करता है। एक मोमबत्ती श्रीमाताजी की फ़ोटो के सामने, एक मोमबत्ती अपनी बायीं ओर तीसरी को हाथ में पकड़ कर, बायीं ओर के सब चक्रों के सामने घड़ी की सूईयों के समान गोल घुमायें।

३. सुबह के सूर्योदय के समय सूर्य की किरणें पीछे की आज्ञा पर डालें। साथ ही श्री सूर्य, श्री महागणषश, श्री महाभैरव और श्री हिरण्यगर्भ का मंत्र लें।

४. यदि आँखों की दृष्टि कमज़ोर हो रही हो तो सिर के पीछे मोमबत्ती का इस्तेमाल करें।

श्रीमाताजी निर्मलादेवी

विचारों को बंद करना

'.....अपने विचारों को बंद करने के लिए सबसे सरल तरीका है 'लॉड्स प्रेयर' क्योंकि वह आज्ञा की स्थिति पर है। सो, सुबह आप 'लॉर्ड्स प्रेयर' को याद करें या गणेश मंत्र, एक ही है। या आप कहें, 'मैं क्षमा करता हूँ।' आप गणेश मंत्र से शुरु कर सकते हैं, 'लॉर्ड्स प्रेयर' कहें और फ़िर 'मैं क्षमा करता हूँ।' यह कार्यान्वित होता है। तब आप निर्विचार चेतना में होते हैं। अब आप ध्यान करें। उसके पहले कोई ध्यान नहीं होता है।'

'.....यदि आपके हृदय में शुद्ध प्रेम व पवित्रता है, वह सबसे उत्तम तरीका है, समर्पण करें।'

'.....अपनी माँ पर सब चिन्तायें छोड़ दें, सब कुछ अपनी माँ पर।'

श्रीमाताजी निर्मलादेवी

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीजीज़स मेरी साक्षात्

श्रीआदिशक्ति माताजी

श्रीनिर्मलादेवी नमो नमः

'Veiled in flesh the Godhead see,
Hail the incarnate deity.'

इंग्लिश क्रिसमस कैरोल से, Hark the Herald Angels sing

WWW.SAHAJAYOGA.ORG

visit us at www.sahajayoga.org to know more about Sahaja Yoga.